हिन्दी सांध्य दैनिक

प्रखर पूर्वांचल

अखबार नहीं आंदोलन

RNI:UPHIN/2016/68754 www.prakharpurvanchal.com Email ID: prakharpurvanchal@gmail.com

गाजीपुर से प्रकाशित व वाराणसी, चंदौली, सोनभद्र, मऊ, बलिया, आजमगढ़, भदोही, मिर्जापुर, जौनपुर, लखनऊ, प्रयागराज, गोरखपुर, कुशीनगर, महाराजगंज तथा देवरिया से प्रसारित

वर्षः 8, अंकः 153, पृष्ठ 8, मूल्य 3.00, आमंत्रण मूल्य 2.00 | 3 दिसम्बर, 2023 दिन रविवार | गाजीपुर/वाराणसी

15 दिसंबर तक बनकर तैयार हो जाएगा श्रीराम एयरपोर्ट

रामलला के विराजने से पहले शुरू होगी उड़ान, सीएम योगी व सिंधिया ने किया निरीक्षण

अयोध्या। अयोध्या का मयार्दा पुरुषोत्तम श्रीराम अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा 15 दिसंबर तक बनकर तैयार हो जाएगा। इसका लोकार्पण 22 जनवरी को रामलला के नए मंदिर में विराजने के पहले किया जाएगा। इसी के साथ राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय उड़ान भी शुरू हो जाएंगी। यह जानकारी शनिवार को एयरपोर्ट के निर्माण कार्य का निरीक्षण और समीक्षा करने के बाद प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ व केंद्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने दी। इस दौरान केंद्रीय मंत्री जनरल वीके सिंह भी मौजूद रहे। मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि एयरपोर्ट अथॉरिटी ऑफ इंडिया तेजी के साथ समयबद्ध तरीके से कम कर रही है। राम मंदिर का लोकार्पण होने से पूर्व अयोध्या को हवाई सेवा से जोड़ दिया जाएगा। केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने बताया कि कोई भी देशी या विदेशी पर्यटक जब यहां के एयरपोर्ट पर प्रवेश करेगा तो अयोध्या की सांस्कृतिक विशेषता और क्षमता का एहसास करेगा।

उन्होंने कहा कि अभी पहले चरण के काम को पूरा किया जाएगा। इसके बाद दूसरे चरण के काम की स्वीकृति कैबिनेट से ली जाएगी। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की मंशा है कि अयोध्या अंतरराष्ट्रीय मानचित्र पर चमकते सितारे की तरह जगमगाए। इसी दिशा में केंद्र और प्रदेश सरकार मिलकर काम कर रही है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, ज्योतिरादित्य सिंधिया व वीके सिंह ने निमार्णाधीन राम मंदिर को भी देखा और हनुमान गढ़ी व रामलला के दरबार में भी हाजिरी लगाई। बताया जा रहा है कि 22 जनवरी को होने वाले प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम से पहले एयरपोर्ट का संचालन शुरू हो जाएगा।

अयोध्या में सीएम योगी आदित्यनाथ ने 42वें रामायण मेला के पोस्टर का किया विमोचन

अयोध्या। राजा राम की नगरी अयोध्या में आयोजित होने वाले 42वें रामायण मेला के प्रथम दिन के कार्यक्रमों का पोस्टर विमोचन मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शनिवार को सरयू अतिथि गृह में किया। वहीं द्वितीय पोस्टर का विमोचन केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया व केंद्रीय मंत्री जनरल वीके सिंह ने किया। प्रथम पोस्टर में रामायण मेला में होने वाले कार्यक्रम के क्रम में धनुष यज्ञ की एवं द्वितीय पोस्टर में जनक जी के द्वारा कन्यादान की लीला को दर्शार्या गया है। मुख्यमंत्री ने बताया कि आवरण छवि में भारतीय लोक कला पर आधारित अवध की लोककला को प्रदर्शित किया गया है, जिसमें अवधी लोक कला और परंपरा की झलक स्पष्ट दिख रही है। आवरण छवि लोकार्पण के माध्यम से रामायण मेला में भारतीय लोक कला एवम संस्कृति को दशार्ना है। रामायण मेला समिति के द्वारा अयोध्या की गरिमा के अनुरूप कार्य किया जा रहा है। भातखंडे संस्कृत विश्वविद्यालय लखनऊ की कुलपति मांडवी सिंह ने बताया कि रामायण मेले के माध्यम से स्थानीय रामलीलाओं के स्तर को वैश्विक रूप दिया जाएगा। आवरण छवि को भित्ति फलक पर उकेरने का कार्य रीमा सिंह (शिक्षिका, अवध विश्वविद्यालय) ने किया। 42वें रामायण मेला के प्रथम एवं द्वितीय पोस्टर के अनावरण में महापौर महंत गिरीश पति त्रिपाठी, रामायण मेला समिति के संयोजक आशीष मिश्रा सहित अन्य गणमान्य लोग मौजूद रहे।

'गंगा नदी के आस-पास न हो कोई अवैध निर्माण कार्य', सुप्रीम कोर्ट का बिहार सरकार को निर्देश

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने बिहार सरकार को यह सुनिश्चित करने का निर्देश दिया है कि गंगा नदी के करीब, खासकर पटना और उसके आस-पास कोई निर्माण कार्य न हो। न्यायमूर्ति अनिरुद्ध बोस और न्यायमूर्ति ऑगस्टीन जॉर्ज मसीह की पीठ ने राज्य सरकार को पटना में गंगा नदी के डूब क्षेत्र में बनाए गए उन अवैध ढांचों को हटाने के बारे में सूचित करते हुए हलफनामा दायर करने का निर्देश दिया, जिन्हें चिह्नित किया गया है। मामला जब सुनवाई के लिए आता है तो बिहार सरकार के वकील कहते हैं कि राज्य ने पटना और उसके आसपास गंगा नदी से सटे 213 अनधिकृत निमार्णों की पहचान की है और इन अतिक्रमणों को हटाने के लिए कदम उठाए गए हैं। पीठ ने कहा, 'राज्य इस अदालत को एक हलफनामा दायर करके इन अवैध ढांचों को हटाने की दिशा में हुई प्रगति के बारे में रिपोर्ट देगा। इस तरह का हलफनामा बिहार के मुख्य सचिव द्वारा दायर किया जाएगा। राज्य यह भी सुनिश्चित करेगा कि गंगा नदी के आसपास, विशेष रूप से पटना शहर में और उसके आसपास कोई और निर्माण न हो।' शीर्ष अदालत पटना निवासी अशोक कुमार सिन्हा की याचिका पर सुनवाई कर रही थी।

आगरा : ट्रक ने ऑटो में मारी टक्कर, पांच सवारियों की मौत, हादसा देख कांप उठे लोग

आगरा। आगरा में सिकंदरा हाईवे पर गुरुद्वारा गुरु का ताल के सामने शनिवार को भीषण हादसा हुआ। ट्रांसपोर्ट नगर की ओर से आ रहे तेज रफ्तार ट्रक ने लालबत्ती पर खड़े ऑटो को रौंद दिया। उसमें सवार पांच यात्रियों की मौत बताई जा रही है। पुलिस ऑटो में फंसे शवों को बाहर निकालने का प्रयास कर रही है। ऑटो में आगे खड़े ट्रक और पीछे से आकर टक्कर मारने वाले ट्रक के बीच फंस गया। दुर्घटना को देख वहां मौजूद लोग कांप उठे। घटना दोपहर करीब सवा तीन बजे की है। सिकंदरा हाईवे स्थित गुरुद्वारा गुरु का ताल कट पर भगवान टाकीज चौराहे की ओर से आने वाले यातायात रुका हुआ था। सिकंदरा रेलवे ओवर ब्रिज ओर गुरुद्वारा से आने वाले वाहन हाईवे क्रास कर रहे थे।इसी दौरान ट्रांसपोर्ट नगर चौराहे की ओर से आते तेज रफ्तार राजस्थान नंबर के ट्रक ने ऑटो में जोरदार टक्कर मार दी। ऑटो आगे खड़े ट्रक में फंस गया। सवारियों को चीखने का भी मौका नहीं मिल सका। वह दोनों ट्रकों के बीच बुरी तरह से फंस गईं। दुर्घटना के बाद चालक ट्रक छोड़ कर भाग गया। हाईवे पर मौजूद राहगीरों ने सवारियों के शवों को बाहर निकालने का प्रयास शुरू कर दिया। भीषण दुर्घटना में मरने वालों की संख्या पांच बताई गई है। हालांकि अभी पुलिस ने मृतक संख्या की पुष्टि नहीं की है। एक महिला का नाम मोनिका सामने आ रहा है। हालांकि अभी सभी मरने वालों की पहचान के प्रयास किए जा रहे हैं। ऑटो सिकदंरा तिराहे की ओर जा रहा था। इससे अनुमान है कि सवारियां सिकंदरा और उसके आसपास की होंगी।

मनी लॉन्ड्रिंग मामले में संजय सिंह के खिलाफ ईडी ने चार्जशीट की दाखिल

नई दिल्ली। उत्पाद शुल्क नीति मामले से जुड़े मनी लॉन्ड्रिंग मामले में प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने आम आदमी पार्टी नेता संजय सिंह के खिलाफ राउज एवेन्यू कोर्ट में चार्जशीट दायर की। संजय को अक्टूबर 2023 में ईडी ने गिरफ्तार किया था। तब से ही आप सांसद संजय सिंह तिहाड़ जेल में हैं। 24 नवंबर संजय सिंह को कोर्ट में पेश किया गया था। कोर्ट ने सुनवाई करते हुए उनकी हिरासत एक बार फिर बढ़ा दी थी। कोर्ट ने चार दिसंबर तक की हिरासत बढ़ा दी थी। इससे पहले संजय सिंह को कोर्ट ने 10 नवंबर को 14 दिन की न्यायिक हिरासत में भेजा था। संजय सिंह ने जमानत के लिए राउज एवेन्यू कोर्ट, दिल्ली हाईकोर्ट से लेकर सुप्रीम कोर्ट तक में याचिका दायर की थी, लेकिन अभी तक उन्हें इसमें सफलता नहीं मिली है। ईडी का मनी लॉन्ड्रिंग का मामला केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) की एफआईआर से संबंधित है। सीबीआई और ईडी के अनुसार, अब रद्द हो चुकी दिल्ली आबकारी नीति 2021-22 को संशोधित करते समय अनियमितताएं बरती गईं और लाइसेंस धारकों को अनुचित लाभ पहुंचाया गया।

'सदस्यता खत्म करना ज्यादा..', महुआ मोइत्रा को लेकर अधीर रंजन का लोकसभा अध्यक्ष को पत्र

नई दिल्ली। तृणमूल कांग्रेस नेता महुआ मोइत्रा की मुश्किलें बढ़ सकती हैं। संसद के शीतकालीन सत्र के पहले दिन संसदीय आचार समिति अपनी रिपोर्ट पेश करेगी। अनुमान लगाया जा रहा है कि आचार समिति इस मामले में महुआ मोइत्रा की संसद सदस्यता खत्म किए जाने की मांग कर सकती है। इस बीच कांग्रेस नेता अधीर रंजन चौधरी ने लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला को इस मामले में एक चिट्ठी लिखी है। उन्होंने कहा है कि महुआ मोइत्रा की सदस्यता छिनना ज्यादा गंभीर बात होगी। गौरतलब है कि कैश-फॉर-क्वेरी मामले में आचार समिति ने मोइत्रा से पूछताछ की थी। मोइत्रा पर आरोप है कि उन्होंने उपहारों के बदले संसद में सवाल पूछे थे और उन्होंने अपना संसदीय लॉगिन आईडी-पासवर्ड एक व्यापारी के साथ साझा किया था। बता दें, मोइत्रा पहले ही अपने आरोपों को स्वीकार कर चुकी हैं। अधीर रंजन ने संसदीय समितियों के कामकाज

पर नियमों और प्रक्रियाओं पर पुनर्विचार के साथ इनकी सही से समीक्षा करने की मांग की। चार पन्नों वाले अपनी चिट्ठी में अधीर ने कहा कि विशेषाधिकार समिति और आचार समिति के लिए भूमिकाओं में कोई स्पष्ट दायरा नहीं है, खासकर दंडात्मक शक्तियों के इस्तेमाल के मामले में। आचार समिति की रिपोर्ट पर कार्रवाई का विरोध करते हुए अधीर रंजन ने कहा कि अनैतिक आचरण की कोई स्पष्ट परिभाषा नहीं है और इसके लिए आचार संहिता तैयार होना बाकी है। अधीर रंजन चौधरी लोक लेखा समिति के अध्यक्ष भी हैं। उन्होंने कहा कि उनके द्वारा व्यक्त किए गए विचार उनके अपने हैं। उन्होंने कहा कि इन मुद्दों पर अधिक ध्यान देने की जरूरत है और यह काम अध्यक्ष के मार्गदर्शन में किया जाना चाहिए। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, शीतकालीन सत्र के पहले दिन चार दिसंबर को विनोद कुमार सोनकर और अपराजिता सारंगी आचार समिति की पहली रिपोर्ट हिंदी और अंग्रेजी भाषा में सदन में पेश करेंगे। आचार समिति ने पिछले महीने लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला को मसौदा रिपोर्ट सौंपा था।

'सरकार सभी मुद्दों पर चर्चा के लिए तैयार', प्रह्लाद जोशी बोले- सर्वदलीय बैठक में मिले कई सुझाव

नई दिल्ली। संसद के शीतकालीन सत्र से पहले सर्वदलीय बैठक में सत्र के एजेंडे पर चर्चा हुई। संसदीय कार्य मंत्री प्रह्लाद जोशी ने यह बैठक बुलाई। इस बैठक में बैठक में 23 पार्टियों के 30 नेता शामिल हुए, जिन्होंने कई सुझाव दिए। उन्होंने कहा कि विपक्ष के सुझावों को सकारात्मक रूप से लिया गया है। सर्वदलीय बैठक संपन्न होने के बाद संसदीय कार्य मंत्री का बयान सामने आया। एक समाचार एजेंसी के मुताबिक, संसदीय कार्य मंत्री ने कहा कि चार दिसंबर से शीतकालीन सत्र शुरू हो रहा है और यह 22 दिसंबर तक चलेगा। 19 दिन तक चलने वाले सत्र में 15 बैठकें होंगी। हमने आज सर्वदलीय बैठक रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह की अध्यक्षता में बुलाई थी। उन्होंने कहा, बैठक में 23 पार्टियों के 30 नेता शामिल हुए। बैठक में कई सुझाव आए हैं... सरकार सभी मुद्दों पर चर्चा करने के लिए तैयार है, लेकिन नियमों को ध्यान में रखते हुए चर्चा होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि पिछले सत्र में भी मणिपुर के विषय पर चर्चा के लिए विपक्ष ने नोटिस दिया था तब हम तैयार थे। हमने राज्यसभा में हमने एडमिट भी किया था। लोकसभा में हमने बार-बार कहा था कि हम चर्चा के लिए तैयार हैं। सर्वदलीय बैठक में रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल, कांग्रेस नेता जयराम

रमेश, गौरव गोगोई और प्रमोद तिवारी, तृणमूल नेता सुदीप बंद्योपाध्याय, एनसीपी नेता फौजिया खान सहित 30 नेता शामिल हुए। शीतकालीन सत्र में भारतीय न्याय संहिता विधेयक 2023, भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता विधेयक 2023 और भारतीय साक्ष्य विधेयक 2023 पर विचार किए जाने की संभावना है। सर्वदलीय बैठक के बाद प्रमोद तिवारी ने तृणमूल सांसद महुआ मोइत्रा का बचाव किया।

चुनावी हिंसा में कमी, 11 राज्यों में केवल 6 केंद्रों पर हुए पुनर्मतदान, 2000 करोड़ की नशीली दवा-नकदी जब्त

नई दिल्ली। पांच राज्यों में हाल में संपन्न हुए विधानसभा चुनावों में निर्वाचन आयोग की सख्ती और प्रयासों का असर दिखा। अब तक 11 राज्यों में हुए चुनावों में केवल 6 मतदान केंद्रों पर ही पुनर्मतदान हुआ है। वहीं, चुनावी हिंसा की घटनाओं में भी उल्लेखनीय कमी दर्ज की गई है। छिटपुट हिंसा की घटनाओं को छोड़कर कहीं भी बड़ी हिंसा की घटना सामने नहीं हाई। वहीं, 2019 में हुए आम चुनावों में त्रिपुरा में ही 168 जगहों पर पुनर्मतदान हुआ। वहीं, आयोग सख्ती के कारण 5 राज्यों में 2000 करोड़ रुपये की नशीली दवाएं, नकदी, उपहार और कीमती वस्तुएं जब्त हुईं। 45 हजार से ज्यादा शिकायतें मिलीं। इसमें पहले सौ मिनट में ही 99 फीसदी का समाधान कर दिया गया। मिजोरम में भी हिंसा की एक भी बड़ी घटना नहीं हुई है। वहीं, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ में भी नक्सल प्रभावित इलाकों में भी लोगों ने जमकर मतदान किया। मध्य प्रदेश में 2018 में 74.97 तो 2023 में 76.22% मतदान हुआ, छत्तीसगढ़ में पिछली बारे के 76.45 प्रतिशत से इस बार कुछ कम यानी 76.32 फीसदी मतदान हुई। राजस्थान में 74.06 प्रतिशत से बढ़कर 74.96%, मतदान हुआ। मिजोरम में 77.4 फीसदी रहा। तेलंगाना में पिछली बार के मतदान 73.37 फीसदी के मुकाबले इस बार केवल 70.71% मतदान हुआ है। चुनाव आयोग इन चुनावों में आदर्श आचार संहिता (एमसीसी) के उल्लघंन को लेकर सतर्क है। इसके लिए आयोग आगामी लोकसभा चुनावों से ही एमसीसी के सख्त अनुपालन को लेकर कड़े कदम उठाएगा। इस दिशा में तेजी से कार्रवाई भी शुरू कर दी है। मुख्य चुनाव आयुक्त राजीव कुमार ने कहा चुनाव आयोग एक सांविधानिक संस्था है। उन्होंने आदर्श आचार संहिता के उल्लंघन पर राजनीतिक दलों की एमसीसी समझ पर सवाल उठाया है। अमर उजाला से उन्होंने कहा है कि चुनाव में राजनीतिक दलों की चुनावी आदर्श आचार संहिता की समझ और उनके द्वारा किए जा रहे कार्य बताते हैं कि या तो उनमें समझ की कमी है, या वह अनर्गल प्रलाप राजनीतिक लाभ के लिए कर रहे हैं।

जातीय जनगणना के प्रति जागरूकता से भाजपा की नींद उड़ी, राष्ट्रीय स्तर पर कराना सही विकल्प : मायावती

लखनऊ। बहुजन समाज पार्टी की राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री मायावती ने कहा कि जातीय जनगणना के प्रति लोगों की जागरूकता ने भाजपा की नींद उड़ा दी है। वहीं कांग्रेस अपने अपराधों पर पर्दा डालने में व्यस्त है। बसपा सुप्रीमो ने शनिवार को एक्स पर जारी अपने बयान में आगे कहा कि संसद के आगामी 4 दिसम्बर से शुरू हो रहे शीतकालीन सत्र से पहले आज सर्वदलीय बैठक में बसपा द्वारा सरकार से देश में जातीय जनगणना कराए जाने की मांग दोबारा की गई है। अब जबकि इसकी मांग देश के कोने-कोने से उठ रही है, केन्द्र सरकार द्वारा इस बारे में अविलम्ब सकारात्मक कदम उठाना जरूरी है। महंगाई, गरीबी, बेरोजगारी, बदहाल सड़क, पानी, बिजली, शिक्षा, स्वास्थ्य व कानून व्यवस्था से त्रस्त व जातिवादी शोषण-अत्याचार से पीड़ित देश के लोगों में जातीय जनगणना के प्रति जो अभूतपूर्व रुचि एवं जागरूकता है, वह भाजपा की नींद उड़ा रही है। उन्होंने कहा कि वैसे विभिन्न राज्य सरकारें 'सामाजिक न्याय' की दुहाई देकर आधे-अधूरे मन से जातीय जनगणना कराकर जनभावना को काफी हद तक साधने का प्रयास कर रही हैं लेकिन इसका सही समाधान तभी संभव है जब केन्द्र सरकार राष्ट्रीय स्तर पर सही जातीय जनगणना कराकर लोगों को उनका हक देना सुनिश्चित करेगी।

पंजाब में लगातार बढ़ रहा प्रदूषण का स्तर, पराली प्रबंधन बना सबसे बड़ी चुनौती

पटियाला। पंजाब में पराली का प्रबंधन सरकार के लिए बड़ी चुनौती बन गया है। राज्य में लगातार प्रदूषण का स्तर बढ़ रहा है। पराली सीजन के दौरान एयर क्वालिटी इंडेक्स (एक्यूआई) 400 के स्तर को छूने लगा है। इस बार भी बठिंडा और मंडी गोबिंदगढ़ जैसे शहरों का एक्यूआई लगातार 350 से ऊपर रहा। पराली जलाने के मामलों में भले ही बीते सालों के मुकाबले कमी आ रही है, लेकिन इसकी रफ्तार काफी धीमी है। पंजाब प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के चेयरमैन आदर्श पाल विग का कहना है कि साल 2022 की तुलना में इस बार करीब 30 फीसदी पराली कम जली है। हालांकि, लक्ष्य 50 फीसदी का था। उम्मीद है कि आने वाले समय में पराली जलाने के मामले और कम होंगे। पर्यावरण विशेषज्ञों का मानना है कि पराली जलाने के चलन पर पूरी तरह से काबू पाकर ही समस्या का हल किया जा सकता है। इस बार भी पराली जलाने की 36663 घटनाएं दर्ज की गईं। किसानों को पराली प्रबंधन के लिए मशीनें मुहैया कराई गईं थीं। इसके बावजूद घटनाओं में उतनी कमी नहीं आ सकी, जितनी उम्मीद थी। हर वर्ष उत्तर भारत में अक्तूबर व नवंबर के महीनों में प्रदूषण का स्तर बढ़ जाता है। इसकी सारी तोहमत पंजाब पर लगती है। हरियाणा जहां प्रदूषण के लिए पंजाब को जिम्मेदार ठहराता है, वहीं पंजाब इसके लिए दिल्ली में वाहनों की अधिक संख्या को जिम्मेदार ठहराता है। साल 2018 की बात करें, तो 10 नवंबर को

अमृतसर का एक्यूआई 116, बठिंडा का 123, जालंधर का 124, खन्ना का 211, मंडी गोबिंदगढ़ का 191, पटियाला का 174 दर्ज किया गया था। 10 नवंबर 2023 पर रहे एक्यूआई को देखा जाए, तो अमृतसर का 212, बठिंडा का 383 (बेहद खराब), मंडी गोबिंदगढ़ का 305, पटियाला का 306, जालंधर का 221 और खन्ना का 256 दर्ज किया गया था। 15 सितंबर से लेकर 30 नवंबर तक सेटेलाइट के जरिये पराली जलने के मामलों की मॉनीटरिंग की जाती है। ज्यादा खराब स्थिति मध्य अक्तूबर से मध्य नवंबर तक रहती है। इस दौरान एक्यूआई का स्तर काफी बढ़ा रहता है। यह समस्या हर बीतते साल के बढ़ती जा रही है। पंजाब में साल 2016 में पराली जलाने के 81042 मामले रिपोर्ट हुए, जबकि 2017 में 45384 और 2018 में इसकी संख्या 50590 रही। इसी तरह से साल 2019 में पराली जलाने के 55210 मामले, 2020 में 76590 मामले, 2021 में 71304 मामले, 2022 में 49922 मामले और मौजूदा सीजन में साल 2023 में 36663 मामले रिपोर्ट किए गए। चिंताजनक बात यह है कि पराली जलाने के भले ही सरकारों के प्रयासों के चलते कम हो रहे हैं, परंतु एक्यूआई स्तर का बढ़ता स्तर खतरे की घंटी है। इस बार पंजाब सरकार को प्रदूषण के मुद्दे पर सुप्रीम कोर्ट से दो बार फटकार पड़ी। लगातार पंजाब पराली जलाने के मसले को लेकर केंद्र व दिल्ली सरकारों के निशाने पर भी बना रहता है।

कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष ने गिनाई योगी सरकार की नाकामियां, बोले- हर मोर्चे पर सरकार विफल

लखनऊ। कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष अजय राय ने प्रेसवार्ता में कहा कि प्रदेश की योगी सरकार हर मोर्चे में विफल है। उन्होंने स्वास्थ्य सेवा, किसान, अपराध, विकास और युवाओं के मुद्दे पर प्रदेश सरकार को घेरा। अजय राय ने कहा कि जिस सरकार में उन्हीं की पार्टी के सांसद के बेटे को इलाज नहीं मिला। वह पीजीआई में भर्ती नहीं हुए और निधन हो गया। कहीं मजबूर अपनी बहन का शव बांधकर ले गया तो कहीं अस्पताल में बच्चों के शव को कुत्ते नोच रहे हैं। सरकार, सदन में तो बड़े बड़े आंकड़े देती है लेकिन उसकी सच्चाई अलग है। अपराध के मामले बढ़े हैं। किसान बदहाल हैं। गन्ना का नया सत्र शुरू हो गया और अब तक पिछला 4000 करोड़ का बकाया भुगतान नहीं किया गया है। उन्होंने कहा कि सुल्तानपुर में डाक्टर और कौशांबी में युवक की हत्या हुई। प्रमुख सचिव गृह ने खुद माना की कई जिलों में अपराध बढ़े हैं। भाजपा कहती हैं कि माफिया, गुंडे भाग गए। सच्चाई यह है कि माफिया या तो भाजपा में चल गए या उनके संरक्षण में काम कर रहे हैं। यह सरकार झूठे वादे और झूठे आंकड़े सदन में रख रही है। उन्होंने 69000 शिक्षक भर्ती के

अभ्यर्थियों के उत्पीड़न का मुद्दा उठाया। पार्टी विधायक वीरेंद्र चौधरी ने सदन में नियमावली के पालन न होने की बात कही। उन्होंने कहा कि नियम के अनुसार कम से कम दस दिन सदन चलना चाहिए। पार्टी इसकी मांग भी करती है। उन्होंने देश और प्रदेश में जातीय जनगणना की मांग भी उठाई।

संपादकीय

जलवायु संकट के लिए मुख्य रूप से विकसित देश जिम्मेदार

दुनिया भर में बढ़ते तापमान और जलवायु परिवर्तन को लेकर पिछले कई वर्ष से लगातार चिंता जताई जा रही है। अब इसकी वजहें स्पष्ट हैं। मगर मुश्किल यह है कि जब भी उन वजहों को दूर करने की बात आती है, तो विकसित देश अपनी भूमिका को कम करके पेश करते हैं और इसके हल के लिए उठाए जाने वाले कदमों को लागू करने की जिम्मेदारी विकासशील देशों पर थोप देते हैं। जबकि समूची धरती पर जलवायु संकट जिस स्तर तक गहरा हो चुका है, उसमें मुख्य रूप से विकसित देशों की जिम्मेदारी रही है। इसके बावजूद इस मसले पर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आयोजित हर बैठक या सम्मेलन में तीसरी दुनिया के या विकासशील देशों ने समस्या के समाधान को लेकर अपेक्षित गंभीरता दिखाई है, उसमें अपनी ओर से हर संभव योगदान किया है। इसी को इंगित करते हुए प्रधानमंत्री ने विकास देशों को अपेक्षित जलवायु वित्तपोषण और प्रौद्योगिकी संबंधी हस्तांतरण सुनिश्चित करने का आह्वान करते हुए कहा कि इस पर गौर किया जाना चाहिए कि इन देशों ने जलवायु संकट बढ़ाने में कोई योगदान नहीं किया है, इसके बावजूद वे इसके समाधान का हिस्सा बनने के इच्छुक हैं। दरअसल, सीओपी28 में भाग लेने दुबई गए प्रधानमंत्री ने एक तरह से जलवायु संकट पर विकासशील देशों के सामूहिक रुख को प्रतिनिधि स्वर दिया है। सच यह है कि बढ़ते तापमान और उसकी वजह से पैदा होने वाली पर्यावरणीय समस्या के पीछे विकसित देशों की ही भूमिका ज्यादा है। खासकर कार्बन डाईआक्साइड के उत्सर्जन को लेकर दुनिया भर में विशेष उपायों को अपनाने या लागू करने पर जोर दिया जाता है। इस समस्या के बढ़ने में अपनी बहुत बड़ी जिम्मेदारी न होने के बावजूद कार्बन उत्सर्जन कम करने को लेकर जब भी कोई मानक तय किया गया, उस पर अमल के लिए विकासशील देशों ने अपनी ओर से हर संभव उपाय किए, सरोकार जताया, जबकि विकसित देशों ने अलग-अलग कारण बता कर इसमें भागीदारी निभाने को लेकर टालमटोल ही किया। कई बार ऐसे मौके आए जब विकासशील देशों को आर्थिक सहायता मुहैया कराने के मामले में पर्यावरण असंतुलन को कसौटी बनाया गया। इसे रेखांकित करते हुए प्रधानमंत्री ने भी कहा कि जलवायु वित्तपोषण पर प्रगति इस मसले पर जरूरी कार्रवाई पर बढ़ती महत्त्वाकांक्षाओं के अनुरूप दिखनी चाहिए। यह किसी से छिपा नहीं है कि जलवायु परिवर्तन एक सामूहिक चुनौती है, जिससे निपटने के लिए एकीकृत वैश्विक प्रतिक्रिया की आवश्यकता है। जहां तक भारत का सवाल है, नवीकरणीय ऊर्जा, ऊर्जा दक्षता और संरक्षण, वनीकरण जैसे कई क्षेत्रों में भारत की उपलब्धियां इसकी प्रतिबद्धता का सबूत हैं। यह सब दरअसल जलवायु संकट या बढ़ते तापमान की समस्या को दूर करने के लिए कार्बन उत्सर्जन को कम करने के लक्ष्य से उठाए गए कदम हैं। भारत के अलावा भी विकासशील देशों ने अपनी सीमा में इस मसले पर योगदान दिया है, ताकि इस वैश्विक चिंता से निपटने में मदद मिल सके। हालांकि यह समझना मुश्किल है कि बढ़ते तापमान को एक सबसे बड़े संकट के रूप में पेश करने वाले विकसित देश अपने यहां कार्बन उत्सर्जन को नियंत्रित करने या कम करने को लेकर ईमानदार पहल क्यों नहीं करते। जरूरत इस बात की है कि जिन विकासशील देशों में इस समस्या के हल को लेकर अपेक्षित गंभीरता दशार्यी जा रही है, उन्हें वित्तीय सहायता मुहैया कराई जाए। मगर जलवायु संकट में कमी तब तक संभव नहीं है, जब तक विकसित देश इस दिशा में जरूरी इच्छाशक्ति के साथ काम न करें।

हो ऐसा उपाय!

पत्रकारिता स्वच्छ रहे ।
हो ऐसा उपाय ।।
काम है जो सच्चा ।
है वही सहाय ।।
है रह कर निष्पक्ष ।
करनी हर पड़ताल ।।
रहे ध्यान केंद्रित ।
वाजिब भी सवाल ।।
बेवजह और बेमतलब से ।
है पाना छुटकारा ।।
बात सही है लोकतंत्र का ।
आप भी सहारा ।।
ज़िम्मेदार बन कर ।
है सब कुछ निपटाना ।।
पास आपके ताकत है ।
दुनिया ने भी माना ।।

–कृष्णेन्द्र राय

आत्मनिर्भर बनने के लिए उठाये गये कदमों ने भारतीय अर्थव्यवस्था को तेजी से आगे बढ़ाया है

प्रह्लाद सबनानी

वित्तीय वर्ष 2023-24 की द्वितीय तिमाही, जुलाई-सितम्बर 2023 के सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि के आंकड़े भारत सरकार द्वारा जारी कर दिए गए हैं। इस वर्ष द्वितीय तिमाही में सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि दर विभिन्न वित्तीय संस्थानों द्वारा लगाए गए अनुमानों से बहुत ऊपर रही है। विभिन्न अर्थशास्त्रियों द्वारा दिए गए 6.8 प्रतिशत के अनुमान से बहुत अधिक अर्थात यह वृद्धि दर 7.6 प्रतिशत की रही है, जबकि वित्तीय वर्ष 2022-23 की द्वितीय तिमाही में 6.2 प्रतिशत की रही थी। भारत में इस वर्ष द्वितीय तिमाही में सकल घरेलू उत्पाद में दर्ज की गई वृद्धि की तुलना में अन्य देशों के सकल घरेलू उत्पाद में तिमाही के दौरान वृद्धि दर बहुत कम रही है। फिलिपींस में 5.9 प्रतिशत, रूस में 5.5 प्रतिशत, वियतनाम में 5.33 प्रतिशत, अमेरिका में 5.2 प्रतिशत, चीन में 4.9 प्रतिशत, मलेशिया में 3.3 प्रतिशत, थाईलैंड में 1.5 प्रतिशत, ब्रिटेन में 0.6 प्रतिशत, यूरो क्षेत्र में 0.1 प्रतिशत, जर्मनी में रिणात्मक 0.4 प्रतिशत एवं जापान में रिणात्मक 2.1 प्रतिशत वृद्धि दर दर्ज की गई है। इस प्रकार भारत पूरे विश्व में लगातार सबसे तेज गति से आगे बढ़ती अर्थव्यवस्था बना हुआ है।

हर्ष का विषय तो यह है कि भारत के सकल घरेलू उत्पाद में जुलाई-सितम्बर 2023 तिमाही के दौरान 7.6 प्रतिशत की वृद्धि दर में मुख्य योगदान उद्योग क्षेत्र का रहा है। भारत के उद्योग क्षेत्र ने इस दौरान 13.2 प्रतिशत की वृद्धि दर हासिल की है, जोकि हाल ही के समय में अपने आप में एक रिकॉर्ड है। वित्तीय वर्ष 2022-23 की द्वितीय तिमाही, जुलाई-सितम्बर 2022 के दौरान उद्योग क्षेत्र ने रिणात्मक 0.5 प्रतिशत की वृद्धि दर हासिल की थी। उद्योग क्षेत्र के अंतर्गत, विनिर्माण क्षेत्र ने 13.9 प्रतिशत की विकास दर हासिल की है जो पिछले वर्ष इसी अवधि के दौरान रिणात्मक 3.8 प्रतिशत थी। ऊर्जा उत्पादन क्षेत्र ने 10.1 प्रतिशत की वृद्धि दर, माइनिंग क्षेत्र ने 10

प्रतिशत, कन्स्ट्रक्शन क्षेत्र ने 13.3 प्रतिशत की आकर्षक वृद्धि दर हासिल की है। इन समस्त क्षेत्रों में रिकार्ड वृद्धि दर से भारत में रोजगार के करोड़ों नए अवसर निर्मित हुए हैं, जिसके चलते बेरोजगारी की दर में भी कमी दृष्टिगोचर हुई है।

भारत में प्रत्येक वर्ष अक्टूबर-नवम्बर माह में दीपावली एवं अन्य कई महत्वपूर्ण त्यौहारों का मौसम रहता है। इन त्यौहारों के दौरान भारत के नागरिकों द्वारा विभिन्न उत्पादों की भारी मात्रा में खरीददारी की जाती है। ऐसा आभास है कि अकटोबर-नवम्बर में पड़ने वाले विभिन्न त्यौहारों को ध्यान में रखते हुए जुलाई-सितम्बर 2023 तिमाही में ऑटोमोबाइल, फ्रिज, टीवी, मोबाइल फोन, आदि जैसे विभिन्न उत्पादों का भारी मात्रा में उत्पादन विनिर्माण इकाईयों द्वारा किया गया है। जिसके चलते इस तिमाही में विनिर्माण इकाईयों ने भारी भरकम 13.9 प्रतिशत की वृद्धि दर हासिल की है। भारत में कन्स्ट्रक्शन क्षेत्र ने भी रफ्तार पकड़ ली है, जिसके चलते इस क्षेत्र में आकर्षक 13.3 प्रतिशत की वृद्धि दर हासिल कर ली गई है। अक्टूबर 2023 माह में भी कोर क्षेत्र के उद्योगों ने 12.1 प्रतिशत की वृद्धि दर हासिल की है। इस वर्ष अल नीनो के प्रभाव के चलते देश के कई क्षेत्रों में मानसून की बारिश ठीक तरह से नहीं हो पाई है। इसका विपरीत प्रभाव कृषि क्षेत्र पर स्पष्टतः पड़ता हुआ दिखाई दिया है। कृषि क्षेत्र में वित्तीय वर्ष 2023-24 की द्वितीय तिमाही में केवल 1.2 प्रतिशत की वृद्धि दर हासिल की जा सकी है, जोकि पिछले वर्ष इसी अवधि में 2.5 प्रतिशत की रही थी। भारत में कृषि क्षेत्र पर विशेष ध्यान दिये जाने की अत्यधिक आवश्यकता है क्योंकि रूस-यूक्रेन युद्ध के चलते पूरे विश्व में ही खाद्य उत्पादों की भारी कमी महसूस की जा रही है। भारत, इस स्थिति का लाभ उठा सकता है एवं पूरे विश्व को ही खाद्य पदार्थों की आपूर्ति कर सकता है। रबी मौसम की बुआई का कार्य प्रगति पर है। यदि खाद्य पदार्थों की बुआई के क्षेत्रफल में भारी विस्तार किया जा सके तो खाद्य पदार्थों के उत्पादन में भारी वृद्धि की जा सकती है। आज पूरा विश्व ही खाद्य पदार्थों के लिए भारत की ओर टकटकी लगाए है एवं आशाभरी नजरों से भारत की ओर देख रहा है। वित्तीय वर्ष 2023-24 की द्वितीय तिमाही में सेवा क्षेत्र में रिकॉर्ड की गई वृद्धि दर ने जरूर निराश किया है। इस दौरान सेवा क्षेत्र ने 4.8 प्रतिशत की वृद्धि दर हासिल की है जो पिछले वर्ष की इसी अवधि में दर्ज की गई वृद्धि दर 9.4 प्रतिशत की तुलना में बहुत कम है। इस वर्ष द्वितीय तिमाही में हासिल की गई वृद्धि दर से आश्चर्य भी हुआ है क्योंकि विभिन्न बैंकों द्वारा प्रदान किए जा रहे ऋणों में वृद्धि दर लगातार दहाई के आंकड़े पर बनी हुई है, होटल लगातार अपनी स्थापित क्षमता का भरपूर उपयोग करते हुए दिखाई दे रहे हैं, रेलवे एवं हवाई जहाज का उपयोग भी लगातार उच्चत्तम स्तर पर बना हुआ है।

डॉ. सुबाष चंद्रा काशी भूषण रत्न से सम्मानित

प्रखर वाराणसी। देव दीपावली के अवसर पर जनता हिताय समिति एवं शंखनाद न्यूज द्वारा समाज के प्रबुद्ध लोगों को उनके उत्कृष्ट कार्य के लिए सम्मानित किया गया। जिसमें डॉक्टर सुबाष चंद्रा को समाज सेवा व साहित्य, डॉक्टर एस के पाठक व डॉक्टर अनुराग टंडन को चिकित्सा, डॉक्टर नसीम निशा व झरना मुखर्जी को साहित्य, गीतांजलि दुबे को शिक्षा के क्षेत्र में अतुलनीय योगदान के लिए काशी भूषण रत्न से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन हुआ। सम्मान समारोह में कई विशिष्ट व गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

फिर सामने आया मायावती का तिलक-तराजू और तलवार विरोधी चेहरा

अजय कुमार

उत्तर प्रदेश की राजनीति में धर्म का तड़का कोई नई बात नहीं है। धर्म के नाम पर कांग्रेस, सपा, बसपा जैसी पार्टियां मुस्लिम तुष्टिकरण की सियासत करती हैं तो भारतीय जनता पार्टी धर्म के नाम पर हिन्दू वोटरों को एकजुट करने की कोशिश में लगी रहती है। यह कहना अतिशियोक्ति नहीं होगी कि मौजूदा दौर में यूपी के अंदर सभी राजनैतिक दल और उसके नेता अपनी राजनीति चमकाने के लिए कहीं न कहीं समाज के बीच धार्मिक विद्वेष फैलाकर इनके बीच खाई पैदा करने का काम ठीक वैसे ही कर रहे हैं, जैसे कभी बीजेपी ने रामलला हम आयेंगे, मंदिर वहीं बनवायेंगे का और बसपा ने तिलक-तराजू और तलवार, इनको मारो जूते चार का एवं समाजवादी पार्टी ने 80 हराओ, बीजेपी हटाओ का नारा दिया था। बीएसपी के संस्थापक कांशीराम को तो मानो चुनावी नारे गढ़ने में महारथ हासिल थी। उन्होंने बसपा के साथ पिछड़ों और दलितों को लाने के लिए नारा दिया था ठाकुर बामन बनिया छोड़, बाकी सब हैं डीएस-फोर'। देखा जाये तो एक तरफ नारों से वोटरों को अपनी तरफ खींचा जाता है।

वोटरों को लुभाने के लिए हमारे नेता विवादित भाषा बोलने से भी परहेज नहीं करते हैं। तमिलनाडु सरकार में मंत्री डीएमके नेता उदयनिधि स्टालिन, कर्नाटक की कांग्रेस सरकार के मंत्री प्रियांक खरगे, बिहार सरकार के मंत्री चंद्रशेखर और उत्तर प्रदेश के समाजवादी पार्टी के महासचिव स्वामी प्रसाद मौर्य की सनातन धर्म के विरुद्ध मुखरता सबने सुनी है। इसी तरह बसपा का भी मौन मिशन सनातन धर्म के खिलाफ लगातार चल रहा है। पार्टी की अधिकृत वेबसाइट पर सच्ची रामायण की चाभी नाम से वह पुस्तक अपलोड है, जिसमें भगवान विष्णु, श्रीराम, माता सीता आदि पर बेहद आपत्तिजनक टिप्पणियां की गई हैं।

वैसे यह बात किसी से छिपी नहीं है कि बसपा सुप्रीमो मायवती हमेशा दलितों के पक्ष में उत्तर प्रदेश सहित मध्य प्रदेश, राजस्थान, पंजाब और उत्तराखंड आदि राज्यों में खुलकर जातिवादी राजनीति करती हैं। बेशक उनकी ताकत यह वोटबैंक है, लेकिन उन्हें अब तक यूपी की सत्ता तभी मिली है, जब सवर्णों ने उनका साथ दिया। मायावती इसे जानती हैं, इसीलिए उनकी पार्टी एक तरफ तिलक, तराजू और तलवार इनको मारो जूते जैसे विवादित नारे के पीछे खड़ी रहती है तो दूसरी ओर सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय की भी बात करती है। साथ ही सोशल इंजीनियरिंग को भी वह अपना चुनावी हथियार बनाती हैं। इसके इतर बसपा की अधिकृत वेबसाइट 'बीएसपी इंडिया डॉट इन पार्टी की सनातन विरोधी तस्वीर दिखाती है। इस वेबसाइट में पार्टी के आंदोलन, उपलब्धियों, संगठनामक संरचना आदि की जानकारी के साथ ही हमारे आदर्श नाम से एक कॉलम है। इसमें संविधान निमार्ता डॉ. भीमराव आंबेडकर और बसपा संस्थापक कांशीराम के साथ ही पेरियार ललई सिंह यादव का नाम और जीवनी लिखी है। यहां ललई सिंह की उपलब्धियों के तौर पर लिखा है गया है कि है सच्ची रामायण कैसे जीती कानूनी लड़ाई।

रुद्र धीरज आईटीआई सहजनवां मे हुआ बच्चों का इंटरव्यू

प्रखर सहजनवां, गोरखपुर। शनिवार को मदरसन सुमी इंटरनेशनल नोएडा व भारत सीट्स लिमिटेड मानेसर गुरुग्राम द्वारा रूद्र धीरज आईटीआई सहजनवा गोरखपुर में आईटीआई उत्तीर्ण 350 प्रशिक्षार्थियों का लिखित परीक्षा कराई गई लिखित परीक्षा में उत्तीर्ण 275 प्रशिक्षार्थियों का मदरसन सुमी इंटरनेशनल नोएडा व भारत सीट्स लिमिटेड मानेसर गुरुग्राम द्वारा एचआर के द्वारा साक्षात्कार लिया गया जिसमें 145 प्रशिक्षार्थियों को कंपनी के द्वारा चयन किया गया चयनित प्रशिक्षार्थियों को एच आर मदरसन सुमी इंटरनेशनल ने बताया कि कंपनी विभिन्न ऑटोमोबाइल्स सेक्टर के कंपनियों के लिए इलेक्ट्रिक इक्विपमेंट व वायरिंग बनाने का काम करती है भारत सीट्स मारूति सुजुकी की गाडियों की सीट बनाती है तथा कंपनी के काम नियम एवं अनुशासन के बारे में जानकारी दी संस्थान के प्रबंधक महोदय श्री आईपीएन सिंह जी ने चयनित अभ्यर्थियों को शुभकामनाएं देते हुए कंपनी में मन लगा कर अच्छी तरह से काम करने की प्रेरणा दी संस्थान के प्रधानाचार्य श्री राजेश सिंह सोलंकी ने चयनित अभ्यर्थियों के उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए कहा कि हमें विश्वास है कि आप लोग अपने कार्यों से कंपनी के साथ-साथ संस्थान का भी नाम रोशन करेंगे।

दी इंस्टीटूट ऑफ चार्टर्ड एकाउंटेंट्स ऑफ इंडिया की वाराणसी शाखा द्वारा एक सेमिनार का आयोजन

प्रखर पूर्वान्चल वाराणसी। दी इंस्टीटूट ऑफ चार्टर्ड एकाउंटेंट्स ऑफ इंडिया की वाराणसी शाखा द्वारा 2 दिसम्बर 2023 शनिवार को एक सेमिनार का आयोजन सिगरा स्थित एक होटल में किया गया जिसका विषय बेनामी अधिनियम और काला धन

अधिनियम, पीएमएलए और डीपीडीपी अधिनियम` सेमिनार के मुख्य वक्ता सीए. राजीव मेहरोत्रा कानपूर, सीए. उदय वी कुलकर्णी मुंबई, एवं सीए. हरप्रीत सिंह मेरठ रहे` कार्यक्रम का शुभारम्भ शाखा अध्यक्ष सी.ए. अनिल कुमार अग्रवाल के स्वागत भाषण द्धारा किया गया कार्यक्रम की अध्यक्षता पूर्व अध्यक्ष सीए. कमलेश अग्रवाल, एवं शिव कुमार अग्रवाल और सीए जमुना शुक्ला ने की कार्यक्रम का संचालन सीए. कोमल गोयल. एवं सीए. मनस अग्रवाल ने किया` इस सेमिनार मे प्रथम सत्र के वक्ता सीए.राजीव मेहरोत्रा कानपूर ने बताया की आयकर विभाग ने नए बेनामी और काला धन एक्ट के तहत कार्रवाई शुरू कर दी है अधिनियम के अनुसार, बेनामी संपत्ति में चल या अचल संपत्ति, मूर्त या अमूर्त संपत्ति, भौतिक या निराकार संपत्ति यह बेनामी की अनंतिम कुर्की और बाद में जब्ती का अधिकार देता है साथ ही उन्होंने ये भी बताया की यह लाभकारी मालिक, बेनामीदार, दुष्प्रेरक आदि के खिलाफ मुकदमा चलाने की भी अनुमति देता है बेनामी लेनदेन के लिए प्रेरित करने वाले को 7 वर्ष तक का कठोर कारावास हो सकता है और साथ में आर्थिक जुमार्ना भी लगता है` इस सेमिनार मे द्वितीय सत्र वक्ता सीए. उदय वी कुलकर्णी, ने बताया की मनी लॉन्ड्रिंग रोकथाम अधिनियम, 2002 (पीएमएलए) भारत में एक महत्वपूर्ण कानून है जिसका उद्देश्य मनी लॉन्ड्रिंग और आतंकवादी वित्तपोषण को रोकना है पीएमएलए वित्तीय संस्थानों, बैंकिंग कंपनियों और मध्यस्थों को अपने ग्राहकों के लेनदेन का रिकॉर्ड बनाए रखने और मनी लॉन्ड्रिंग को रोकने के लिए उचित परिश्रम करने का आदेश देता है` इसके उपरान्त तृतीय सत्र के सीए. हरप्रीत सिंह ने बताया की यह विधेयक भारत के भीतर डिजिटल व्यक्तिगत डेटा के प्रसंस्करण पर लागू होगा जहां ऐसा डेटा ऑनलाइन एकत्र किया जाता है या ऑफलाइन एकत्र किया जाता है और डिजिटलीकृत किया जाता है ` व्यक्तिगत डेटा को किसी व्यक्ति की सहमति पर केवल वैध उद्देश्य के लिए संसाधित किया जा सकता है निर्दिष्ट वैध उपयोगों के लिए सहमति की आवश्यकता नहीं हो सकती है ` कार्यक्रम के अंत धन्यवाद् ज्ञापन शाखा सचिव सीए. नीरज कुमार सिंह द्वारा किया गया ` इस कार्यक्रम में शाखा सिकासा अध्यक्ष सीए. विकास द्विवेदी, शाखा कोषाध्यक्ष सीए. वैभव मेहरोत्रा, पूर्व अध्यक्ष सीए शिशिर उपाध्याय, सीए मनोज निगम, सीए विष्णु अग्रवाल, सीए अचल श्रीवास्तव, सीए रितेश बाजोरिया, सीए सुकांत रॉय, सीए रोहित विशंभरी, सीए अनुराग तिवारी, सीए हर्ष भूरा आदि लोग उपस्थित रहे।

दोहरे हत्याकांड में पीड़ित परिवार को मिले सरकारी नौकरी: कांग्रेस

प्रखर खेतासराय (जौनपुर)। नगर में दुस्साहस तरीके से दो भाइयों की हत्या किए जाने राजनीतिक पार्टियों का आने का क्रम जारी है। शनिवार को कांग्रेस पार्टी के प्रतिनिधिमंडल में शामिल वरिष्ठ नेता विकेश उपाध्याय, युवा कांग्रेस के जिलाध्यक्ष सन्दीप सोनकर, गौरव सिंह, जिला उपाध्यक्ष आदिल व अबसार कुरैशी ने पीड़ित परिजनों से मुलाकात कर ढाढस बढ़ाते हुए आर्थिक सहायता दी । घटना स्थल का भी दौरा कर प्रदेश सरकार पर भी सवाल उठाए । यहां पहुँचा प्रतिनिधिमंडल ने पीड़ित के पिता फूलचंद्र और माँ मनभावती से मिलकर उनके आँसू पोछे । करीब आधे घण्टे रुकने के बाद मीडिया से खुलकर सरकार पर निशाना साधा । नेतृत्व कर रहे कांग्रेस नेता विकेश उपाध्याय ने कहा कि योगी सरकार सिर्फ अपराध पर जीरो टारलेंस की बात कहकर जनता को गुमराह कर रही है । अपराधी सरेआम सड़क पर हत्या कर दे रहे है । पुलिस भी मुठभेड़ में गिरफ्तारी दिखाकर झूठी वाहवाही लेने में व्यस्त है । बेगुनाहों का खून का कोई मतलब नही रह गया । श्री उपाध्याय ने पुलिस पर सवाल उठाते हुए कहा कि यदि पुलिस पहले दिन सक्रियता दिखाती तो दोनों बच्चें की जान बच जाती । घटना स्थल से पुलिस बूथ की दूरी चंद कदम पर है । उन्होंने कहा कि पाँच दिन बाद भी सरकार कोई ठोस राहत नही पहुँचा सकी । यदि सरकार चाहे तो पीड़ित परिवार को नौकरी मिल सकती है । लेकिन बीजेपी सरकार मामले में चुप्पी साधे हुए है । कांग्रेस प्रतिनिधि मंडल ने कहा कि न्याय में तेजी लाने के लिए मामले की सुनवाई फास्ट ट्रैक कोर्ट में होनी चाहिए । स्वजनों को पचास लाख रुपये की मदद सरकार अविलंब दिलाए ।

युवा पत्रकार रमेश मौर्य के निधन पर पत्रकारों ने दी भावभीनी श्रद्धांजलि

भदोही। भदोही जनपद के मान्यता प्राप्त पत्रकार रमेश मौर्य के निधन पर शनिवार को पत्रकारों ने शोकसभा का आयोजन कर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। पत्रकारों ने कहा कि कम समय में पत्रकारिता जगत में अपनी अलग पहचान बनाने वाले रमेश मौर्य के असामयिक निधन से पत्रकारिता जगत स्तब्ध है। उनकी कमी सदैव खलेगी। भदोही जनपद के वरिष्ठ पत्रकार प्रभुनाथ शुक्ल ने कहा कि रमेश मौर्य (45) के शुरूआती पत्रकारिता समय काल से उनका संबंध रहा। पत्रकारिता के क्षेत्र में अपने परिश्रम से उन्होंने उन्होंने कम समय में शिखर तक का मुकाम हासिल किया था। उनकी कमी सदैव खलेगी। इस दौरान दो मिनट का मौन रखकर गतात्मा की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की गई। वह डेंगू से पीड़ित रहे। प्रयागराज में इलाज के दौरान उनका आसामयिक निधन हो गया। श्रद्धांजलि सभा में शामिल पत्रकारों में प्रमुख रूप से मिथिलेश द्विवेदी, जलील अहमद, सुनील दुबे, सुरेन्द्र दुबे, राजमणि पांडेय, मोनू मिश्रा, सतीश मिश्रा, सुशील मिश्रा, विद्या शंकर पांडेय, भोलानाथ दुबे, प्रदीप दुबे विक्की, विपिन मिश्रा, सुरेश शुक्ला, सेवालाल यदुवंशी, राधेश्याम यादव समेत बड़ी संख्या में पत्रकार मौजूद रहे।

कमेटी ने बदलापुर से मिली लावारिश लाश का करवाया अंतिम संस्कार

प्रखर जौनपुर। शहर के हजरत भुंदरा शाह स्थित कब्रिस्तान पर लावारिस लाश इंतजामिया कमेटी जौनपुर के तत्वाधान में शवो को दफनावया जाता है,आज थाना बदलापुर से रेल्वे ट्रैक पर अज्ञात शव मिलने पर शव का अंत्य परीक्षण कराने के बाद उक्त शव को कमेटी को सौपा गया जिसको कमेटी के लोगो ने मुस्लिम समुदाय की रीति रिवाज के अनुसार सुपुर्दे खाक किया ,एस पी ग्रामीण शैलेंद्र सिंह ने बताया की विभिन्न अखबार और टीवी पर सूचना देने के बाद भी जब अज्ञात शव का कोई वारिस नही आता तो पोस्ट मार्टम के बाद शव कमेटी को सौंप दिया जाता है,अध्यक्ष साजिद अलीम ने बताया की कोविड काल से अब तक उक्त कमेटी सैकड़ों शव मुस्लिम समुदाय का दफना चुकी है।उपाध्यक्ष रियाजुल हक ने बताया की अगर प्रशासन को कोई भी लावारिस लाश मुस्लिम समुदाय की मिले तो उस शव का अंतिम संस्कार उक्त टीम करवाएगी।

21 दिसंबर से 4 जनवरी तक पल्स पोलियो की तर्ज पर डोर टू डोर खोजे जाएंगे कुष्ठ रोगी

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। कुष्ठ रोगी खोजी अभियान जो 21 दिसंबर से 4 जनवरी तक चलाया जाना है। इस अभियान में पल्स पोलियो अभियान की तर्ज पर घर-घर कुष्ठ रोगियों की खोज की जाएगी। जिसको लेकर शनिवार को मुख्य चिकित्सा अधिकारी कार्यालय के सभागार में सीएमओ डॉ देश दीपक पाल की अध्यक्षता में एक वर्कशॉप का आयोजन किया गया। जिला कुष्ठ रोग अधिकारी डॉ रामकुमार यादव ने बताया कि 21 दिसंबर से 4 जनवरी तक कुष्ठ रोगी खोजी अभियान चलाया जाना है। जो पल्स पोलियो अभियान की तरह चलाया जाएगा। अभियान के तहत घर-घर कुष्ठ रोगियों की खोज की जाएगी। उन्होंने बताया कि इस तरह का अभियान साल 2018 में विभाग के द्वारा जनपद में चलाया गया था। वहीं अब 5 साल के बाद इस अभियान को एक बार फिर से चलाया जाएगा। जिसको लेकर वर्कशॉप का आयोजन किया गया है। वर्कशॉप में शामिल लोगों को कुष्ठ रोगियों की कैसे पहचान और पहचान करने के बाद उनका किस तरह से इलाज किया जाएगा इसके बारे में विस्तृत रूप से जानकारी दी जा रही है। उन्होंने बताया कि अभी पिछले दिनों 1 सितंबर से 30 सितंबर तक कुष्ठ रोगी खोजी अभियान चलाया गया था। जिसमें कुल 42 नए मरीज मिले थे। जिन्हें एमडीटी उपचार दिया गया। साथ ही उन्होंने बताया कि पूरे जनपद में 181 कुष्ठ रोगी व आठ अन्य कुष्ठ रोगी मरीज है । जिनकी कुल संख्या 189 होती है। उन्होंने बताया कि अप्रैल 2023 से अब तक कुष्ठ रोग विभाग के द्वारा किए गए इलाज से कुल 180 कुष्ठ रोगी स्वस्थ भी हुए हैं। इस वर्कशॉप में सभी ब्लॉकों के चिकित्सा अधिकारी बीसीपीएम, एनएमए, एनएमएस ,एचईओ के साथ ही विभाग से जुड़े जयप्रकाश ,श्याम बिहारी, आरके मिश्रा, अभय कुमार, अखिलेश व अन्य मौजूद रहे।

मदरसा प्रकरण में फरार आरोपियों के घर धारा 82 के तहत न्यायालय द्वारा चस्पा की गई नोटिस

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। मदरसा प्रकरण बहादुरगंज में पुलिस की डर से फरार चल रहे सभी आरोपियों के घर नोटिस चस्पा कर मुनादी करवाकर उन्हें 30 दिन के अंदर हाज़िर होने की मोहलत मुहम्मदाबाद न्यायालय द्वारा दी गई है और अगर वह ऐसा नहीं करते हैं तो उनके विरुद्ध कुर्की की करवाई अमल में लाई जायेगी, जिसमे नगर पंचायत अध्यक्ष रेयाज अहमद अंसारी, नजीर सलामी, परवेज जमाल और तत्कालीन प्रधानाचार्य मदरसा तूल मसाकीन मौलवी जियाउल इस्लाम शामिल हैं इन सबकी मुसीबत कम होने का नाम नहीं ले रही है। और यह सभी लोग फरार चल रहे हैं और अबतक पुलिस की गिरफ्त से दूर हैं। फरार चल रहे हैं और इन सबके खिलाफ सिविल न्यायालय मुहम्मदाबाद द्वारा इसको संज्ञेय अपराध मानते हुए धारा 82 के तहत करवाही करने की नोटिस जारी किया गया है। और साथ ही साथ पुलिस द्वारा सभी आरोपियों के घर मुनादी करवाकर घरों पर नोटिस चस्पा किया गया है। नोटिस चस्पा करते समय आरोपी परवेज जमाल के घर पर उनके एक रिश्तेदार वसीम अहमद पुत्र बदरुद्दीन निवासी ग्राम अमहर थाना रसड़ा से पुलिस ने कहा कि किसी भी दशा में आप अपने संबंधी को यथाशीघ्र हाजिर करवाएं अन्यथा की स्थिति में कुर्की की करवाई अमल में लाई जायेगी। बताते चलें कि फर्जी प्रमाण पत्र के आधार पर नौकरी करने के मामले नगर पंचायत अध्यक्ष रेयाज अंसारी की पत्नी शिक्षिका निकहत परवीन जेल जा चुकी है और वह इस समय जमानत और शेष सभी आरोपी गिरफ्तारी की डर से फरार चल रहे हैं। इस संबंध में स्थानीय पुलिस चौकी प्रभारी बहादुरगंज आशुतोष शुक्ला ने बताया कि फरार चल रहे आरोपियों के खिलाफ न्यायालय द्वारा धारा 82 के तहत मुनादी करवाकर नोटिस चस्पा किया गया है। और अगर सभी आरोपी 30 दिनों के अंदर न्यायालय में हाजिर नहीं होते है तो आगे की कारवाई की जायेगी। इस अवसर पर पुलिस चौकी प्रभारी बहादुरगंज आशुतोष शुक्ला,महिला थाना कासिमाबाद प्रभारी पल्लवी सिंह सहित दर्जनों सिपाही माजूद रहे।

संक्षिप्त खबरें

सपा की बैठक में कार्यकताओं ने उठाया किसानों की खाद, पानी, बिजली की समस्या

प्रखर मिजार्पुर। लोकसभा चुनाव की तैयारी को लेकर समाजवादी पार्टी ने अपने नेताओ एवं जिला पदाधिकारियों, विधानसभा अध्यक्ष, ब्लाक अध्यक्ष की बैठक जिला कार्यालय लोहियाट्रस्ट पर बुलाकर लोकसभा चुनाव जीतने का गुरूमंत्र दिया गया। इस मौके पर किसानो की खाद, पानी, बिजली की समस्या भी कार्यकताओं ने उठाया। इस अवसर पर 6 दिसम्बर को बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर के परिनिर्वाण दिवस पार्टी कार्यालय पर मनाने का निर्णय लिया गयां। बैठक की अध्यक्षता कर रहे जिलाध्यक्ष देवी प्रसाद चौधरी ने कार्यकर्ताओ से कहा कि लोकसभा चुनाव जीतने के लिए शत प्रतिशत मतदाताओ का नाम मतदाता सूची में दर्ज कराने काम करें। लोकसभा चुनाव के लिए कार्यकर्ता अभी से जूट जाय, जिससे पार्टी भारी बहुमत से अपने प्रत्याशी को विजयी बनाया जा सके। उन्होने कहा कि किसानो को खाद, पानी, बिजली की समस्या आन पड़ी है। किसानो को खाद व बीज उपलब्ध नहीं हो पा रहा है। इस सरकार से किसान, व्यापारी, छात्र, नौजवान सभी परेशान है। ऐसी सरकार को उखाड़ फेकने के लिए सड़क पर उतरना पड़ेगा। बैठक में पूर्व विधायक जगतम्बा सिंह पटेल, राजेन्द्र सिंह पटेल, अशोक यादव, सुरेन्द्र सिंह पटेल, कीर्ति कोल, जवाहर लाल मौर्या, आदर्श यादव, स्वामी शरण दूबे, शैलेष पटेल, अशोक यादव,चन्दन पटेल,सलीम बादशाह आदि मौजूद रहें।

ट्रक रोकने पर बाइक सवार को चालक ने कुचला, महिला समेत दो घायल, चालक खलासी हिरासत में

प्रखर अहरौरा मिजार्पुर। थाना क्षेत्र के सोनपुर में बाइक सवारों को धक्का मारकर भाग रही ट्रक का पीछा करना युवकों को महंगा पड़ गया। अहरौरा थाना क्षेत्र के इमलिया चट्टी मार्ग पर शनिवार को ट्रक ने गोविंद नामक युवक को कुचल दिया। जबकि हादसे में महिला समेत दो लोग घायल हो गए। पुलिस ट्रक को कब्जे में लेकर कानूनी कार्रवाई में लगी है। चालक और खलासी को हिरासत में लिया गया है। बताया गया कि सोनपुर मार्ग पर जमुई की तरफ एक ट्रक जा रही थी। उसके आगे बाइक पर महिला और पुरुष सवार थे। ट्रक के धक्के से बाइक गिर गई और महिला घायल हो गई। हादसे के बाद चालक ट्रक लेकर भाग निकला। हादसा देख ट्रक का बाइक सवार गोविंद और राहुल ने पीछा किया। करीब दो किलोमीटर की दूरी तय करने के बाद युवकों ने अपनी बाइक ट्रक के आगे लगा दिया। एक हादसे के बाद भाग रहे चालक ने ट्रक रोकने के बजाय आगे बढ़ा दिया। ट्रक चालक गोविंद नामक युवक को रौदते हुए आगे बढ़ गया। हादसे की सूचना मिलने से अलर्ट पुलिस ने उसे इमिलिया चट्टी पर रोक लिया। हादसा देख लोगों की भीड़ लग गई । अलग - अलग स्थानों पर घायल हुए मल्लों देवी और राहुल को अस्पताल भेजा गया। पुलिस ट्रक के साथ ही मृतक के शव को कब्जे में लेकर कार्रवाई में जुटीं हैं।

भारतीय मीडिया फाउंडेशन परिवहन फोरम की मीटिंग कमल सोनकर की अध्यक्षता में सम्पन्न

प्रखर पूर्वान्चल वाराणसी। भारतीय मीडिया फाउंडेशन परिवहन फोरम वाराणसी में नई कार्यकारिणी के गठन एवं संगठन विस्तार एवं ऑटो एवं ई रिक्शा चालकों के अधिकार सम्मान सुरक्षा के सवाल पर एक निर्णायक जंग लड़ने की तैयारी में जूटा` इसी कड़ी में कैंट स्थित पिलर नंबर 72 पर मीडिया अधिकारियों एवं पदाधिकारियों की एक आवश्यक बैठक कमल सोनकर की अध्यक्षता में संपन्न हुई जिसमें जिले में संगठन विस्तार पर चर्चा हुई एवं आगामी वाराणसी जनपद में चालकों के अधिकार सम्मान सुरक्षा के सवाल पर एक निर्णायक रणनीति बनाकर संघर्ष करने के प्रमुख बिंदुओं पर चर्चा की गई` जिसमें प्रमुख रूप से भारतीय मीडिया फाउंडेशन के मीडिया सरकार एवं संस्थापक एके बिंदुसार स्वतंत्र पत्रकार एवं सामाजिक कार्यकर्ता, भारतीय मीडिया फाउंडेशन परिवहन फोरम के राष्ट्रीय अध्यक्ष जुबैर खान बागी, जिला संरक्षक अशोक पांडेय, वाराणसी जिला वरिष्ठ उपाध्यक्ष कृष्ण कुमार सिंह मकसूदन आदि लोग उपस्थित रहे।

सम्पूर्ण समाधान दिवस पर डीएम एसपी ने फरियादियों की सुनी फरियाद

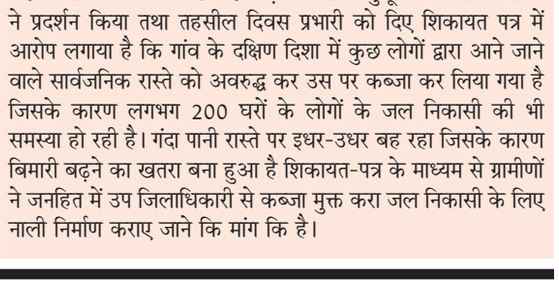

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। जन समस्याओ के त्वरित निस्तारण हेतु सम्पूर्ण समाधान दिवस तहसील जखनियॉ में जिलाधिकारी आर्यका अखौरी एवं पुलिस अधीक्षक ओमवीर सिंह की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। जिसमे 70 प्रार्थना प्राप्त हुए और मौके पर 05 का निस्तारण किया गया। जनसमस्याओं के त्वरित निस्तारण हेतु सातो तहसीलो की सूचना के अनुसार सम्पूर्ण समाधान दिवस में कुल 336 प्रार्थना प्राप्त हुए जिसमें मौके पर 29 प्रार्थना पत्रो का निस्तारण किया गया। इसी क्रम में तहसील सैदपुर में उपजिलाधिकारी की अध्यक्षता में 31 प्रार्थना पत्र प्राप्त हुए जिसमें 04 का मौके पर निस्तारण किया। तहसील जमानियॉ में उपजिलाधिकारी की अध्यक्षता में 22 प्रार्थना पत्र प्राप्त हुए जिसमें से 08 का मौके पर निस्तारण किया गया। सदर तहसील में उपजिलाधिकारी की अध्यक्षता में 58 प्रार्थना पत्र प्राप्त हुए जिसमें मौके 03 का निस्तारण किया गया। तहसील कासिमाबाद में उपजिलाधिकारी की अध्यक्षता में 49 प्रार्थना पत्र प्राप्त हुए जिसमें से 03 का मौके पर निस्तारण किया गया।

तहसील दिवस के मौके पर दर्जनों की संख्या में एकत्रित महिलाओं ने किया प्रदर्शन

प्रखर सहजनवां,गोरखपुर। सहजनवा तहसील में संपूर्ण समाधान दिवस के आयोजन के दौरान रास्ते व जल निकासी कि समस्या को लेकर दर्जनों की संख्या में एकत्रित महिलाओं ने किया प्रदर्शन उप जिलाधिकारी को दिया शिकायत पत्र। मिली जानकारी के अनुसार नगर पंचायत सहजनवां के वार्ड नंबर 3 गहासाड़ निवासी अनुसूचित बस्ती के लोगों ने प्रदर्शन किया तथा तहसील दिवस प्रभारी को दिए शिकायत पत्र में आरोप लगाया है कि गांव के दक्षिण दिशा में कुछ लोगों द्वारा आने जाने वाले सार्वजनिक रास्ते को अवरुद्ध कर उस पर कब्जा कर लिया गया है जिसके कारण लगभग 200 घरों के लोगों के जल निकासी की भी समस्या हो रही है। गंदा पानी रास्ते पर इधर-उधर बह रहा जिसके कारण बिमारी बढ़ने का खतरा बना हुआ है शिकायत-पत्र के माध्यम से ग्रामीणों ने जनहित में उप जिलाधिकारी से कब्जा मुक्त करा जल निकासी के लिए नाली निर्माण कराए जाने कि मांग कि है।

सावधानः हमलावर हो रहे छुट्टा पशु, जिम्मेदार मौन

प्रखर शाहगंज (जौनपुर)। शहर से लेकर गांव तक छुट्टा पशु किसानों व आम लोगों के लिए मुसीबत बने हुए हैं।शहर में जहां छुट्टा पशुओं की वजह से आए दिन जाम लग रहा है,वहीं ग्रामीण क्षेत्रों में छुट्टा पशु फसलों को नुकसान पहुंचा रहे हैं। प्रदेश में योगी आदित्यनाथ की सरकार बनने के बाद छुट्टा पशुओं को रखने के लिए पशु आश्रय केंद्र बनवाए गए हैं।इससे लोगों को उम्मीद थी कि विचरण करने वाले पशुओं को पकड़कर पशु आश्रय केंद्र पहुंचाया जाएगा, लेकिन वर्तमान में बड़ी संख्या में छुट्टा पशु विचरण कर रहे हैं। ग्रामीण इन्हें हटाने का प्रयास करते हैं तो पशु उन्हें मारने के लिए दौड़ा लेते हैं।वहीं,ग्रामीण क्षेत्रों में छुट्टा पशुओं के चलते किसानों को काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है।पशु फसल को नुकसान पहुंचा रहे हैं। किसानों को फसल बचाने के लिए जान हथेली पर रखकर खेतों की रखवाली करनी पड़ रही है। आखिर में लब्बोलुआब यही है कि जब भी खेतों की रखवाली या छुट्टा पशुओं को भगाने का प्रयास करें तो सुरक्षा का पूरा बन्दोबस्त स्वम करें न कि सरकार के भरोसे रहें।

सम्पूर्ण समाधान दिवस पर आये कुल 90 मामले मात्र 3 का हुआ मौके पर निस्तारण

प्रखर सहजनवां,गोरखपुर। सहजनवां तहसील में सम्पूर्ण समाधान दिवस की अध्यक्षता उपजिलाधिकारी कुंवर सचिन सिंह ने किया। इस दौरान कुल 90 मामले आए जिसमे 3 का निस्तारण मौके पर कर दिया गया। राजस्व 45, पुलिस, 18, विकास 9, समाज कल्याण 2, अन्य 16 मामले आए थे। राजस्व संबंधित मामले के निस्तारण के लिए राजस्व टीम गठित की गई है। जबकि पुलिस के मामले के निस्तारण के लिए जांच कर कारवाई करने का निर्देश दिया गया है। इस दौरान तहसीलदार राकेश कन्नौजिया,नायब तहसीलदार भान प्रताप सिंह,नायब तहसीलदार दुर्गेश चौरसिया,एसडीओ पुष्पेंद्र सिंह सहित अनेक विभाग के अधिकारी मौजूद थे।

सीवर कार्य में देरी और अनियमितता को लेकर 5 दिसंबर से शुरू होगा सत्याग्रह : शम्मी सिंह

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। सीवरेज पाइप लाइन बिछाने में हो रहे व्यापक भ्रष्टाचार और अनियमितता, गुणवत्ता की कमी तथा समय सीमा के अंदर कार्य को न करना, तथा जगह-जगह गड्ढे खोदकर छोड़ने को लेकर नगर के प्रमुख समाजसेवी विवेक कुमार सिंह शम्मी ने कचहरी स्थित पत्रकार भवन में प्रेस वार्ता किया। इस दौरान विवेक कुमार सिंह शम्मी ने कहा कि नगर में सीवर का कार्य कर रही कार्यवाही संस्था गुंडो की तरह व्यवहार कर रही है तथा उन्हें न तो सरकार का, न तो प्रशासन का, न ही आमजन का किसी का भय नहीं है। खुलेआम भ्रष्टाचार जारी है। उन्होंने कहा कि सीवर के कार्य में हो रही देरी के चलते पूरा शहर धूल के गुबार में बदल चुका है तथा लोग धूल के चलते सांस की बीमारियों से जूझ रहे हैं। सीवर की खुदाई के कारण जर्जर हुई सड़कों के चलते रोजाना दर्जनों लोग घायल होकर अस्पताल पहुंच रहे हैं। सड़कों की बदहाली और अफसरो की उदासीनता से लोगों में आक्रोश बढ़ रहा है। श्री सिंह ने बताया कि इन्हीं सब मुद्दों को लेकर आगामी 5 दिसंबर से शांतिपूर्ण सत्याग्रह किया जाएगा कहा कि जब तक सीवर की समस्या का समाधान नहीं होता है, लंका मैदान के गेट नंबर 4 के सामने आंदोलन जारी रहेगा।

दांपत्य जीवन को बनाएं दिव्य - पद्ममेश जी महाराज

प्रखर पटहेरवा, कुशीनगर। अपने दांपत्य जीवन को सुधारें क्योंकि जब तक दांपत्य जीवनही दिव्य पवित्र नहीं होगा तब तक दिव्य संतान उत्पन्न नहीं होगा। जिनका दांपत्य जीवन दिव्य होता है उन्हीं के घर महापुरुषों का जन्म होता है। जब कोई भक्त याद करता है तब प्रभु अवतार लेते हैं जिसका अंत करना कठिन होता है। ऐसे ही ध्यान से रावण को मारने के लिए प्रभु ने अवतार लिया। ये उद्गार रजवटिया में आयोजित श्री महाविष्णु महायज्ञ के चौथे दिवस श्री राम कथा की अमृतवर्षा करते हुए कथावाचक पद्ममेश जी महाराज ने कही। उन्होंने कहा कि मानव मात्र को कभी अहंकार नहीं करना चाहिए, क्योंकि यदि जल से भरे एक घड़े में हम एक-एक कर के पत्थर डालते जाते है तो धीरे-धीरे वह घड़ा कंकड़ से भर जाता है तथा जल से रिक्त हो जाता है। वैसे ही यदि हम अपने शरीर रूपी घड़े में, अंधकार रूपी कंकड़ ज्यादा डालेंगे तो हमारा शरीर शीलगुण रूपी पानी से रिक्त हो जायेगा। उन्होंने दिव्य कथा के माध्यम से संत श्री गोस्वामी तुलसीदास जी महाराज द्वारा रचित श्रीरामचरितमानस के बालकांड में वर्णित राजा दशरथ के भगवान राम सहित चारों पुत्रों के नामकरण संस्कार, बाललीलाओं, विद्यारंभ संस्कार व अहिल्या उद्धार, नारद, मनु महाराज से संबंधित प्रसंग का बड़े ही सुन्दर भाव से वर्णन किया। कथा के माध्यम से महाराज श्री ने कहा कि जीवन रुपी गाड़ी में सुख व दुख दो तरह के स्टेशन है, लेकिन एक राम नाम रुपी ऐसा जंक्शन है जहां से जीवन की गाड़ी मोड़ने पर आंनद ही आनंद की प्राप्ति होती है। जो लोग राम नाम का सहारा लेते हैं वे जगत का आधार बन जाते है। कथा के दौरान रामायण जी की संगीतमयी सुंदर चौपाइयों पर श्रद्धालु भक्ति रस में गोता लगाते हुए झूम उठे।कथा के दौरान श्रोताओं की करतल ध्वनि व श्रीराम नाम के जयकारे से पूरे पांडाल से निकल रही लोगों को आस्था से जोड़ने के साथ क्षेत्र को भक्तिमय बना रही थी। कार्यक्रम का संचालन राधेश्याम त्यागी व मीरहसन अंसारी ने किया। नन्दलाल विद्रोही, दिव्य ज्योति साउंड के संचालक पारस प्रजापति ने माल्यार्पण कर कथा का शुभारंभ किया। इस दौरान ग्राम प्रधान श्रीराम पासवान, हाकिम राव, सुरेंद्र सिंह, मुकेश गुप्ता, गोपी प्रसाद, वीरेन्द्र सिंह, वशिष्ठ सिंह, योगेंद्र सिंह आदि मौजूद रहे।

जन शिकायतों का हो समयबद्ध निस्तारण : डीएम

प्रखर शाहगंज(जौनपुर)। जिलाधिकारी अनुज कुमार झा की अध्यक्षता में सम्पूर्ण समाधान दिवस का आयोजन किया गया जिसमे 74 प्रार्थना पत्र प्राप्त हुआ जिनमें 22 का तत्काल निस्तारण कराया गया।सम्पूर्ण समाधान दिवस में ज्यादातर मामले राजस्व विभाग तथा ग्राम्य विकास विभाग व पुलिस से सम्बंधित रहे।सम्पूर्ण समाधान दिवस के समापन के उपरांत डीएम ने मातहतों को निर्देशित करते हुए कहा कि जनसामान्य की शिकायतों का गुणवत्तापूर्ण निस्तारण किया जाए इसमें किसी प्रकार की ढिलाई बर्दास्त नहीं किया जाएगा। इस दौरान पुलिस अधीक्षक अजयपाल सिंह भी पुलिस अधिकारियों तथा कर्मचारियों के पेंच कसते नजर आये। मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ जीवीएस लक्ष्मी एसडीएम शाहगंज शैलेन्द्र कुमार सीओ शुभम तोदी, नायब तहसीलदार कस्बा शैलेन्द्र कुमार,अधिशाषी अधिकारी प्रदीप गिरी सहित अन्य विभागों के अधिकारी कर्मचारी उपस्थित रहे।

साक्षी सिंह राजपूत को मिला बीएचयू राष्ट्रीय युवा संसद में प्रथम पुरस्कार

प्रखर पूर्वान्चल वाराणसी। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में दो दिन से चल रहे बी०एच०यू० राष्ट्रीय युवा संसद प्रतियोगिता में सुधाकर महिला विधि महाविद्यालय के प्रथम वर्ष की छात्रा साक्षी सिंह राजपूत को सम्माननीय उल्लेख (स्वर्ण) पुरस्कार प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया और गोल्ड मेडल और सर्टिफिकेट से सम्मानित किया गया` युवा संसद में सदन का मुद्दा शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार को ध्यान में रखते हुए योगी सरकार के छः वर्षों का पुनरावलोकन विषय पर साक्षी को बलिया बांसडीह के विधायक केतकी सिंह की भूमिका का निर्वहन करते हुए जबरदस्त समर्थन किया और कहा कि 65 मेडिकल कालेज, आयुष्मान भारत के माध्यम से मुफ्त इलाज और मुफ्त शिक्षा योजना पर अपनी बात को गंभीरता से रखा` इस अवसर पर विज्ञान संगोष्ठी में आयोजित युवा संसद में बी०एच०यू० के वाणिज्य संकाय के प्रो० एच० के० सिंह ने अध्यक्षता किया जबकि मुख्य अतिथि राजातलाब के एस०डी० एम० शैलेन्द्र कुमार मिश्रा रहे इसके पश्चात सोस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया` इस उपलब्धि पर महाविद्यालय के संस्था प्रमुख डॉ० प्रभु नारायण दूबे, समन्वयक डॉ. अशोक कुमार पाण्डेय, निदेशक श्री आशीर्वाद दूबे, सुधाकर महिला विधि महाविद्यालय के विधि संकाय के हेड डॉ० सुजीत राय, विधि प्रवक्ता डॉ० राजकुमार श्रीवास्तव, डॉ० सुनील पाण्डेय, डॉ. प्रवीण मिश्रा, डॉ० धम्म प्रिय गौतम, डॉ० लोकेश चन्द आदि सभी ने शुभकामना और आशीर्वाद दिया जबकि डॉ० राजकुमार श्रीवास्तव ने युवा संसद में पहुंचकर साक्षी सिंह राजपूत का उत्साहवर्धन किया।

कलयुग में श्रीमद् भागवत कथा ही है मोक्षदायिनी-आचार्य धरणीधर

प्रखर सन्तकबीरनगर। विकास खंड नाथनगर के अंतर्गत महुली में आयोजित श्रीमद्भागवत कथा में श्री अयोध्या धाम से आए कथा प्रवक्ता आचार्य धरणीधर जी महाराज ने कहा कि आपकी देह आत्मा का साथ नहीं दे सकती तो सांसारिक धन, संपदा जैसी अन्य त्याज्य वस्तुओं का क्या मोल है। यह सभी सर्वथा त्याज्य है। इनको त्यागेंगे तो ही शांति मिलेगी क्योंकि त्याग में ही शांति है। आदमी धन-संपदा, पद और बल से नहीं चमकता है बल्कि ईश्वर की नजर पड? पर चमकता है।व्यासपीठ से पाण्डाल में उपस्थित श्रद्धालुओं में राष्ट्र भक्ति की अलख जलाते हुए कहा कि जो व्यक्ति राष्ट्र, समाज, परिवार के उत्थान का चिंतन नहीं करता वह जिंदा पशु के समान होता है। कथा वाचन के पांचवे दिन भगवान श्रीकृष्ण की बाल लिलाओं का वृतांत सुनाया। इस गोकुल रूपी शरीर में भगवान का आगमन हो जाता है तो जीव के जीवन में आनन्द ही आनन्द जाता है। अधर्म के कारण जीवन दूषित हो जाता है और जो उस जीवन के निकट आता है उसका पतन हो जाता है। कथा में इस वक्त को समझाते हुए कालिए नाग की कथा को सुनाया और समझाया कि कालिया अधर्म

है और जीवन की यमुना में प्रवेश करते ही जीवन दूषित हो जाता है और जो व्यक्ति स्पर्श में आता है उसका पतन हो जाता है। आचार्य धरणीधर जी महाराज ने कहा जब तक जीवन में वासना का पर्दा या माया का वस्त्र पड़ा रहेगा जीव ईश्वर का दर्शन नहीं कर सकता। अतः गोपी रुपी जीव को ईश्वर का दर्शन प्राप्त हो इसलिए भगवान ने गोपियों के वस्त्र हरण की लीला की। वह वस्त्र केवल माया ही है जिसे भगवान ने उठाया है और जब माया हट जाती है तो ईश्वर मिल जाते है। गोवर्धन लीला कथा सुनाते हुए बताया कि आत्मा रुपी भगवान जब तक इस गोवर्धन रुपी शरीर को उठाए है तब तक सब कुछ ठीक है और जैसे ही भगवान इस गोवर्धन रुपी शरीर का त्याग करते है वैसे ही यह शरीर मृत हो जाता है। इस अवसर पर परशुराम मिश्र,राम चन्द्र मिश्र,हरिप्रसाद द्विवेदी,अविनाश मिश्र,स्कंद मिश्र,नीरज मिश्र, वाचस्पति दुबे,अनंत दुबे,राजाराम दुबे, कृष्ण देव दुबे,जनार्दन दुबे,आषीश दुबे,बालमुकुंद दुबे, नवीन मिश्र समेत तमाम लोग मौजूद रहे।

17 दिन तक टनल में फंसे मजदूर अखिलेश के सुरक्षित घर पहुंचने पर भारतीय किसान यूनियन ने किया स्वागत

प्रखर मिजार्पुर। भारतीय किसान यूनियन के द्वारा ग्राम घरवासपुर अदलहाट निवासी अखिलेश सिंह का घर वापसी पर भव्य स्वागत स्मृति चिन्ह, अंग वस्त्रम और माल्यार्पण कर किया गया , व उनके पिता और दादा से मिलकर कुशलक्षेम जाना और बधाई दी। अखिलेश सिंह उत्तरकाशी के सिलक्यारा सुरंग में 41 श्रमिको के साथ फंसे थे जो राज्य सरकार और केंद्र सरकार के अथक प्रयास के बदौलत 17 दिन बाद सुरक्षित बाहर निकाला गया, उन्होंने बताया कि सरकार की बदौलत हम लोग सुरक्षित वापस निकल पाए हैं हम लोग को टनल के अंदर सारी सुविधाएं खाने-पीने का सामान पाइप के माध्यम से दिया जा रहा था हम लोग अपना समय काटने के लिए क्रिकेट और लूडो खेला करते थे हम लोगो को अंदर कोई भी दिक्कत नहीं होता था हम सभी लोग सुरक्षित बाहर निकले हैं इसके लिए सरकार और कम्पनी को धन्यवाद देते हैं। स्वागत करने वालों में भारतीय किसान यूनियन के प्रदेश उपाध्यक्ष सिद्धनाथ सिंह, प्रदेश महासचिव प्रहलाद सिंह, मंडल अध्यक्ष अनिल सिंह, जिला अध्यक्ष कंचन सिंह फौजी ,कोषाध्यक्ष स्वामी दयाल सिंह ,पूर्वांचल सदस्य राम सिंगार सिंह, तहसील अध्यक्ष चुनार रामबृक्ष सिंह, रमेशसिंह ,बेनी प्रसाद सिंह, ओम प्रकाश सिंह ,विकास सिंह भोलानाथ गिरी ,रामसूरत सिंह, उदय प्रताप सिंह व अन्य।

यातायात प्रभारी परमहंस ने दिखाई तत्परता और दिलेरी, बैटरी चोर को पकड़ कर किया कोतवाली पुलिस के हवाले

प्रखर संतकबीरनगर। आज दिन शनिवार को बाईपास चौराहा अपने नियमित दिनचर्या में व्यस्त था। सभी लोग अपने कार्यों को अंजाम देने के लिए अपने गंतव्य स्थान को प्रस्थान कर रहे थे। वहीं बाईपास चौराहे पर आवागमन को सुचारू रूप से संचालित करने के लिए यातायात प्रभारी परमहंस भी अपने टीम के साथ कार्यों को अंजाम दे रहे थे। तभी कहीं से सूचना मिली की एक बैटरी चोर चोरी की बैटरी लेकर घूम रहा है जिसे बेचने के फिराक में है।फिर क्या था सूचना मिलते ही यातायात प्रभारी परमहंस हरकत में आए और बैटरी चोर को पकड़ने के लिए पुलिसिया जल बिछाया। आखिरकार काफी मेहनत के बाद यातायात प्रभारी परमहंस को सफलता मिल ही गई। चोरी की बैटरी के साथ चोर को रंगे हाथ पकड़ लिया। तथा कोतवाली पुलिस को इसकी सूचना दी और बैटरी चोर को कोतवाली पुलिस के हवाले कर दिया । अब बैटरी चोर को लेकर कोतवाली पुलिस अग्रिम विधि कार्रवाई में जुटी हुई है। बाईपास चौराहे पर स्थानीय लोगों ने बताया की कई गाड़ियों की बैटरियां चोरी हो चुकी है ,अगर कोतवाली पुलिस इस बैटरी चोर से सख्ती से पेश आए तो हो सकता है कोई बड़ा खुलासा।

कनगराज ने लॉन्च किया अपना प्रोडक्शन हाउस

चेन्नई। तमिल फिल्म इंडस्ट्री के मशहूर निर्देशक लोकेश कनगराज को उनकी सुपरहिट फिल्मों के लिए जाना जाता है। वे अब तक लियो, मास्टर, विक्रम और कैथी जैसी ब्लॉकबस्टर फिल्में बना चुके हैं। फिल्मों को डायरेक्ट करने के बाद अब वे बतौर निर्माता अपनी शुरुआत करने जा रहे हैं। हाल ही में उन्होंने अपना खुद का प्रोडक्शन हाउस शुरू करने की घोषणा की है। उन्होंने अपने प्रोडक्शन हाउस का नाम जी-स्क्वाड रखा है। ए दी है। नोट जारी करते हुए उन्होंने लिखा, ₹नमस्कार, पांच फिल्मों का निर्देशन करने के बाद मुझे अपने प्रोडक्शन वेंचर जी स्क्वाड के लॉन्च की घोषणा करते हुए खुशी हो रही है।

लाइफ Style

अनन्या

सात समंदर पार

'स्टूडेंट ऑफ द ईयर 2' के साथ बॉलीवुड में कदम रखने वाली एक्ट्रेस अनन्या पांडे अपनी फिल्मों के साथ-साथ पर्सनल लाइफ की वजह से भी चर्चा में रहती हैं। हालांकि अनन्या अपनी प्रोफेशनल लाइफ पर भी ध्यान दे रही हैं। इस बीच अब खबर आ रही है कि अनन्या पांडे जेद्दा में होने वाले रेड सी इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल में भारत का प्रतिनिधित्व करेंगी।

एजेंसी ▶▶| मुंबई

अनन्या पांडे इन दिनों अपनी फिल्म 'खो गए हम कहां' की वजह से सुर्खियों में बनी हुई हैं। हाल ही में एलान किया गया था कि अनन्या, सिद्धांत चतुर्वेदी और आदर्श गौरव की यह फिल्म सिनेमाघरों के बजाय ओटीटी पर दस्तक देगी। फिल्म की चर्चा अभी खत्म भी नहीं हुई थी कि अनन्या एक खबर के चलते सुर्खियों में आ गई हैं। दरअसल, खबर है कि बॉलीवुड का उभरती सितारा माने जाने वाली अनन्या पांडे जेद्दा में मशहूर 'रेड सी इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल' में भारत का प्रतिनिधित्व करेंगी। यह फेस्टिवल सिनेमा में विविधता को मनाता है।

अनन्या पांडे सिर्फ रेड सी फिल्म फेस्टिवल के अलावा वैनिटी फेयर के वुमेन इन सिनेमा फोरम में भी भाग लेंगी। जेद्दा में आयोजित किए जा रहे रेड सी फिल्म फेस्टिवल में यह सम्मान मिलने पर आभार व्यक्त करते हुए अभिनेत्री ने कहा, 'रेड सी इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल जैसे प्रतिष्ठित उत्सव का हिस्सा बनना सम्मान की बात है। इस मंच पर भारत का प्रतिनिधित्व करना मेरे लिए गर्व का क्षण है।' अनन्या पांडे का फिल्म फेस्टिवल में भाग लेना निश्चित रूप से भारतीय सिनेमा के बढ़ते वैश्विक प्रभाव और इंडस्ट्री के भीतर की प्रतिभा को उजागर करेगी। यह अनन्या पांडे के साथ ही देश के लिए भी गौरव की बात है।

हॉलीवुड मसाला

'एक्वामैन 2' का नया ट्रेलर रिलीज

वाशिंगटन। इस साल की हॉलीवुड की सबसे बहुप्रतिक्षित फिल्मों में से एक 'एक्वामैन एंड द लॉस्ट किंगडम' की रिलीज का दर्शक बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। जैसे-जैसे फिल्म की रिलीज डेट नजदीक आती जा रही है, वैसे-वैसे दर्शकों का उत्साह और बढ़ता जा रहा है। पहले ट्रेलर के रिलीज के बाद अब मेकर्स ने 'एक्वामैन 2' का नया ट्रेलर जारी कर दिया है। 22 दिसंबर, 2023 को सीक्वल की रिलीज से पहले जारी किए इस ट्रेलर में आर्थर करी की यात्रा और उनके बेटे की कहानी की झलक फैंस के सामने पेश करता है।

जॉर्ज मिलर की फ्यूरियोसा का दमदार ट्रेलर हुआ रिलीज

लॉस एंजेलिस। फिल्म निर्देशक जॉर्ज मिलर की साल 2015 में आई फिल्म 'मैड मैक्सः फ्यूरी रोड' बॉक्स ऑफिस पर अच्छा कलेक्शन किया था। दर्शकों द्वारा इस फिल्म को सकारात्मक प्रतिक्रिया मिली थी। वहीं, अब मेकर्स लगभग आठ साल के बाद फिल्म के प्रीक्वल के साथ वापस आ गए है। फिल्म के निर्माताओं ने इस फिल्म का बहुप्रतीक्षित ट्रेलर जारी कर दिया है। अभिनेत्री अन्या टेलर-जॉय 'फ्यूरियोसा' के मुख्य किरदार में नजर आएंगी। ट्रेलर की शुरुआत गोलियों की गूंज के साथ होती है और बैकग्राउंड में एक महिला की आवाज आती है। महिला कहती है, 'आपको जो भी करना है, चाहे इसमें कितना भी समय लगे, मुझसे वादा करें कि आप अपने घर का रास्ता ढूंढ लेंगे।' फिर फ्यूरियोसा उर्फ आन्या को स्क्रीन पर दिखाया जाता है, जो रेगिस्तान में खोई हुई दिखाई देती है।

बॉलीवुड की चकाचौंध भरी दुनिया को कहेंगी अलविदा

मुंबई। बॉलीवुड से लेकर साउथ तक धमाल मचाने वाली अभिनेत्री इलियाना डिक्रूज इन दिनों कैमरे से दूर मदरहुड एंजॉय कर रही हैं। हालांकि, इलियाना सोशल मीडिया पर काफी एक्टिव हैं। वह अक्सर फैंस के बीच अपनी ग्लैमरस और बोल्ड तस्वीरों के साथ ही बेटे की फोटोज भी शेयर करती रहती हैं, जिस पर फैंस भी प्यार लुटाने में पीछे नहीं रहते हैं। लेकिन इसके बाद भी इलियाना के फैंस उनके फिल्मों में वापसी की इंतजार कर रहे हैं और अक्सर अभिनेत्री से सवाल भी करते हैं। फिल्मों में वापसी पर चुप्पी साधे बैठी इलियाना डिक्रूज के फैंस के लिए हमारे पास एक ऐसी खबर है, जो उनका दिल तोड़ सकती है। दरअसल, कुछ रिपोर्ट्स में दावा किया जा रहा है कि इलियाना चकाचौंध भरी दुनिया को अलविदा कहने वाली हैं।

बदलाव तो स्वाभाविक है 'डॉन 3' में

मुंबई। फरहान अख्तर की हिट फ्रेंचाइजी और 'डॉन' 3 में नए डॉन के रूप में रणवीर सिंह दर्शकों का मनोरंजन करने के लिए पूरी तरह तैयार हैं। सोशल मीडिया पर नए डॉन के रूप में उनका फैंस से परिचय करवाने के लिए एक वीडियो जारी हुआ था, जिसमें डॉन के रूप में रणवीर की झलक मिली थी। हालांकि, इसके बाद सोशल मीडिया पर आलोचना की और फ्रेंचाइजी में शाहरुख खान की जगह लेने के लिए उन्हें ट्रोल किया। अब अभिनेता ने इस पर खुलकर बात की है और इसे स्वाभाविक बताया है। रणवीर सिंह हाल ही में रेड सी फिल्म फेस्टिवल में शामिल हुए। अभिनेता ने नए डॉन बनने के बारे में बात की और कहा, ₹मैं डॉन को अपना बनाने और उसे अपनी स्पिन, अपनी व्याख्या देने की उम्मीद कर रहा हूं।

टीवी मसाला

'तारक मेहता का उल्टा चश्मा' में वापसी करने के वाली हैं दिशा वकानी?

मुंबई। टीवी की दुनिया के दर्शकों का पसंदीदा कॉमेडी शो 'तारक मेहता का उल्टा चश्मा' बीते कई वर्षों से छोटे पर्दे पर प्रसारित हो रहा है। 'तारक मेहता का उल्टा चश्मा' की लोकप्रियता के पीछे एक बड़ा कारण इसके कलाकार भी हैं। घर-घर में पहचान बनाने के बाद भी कई कलाकारों ने अपने-अपने कारणों से शो को अलविदा कह दिया है। इनमें शैलेश लोढा से लेकर जेनिफर मिस्त्री बंसीवाल तक शामिल हैं। इतने कलाकारों के अलविदा कहने के बाद भी दर्शक जिसकी वापसी का इंतजार करते हैं वह सभी की पसंदीदा दया बेन यानी दिशा वकानी हैं। एक बार फिर कुछ ऐसा हुआ है जिससे दिशा वकानी की वापसी की अटकलें तेज हो गई हैं। टीवी के सबसे लोकप्रिय सिटकॉम में से 'एक तारक मेहता का उल्टा चश्मा' काफी समय से सुर्खियों में बना हुआ है। शो छोड़ने के बाद इसके मेकर्स पर लगातार कई कलाकारों ने तरह-तरह के आरोप लगाए। जेनिफर मिस्त्री बंसीवाल ने तो शो के निर्माता असित मोदी पर यौन शोषण जैसे गंभीर आरोप लगाए। दोनों में पिछले काफी समय से वार-पलटवार का दौर चल रहा है। लेकिन इसके अलावा जिस एक चीज के लिए यह शो सुर्खियों में रहता है, वह इसकी मुख्य अभिनेत्री दिशा वकानी की वापसी है।

वीकेंड के वार में करण जौहर ने मन्नारा की दोस्ती पर उठाए सवाल

मुंबई। सलमान खान का सबसे चर्चित और कंट्रोवर्शियल शो 'बिग बॉस' हमेशा ही दर्शकों का मनोरंजन करता है। इस समय टीवी पर प्रसारित होने वाले शो 'बिग बॉस 17' का भी दर्शक खूब आनंद ले रहे हैं और अपने पसंदीदा कंटेस्टेंट को सपोर्ट कर रहे हैं। इस वीकेंड के वार में नया मोड़ आने वाला है। हर हफ्ते सलमान खान शो में कंटेस्टेंट्स को रियलिटी चेक देने आते हैं, लेकिन इस बार करण जौहर शो को होस्ट करते नजर आएंगे। शो का नया प्रोमो सामने आया है, जिसमें करण जौहर घर के एक कंटेस्टेंट की दोस्ती को पाखंड बताते हुए दिखाई दे रहे हैं। सलमान खान के शो 'बिग बॉस 17' का एक नया प्रोमो वीडियो सामने आया है, जिसमें करण ने मन्नारा की दोस्ती को पाखंड करार दिया है। इस वीडियो में आगे दिखाया गया है कि करण जौहर मुनव्वर फारुकी के प्रति उनके व्यवहार के लिए अंकिता लोखंडे और मन्नारा चोपड़ा को बुलाते नजर आते हैं।

जूनियर महमूद की सेहत बिगड़ी जॉनी लीवर पहुंचे मिलने

मुंबई। अभिनेता जूनियर महमूद के बारे में आज दिन भर खबर यह चलती रही है कि उनकी हालत काफी नाजुक है और डॉक्टरों ने उनका इलाज करने से मना कर दिया। व्हाट्सऐप पर घूम रहे एक मेसेज में बताया जा रहा है कि अब केवल प्रार्थना और चमत्कार ही उन्हें बचा सकता है। लेकिन इस बारे में हकीकत कुछ और है। मूल नाम नईम सैय्यद और दर्शकों के बीच जूनियर महमूद के नाम से जाने जाने वाले इस कलाकार के उनके पेट में ना तो ट्यूमर है और उनकी हालत इतनी भी नाजुक नहीं है। जूनियर महमूद के मुंह बोले भाई सलाम काजी ने बताया, 'लीवर में कैंसर बाकी बात गलत है। जूनियर महमूद के पेट में ट्यूमर हुआ है। उनका ब्लड प्रेशर और शुगर लेवल काफी बढ़ गया था। जिसकी वजह से उनका 20 किलो वजन कम हो गया है। लेकिन वह पहले से स्वस्थ अनुभव कर रहे हैं और मिलने आने वालों से ठीक से बात कर रहे हैं। जूनियर महमूद के बीमारी की खबर के बारे में जैसे ही अभिनेता जॉनी लीवर को पता चला वह आज जूनियर महमूद से मिलने गए। और, जूनियर महमूद ने जॉनी लीवर से बहुत ही हंसी खुशी से बात की। जूनियर महमूद ने कहा, 'मैंने अपने जीवन में 350 फिल्मों में काम किया है। मालिक ने मुझे उम्मीद से ज्यादा दिया। बस मेरी यही ख्वाहिश है कि जब इस दुनिया से विदा लूं, तो लोग मेरे काम की वजह से जाने।' जूनियर की यह बात सुनकर जॉनी लीवर भावुक हो गए और उन्होंने जूनियर महमूद के जल्दी स्वस्थ होने की कामना की। जूनियर महमूद हिन्दी फिल्मों के एक अभिनेता हैं। इनका असली नाम है।

विदेशी फिल्मों ने भारतीय बॉक्स ऑफिस पर की जमकर कमाई

मुंबई। भारत में विदेशी फिल्मों को काफी पसंद किया जाता है। पिछले कुछ समय में हॉलीवुड फिल्मों का बाजार देश में तेजी से बढ़ा है। अधिक से अधिक ये फिल्में भारतीय सिनेमाघरों में आ रही हैं और दर्शकों का मनोरंजन कर रही हैं। अब तक नौ हॉलीवुड फिल्में भारत में 100 करोड़ का आंकड़ा पार कर चुकी हैं और आने वाले वर्षों में यह संख्या बढ़ती ही जाने वाली है। ऐसे में आज हम आपको उन फिल्मों के बारे में बताने जा रहे हैं, जिन्होंने भारत में अब तक रिकॉर्डतोड़ कमाई की है।

अवतार 2

अवतार 2 सबसे ज्यादा कमाई करने वाली सूची में शीर्ष पर है। इसे दिसंबर 2022 के मध्य में रिलीज किया गया था। इसने पहले वीकएंड पर 129 करोड़ से ज्यादा की कमाई कर ली थी। फिल्म ने देश में 391.4 करोड़ का कलेक्शन कर धमाल मचा दिया था। हालांकि, यह 400 करोड़ क्लब में पहुंचने में नाकाम रही थी।

स्पाइडर नो वे होम

स्पाइडरमैन फिल्म सीरीज में मार्वल की तीसरी फिल्म ₹स्पाइडर-मैनः नो वे होम₹ ने अपने प्रदर्शन से लोगों को चौंका दिया था। भारत में इस फिल्म को काफी ज्यादा पसंद किया गया था। टिकट खिड़की पर फिल्म ने 218.41 करोड़ की शानदार कमाई की थी। यह देश में चौथी सबसे ज्यादा कमाई करने वाली विदेशी फिल्म है।

एवेंजर्स एंडगेम

हॉलीवुड सुपरहीरो फिल्म एवेंजर्सः एंडगेम भारत में दूसरी सबसे ज्यादा कमाई करने वाली हॉलीवुड फिल्म है। दरअसल, अवतार 2 के आने से पहले यह भारत में 300 करोड़ का आंकड़ा पार करने वाली यह पहली हॉलीवुड फिल्म थी। रिलीज के समय फिल्म को लेकर लोगों में जबर्दस्त उत्साह देखने को मिला था।

एवेंजर्सः इन्फिनिटी वॉर

इस लिस्ट में तीसरे नंबर पर एवेंजर्सः इन्फिनिटी वॉर है। यह फिल्म 27 अप्रैल 2019 को रिलीज हुई थी। इसका लाइफटाइम कलेक्शन 227.43 करोड़ था। बता दें कि एवेंजर्स फ्रेंचाइजी फिल्मों की देश में काफी ज्यादा लोकप्रियता है। भारत में इस फिल्म के सुपरहीरोज को खूब पसंद किया जाता है।

दर्शकों के लिए सारी फिल्में एक ही प्लेटफार्म पर होने से बढ़ी है व्यूवरशिप

नए दौर की जासूसी फिल्में भी देतीं हैं भरपूर रोमांच, ओटीटी में उपलब्ध

एजेंसी ▶▶| मुंबई

दर्शक सिनेमाघरों में जाकर 'टाइगर', 'कबीर' और 'पठान' को भरपूर प्यार देते हैं, लेकिन कुछ ऐसे होते हैं जो इन फिल्मों का आनंद घर पर बैठकर लेना चाहते हैं और इनकी ओटीटी रिलीज का इंतजार करते हैं। ऐसे में 'टाइगर 3' की ओटीटी रिलीज की घोषणा से पहले आज हम आपको यह बताने जा रहे हैं कि आखिर स्पाई यूनिवर्स की सभी फिल्में किस ओटीटी प्लेटफॉर्म पर मौजूद हैं।

यशराज फिल्म्स का स्पाई यूनिवर्स दिन-ब-दिन बढ़ता जा रहा है। वाईआरएफ दर्शकों के बीच एक से बढ़कर एक जासूसी कहानियां लेकर आ रहा है, जिसमें सिनेप्रेमियों को एक्शन और रोमांच का डबल डोज देखने को मिलता है। ऐसे में फिल्मों के एलान के साथ ही सभी दर्शक अपनी कुर्सी की पेटी बांध लेते हैं और धमाकेदार एक्शन पैक्ड फिल्मों का इंतजार करते हैं। जब ये फिल्म उनके सामने रिलीज की जाती हैं, तब वे सभी इन्हें खूब प्यार देते हैं। 'एक था टाइगर' से शुरू हुआ यह सफर 'टाइगर 3' तक आ पहुंचा है। दर्शक सिनेमाघरों में जाकर 'टाइगर', 'कबीर' और 'पठान' को भरपूर प्यार देते हैं, लेकिन कुछ ऐसे होते हैं जो इन फिल्मों का आनंद घर पर बैठकर लेना चाहते हैं और इनकी ओटीटी रिलीज का इंतजार करते हैं। ऐसे में 'टाइगर 3' की ओटीटी रिलीज की घोषणा से पहले आज हम आपको यह बताने जा रहे हैं कि आखिर स्पाई यूनिवर्स की सभी फिल्में किस ओटीटी प्लेटफॉर्म पर मौजूद हैं।

एक था टाइगर

यशराज फिल्म्स के स्पाई यूनिवर्स की शुरुआत साल 2012 में रिलीज हुई फिल्म 'एक था टाइगर' हुई थी। फिल्म में सलमान खान और कटरीना कैफ की जोड़ी नजर आई थी, जिसने सभी का दिल जीत लिया था। इस एक ही फिल्म में सलमान खान के कई रूप देखने को मिले थे। वह कभी जासूस, कभी देशभक्त, कभी प्रेमी तो कभी एक फाइटर बनकर सभी का दिल जीतने के लिए आए थे। इस फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर तहलका मचा दिया था। 'एक था टाइगर' ओटीटी प्लेटफॉर्म अमेजन प्राइम वीडियो पर स्ट्रीमिंग के लिए उपलब्ध है।

टाइगर जिंदा है

साल 2012 में 'एक था टाइगर' के साथ बॉक्स ऑफिस पर धमाल मचाने के बाद मेकर्स ने इस फिल्म का दूसरा पार्ट बनाने का फैसला किया। फैसला हुआ और जो फिल्म हमारे सामने आई वह 'टाइगर जिंदा है' थी। साल 2017 में रिलीज हुई 'टाइगर जिंदा है' की कहानी और सलमान-कटरीना की जोड़ी ने दर्शकों का दिल फिर खुश कर दिया और फिर एक बार पर्दे पर छा गए। 'एक था टाइगर' की तरह ही 'टाइगर जिंदा है' भी कहीं भी और कभी भी अमेजन प्राइम वीडियो पर देखी जा सकती है।

वॉर

दो जबर्दस्त हिट फिल्में देने के बाद स्पाई यूनिवर्स अपना सफर आगे की ओर बढ़ा रहा था। 'टाइगर जिंदा है' के बाद साल 2019 में फिल्म आई 'वॉर', जो स्पाई यूनिवर्स की तीसरी फिल्म थी। सिद्धार्थ आनंद के निर्देशन में बनी इस फिल्म में ऋतिक रोशन और टाइगर श्रॉफ ने मुख्य भूमिका निभाई थी। दोनों के बीच हुआ भिड़ंत ने बॉक्स ऑफिस को हिलाकर रख दिया था। फिल्म को अमेजन प्राइम वीडियो पर स्ट्रीम किया जा सकता है।

पठान

इस साल की शुरुआत में वाईआरएफ स्पाई यूनिवर्स की फिल्म 'पठान' से पूरे चार साल बाद पर्दे पर वापसी करने वाले शाहरुख खान ने खूब धमाल मचाया था। इस फिल्म को दुनिया भर के दर्शकों से भरपूर प्यार मिला था। आलम यह था कि 'पठान' ने बॉक्स ऑफिस पर 1000 करोड़ रुपये का आंकड़ा छू लिया था। शाहरुख खान के अलावा 'पठान' में दीपिका पादुकोण और जॉन अब्राहम जैसे कलाकार मुख्य भूमिका में थे।

खबर संक्षेप

महिंद्रा की कुल थोक बिक्री में 21 प्रतिशत का इजाफा

नई दिल्ली। महिंद्रा एंड महिंद्रा लिमिटेड की नवंबर में कुल थोक बिक्री सालाना आधार पर 21 प्रतिशत बढ़कर 70,576 इकाई रही। नवंबर 2022 में 58,303 इकाइयों की आपूर्ति की थी। एमएंडएम के अनुसार, मोटर वाहन निर्माता ने पिछले महीने यूटिलिटी वाहनों की 39,981 इकाइयों की आपूर्ति की।

बजाज ऑटो की बिक्री में 31 फीसदी का उछाल

नई दिल्ली। बजाज ऑटो की नवंबर में कुल बिक्री सालाना आधार पर 31 प्रतिशत बढ़कर 4,03,003 इकाई रही। कंपनी ने नवंबर 2022 में 3,06,719 इकाइयों की बिक्री की थी। पुणे स्थित बजाज ऑटो लिमिटेड की ओर से जारी बयान के अनुसार, पिछले महीने कुल घरेलू बिक्री (दोपहिया व वाणिज्यिक वाहन) 69 प्रतिशत बढ़कर 2,57,744 इकाई हो गई।

आरबीआई व बैंक ऑफ इंग्लैंड में समझौता

मुंबई। भारतीय रिजर्व बैंक और बैंक ऑफ इंग्लैंड ने क्लियरिंग कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड से संबंधित सहयोग और सूचनाओं के आदान-प्रदान के लिए एक प्रारंभिक समझौते पर शुक्रवार को हस्ताक्षर किए। ब्रिटेन की वित्तीय स्थिरता कायम रखते हुए आरबीआई की नियामक व पर्यवेक्षी गतिविधियों पर निर्भरता रखने के लिए बैंक ऑफ इंग्लैंड के लिए एक रूपरेखा स्थापित करता है।

सरकार ने 43,000 से अधिक एमएसएमई दावें निपटाए

नई दिल्ली। सरकार ने विवाद समाधान योजना 'विवाद से विश्वास-1' के तहत एमएसएमई के 700 करोड़ रुपये के 43,904 'रिफंड' दावों का निपटान किया है। इस योजना के तहत सूक्ष्म, एमएसएमई कोविड-19 महामारी के दौरान काम समय पर पूरा नहीं होने के चलते सरकारी विभागों और सार्वजनिक क्षेत्र की संस्थाओं द्वारा जब्त की गई।

फ्लेयर राइटिंग का निर्गम 65 प्रतिशत बढ़कर सूचीबद्ध

नई दिल्ली। कलम बनाने वाली कंपनी फ्लेयर राइटिंग इंडस्ट्री के शेयर ने शुक्रवार को शानदार शुरुआत की और 304 रुपये के निर्गम मूल्य के मुकाबले 65 प्रतिशत से अधिक चढ़कर सूचीबद्ध हुए। बीएसई पर शेयर ने 65.45 प्रतिशत की छलांग लगाते हुए 503 रुपये पर अपनी शुरुआत की। फिर यह 69 प्रतिशत चढ़कर 514 रुपये पर पहुंच गए।

सोना 100 और चांदी 500 रुपए तेज

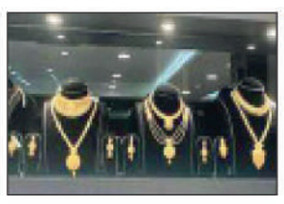

नई दिल्ली। वैश्विक बाजारों में बहुमूल्य धातुओं की कीमतों में मजबूती के रुख के बीच राष्ट्रीय राजधानी के सराफा बाजार में शुक्रवार को सोने की कीमत 100 रुपये की तेजी के साथ 63,300 रुपये प्रति 10 ग्राम हो गयी। एचडीएफसी सिक्योरिटीज ने यह जानकारी दी। पिछले कारोबारी सत्र के अंत में सोने की कीमत 63,200 रुपये प्रति 10 ग्राम रही थी। चांदी की कीमत भी 500 रुपये बढ़कर 79,700 रुपये प्रति किलोग्राम हो गई।

विश्व की शीर्ष-3 सीमेंट कंपनियों में शामिल होगी अल्ट्राटेक, कद बढ़ाएगी केसोराम

एजेंसी ▶▶ नई दिल्ली

अल्ट्राटेक सीमेंट लिमिटेड ने केसोराम इंडस्ट्रीज लिमिटेड के सीमेंट बिजनेस को खरीदने का एलान किया है। अल्ट्राटेक इस सौदे पर 7600 करोड़ रुपए खर्च करेगी। यह सौदा लगभग एक साल में पूरा हो जाएगा। इस फैसले से अल्ट्राटेक की सीमेंट उत्पादन क्षमता में जबरदस्त इजाफा होगा। डील के तहत केसोराम के 52 शेयर के बदले अल्ट्राटेक का एक शेयर मिलेगा।

■ अल्ट्राटेक सीमेंट लिमिटेड इस सौदे पर 7600 करोड़ रुपए खर्च करेगी

शेयर मार्केट ने भी इस डील की घोषणा को हाथों-हाथ लिया है। शुक्रवार को अल्ट्राटेक का शेयर 9040 रुपए तक पहुंच गया। साथ ही केसोराम इंडस्ट्रीज के शेयर भी 146 रुपए की ऊंचाई पर चल रहे हैं। इस सौदे से अल्ट्राटेक न केवल दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा सीमेंट प्रोड्यूसर बन जाएगा, बल्कि उसे अदाणी समूह की चुनौती से निपटने में भी मदद मिलेगी।

अल्ट्राटेक सीमेंट ने केसोराम इंडस्ट्रीज के सीमेंट बिजनेस को खरीदने का किया एलान

केसोराम इंडस्ट्रीज को मिलेंगे 5379 करोड़ रुपए

इस डील में केसोराम इंडस्ट्रीज को 5379 करोड़ रुपए मिलेंगे, जबकि 2221 करोड़ रुपए का कर्ज चुकाया जाएगा। अल्ट्राटेक को केसोराम के कर्नाटक और तेलंगाना में स्थित दो प्लांट मिल जाएंगे। इससे कंपनी को सीमेंट उत्पादन का 20 करोड़ टन प्रति वर्ष का लक्ष्य हासिल करने में मदद मिलेगी। केसोराम इंडस्ट्रीज ने बताया कि सिग्नेट इंडस्ट्रीज से डीमर्जर का प्रस्ताव वापस लेकर अल्ट्राटेक के साथ सौदा करने का फैसला किया गया है। शेयरों की अदला-बदली से हमारे सीमेंट कारोबार का मर्जर होगा। सीमेंट बिजनेस को बेचने के बाद केसोराम इंडस्ट्रीज रेयान, ट्रांसपेरेंट पेपर और केमिकल बिजनेस पर अधिक फोकस कर पाएगी।

13 हजार करोड़ रुपए का निवेश करेगी अल्ट्राटेक

अल्ट्राटेक सीमेंट ने हाल ही में क्षमता को 21.9 एमटीपीए तक बढ़ाने के लिए 13 हजार करोड़ रुपए का निवेश करने का एलान किया था। आदित्य बिड़ला ग्रुप के अध्यक्ष कुमार मंगलम बिड़ला ने कहा था कि कार्बन उत्सर्जन कम करने के मिशन के लिए थर्मल पावर क्षमता में निवेश नहीं किया जाएगा। कंपनी साल 2027 के अंत तक 60 फीसदी से ज्यादा ग्रीन एनर्जी का इस्तेमाल करेगी। अल्ट्राटेक सीमेंट आदित्य बिड़ला ग्रुप की कंपनी है।

गौतम अदाणी से मिल रही चुनौती

पिछले कुछ समय से गौतम अदाणी अपने सीमेंट बिजनेस को बढ़ा रहे हैं। कुछ समय पहले ही उन्होंने अंबुजा सीमेंट और एसीसी को खरीदा था। इसलिए कुमार मंगलम बिड़ला की अल्ट्राटेक सीमेंट ने गौतम अदाणी से मुकाबले के लिए केसोराम सीमेंट को खरीदने का फैसला किया है। अल्ट्राटेक सीमेंट के बाद अदाणी समूह घरेलू सीमेंट इंडस्ट्री में दूसरे नंबर पर है।

लगातार नौवी बार कलेक्शन डेढ़ लाख करोड़ रुपए से ऊपर

जीएसटी कलेक्शन में जोरदार उछाल, नवंबर 2023 में 1.68 लाख करोड़ की हुई वसूली

एजेंसी ▶▶ नई दिल्ली

दिवाली, धनतरेस, छठ और शादियों के सीजन के चलते नवंबर महीने में जीएसटी कलेक्शन में शानदार उछाल देखने को मिला है। नवंबर 2024 में जीएसटी कलेक्शन में बीते साल के समान महीने के मुकाबले 15 फीसदी के उछाल के साथ 1.68 लाख करोड़ रुपए रहा है। हालांकि अक्टूबर 2023 के मुकाबले नवंबर में जीएसटी कलेक्शन में कमी आई है। अक्टूबर महीने में जीएसटी कलेक्शन 1.72 लाख करोड़ रुपए रहा था।

लगातार 9वीं बार ऐसा हुआ है कि रेवेन्यू कलेक्शन 1.5 लाख करोड़ से ऊपर रहा है। हालांकि अब तक सबसे ज्यादा जीएसटी कलेक्शन अप्रैल 2023 में हुआ था, जब ये आंकड़ा 1.87 लाख करोड़ रुपए के पार पहुंच गया था। इसके अलावा लगातार 21 महीने से देश का जीएसटी कलेक्शन 1.4 लाख करोड़ रुपए से ऊपर बना हुआ है।

अक्टूबर 2023 के मुकाबले कलेक्शन में गिरावट

अब तक सबसे ज्यादा जीएसटी कलेक्शन अप्रैल 2023 में हुआ

लगातार 21 महीने से देश का जीएसटी कलेक्शन 1.4 लाख करोड़ के ऊपर

सीजीएसटी 30420 करोड़ रुपए

वित्त मंत्रालय ने कहा- नवंबर 2023 में जीएसटी कलेक्शन 1,67,929 करोड़ रुपए रहा है। इसमें सीजीएसटी 30,420 करोड़ रुपए, एसजीएसटी 38,226 करोड़ रुपए, आईजीएसटी 87,009 करोड़ रुपए (माल के आयात पर कलेक्ट किए 39,198 करोड़ रुपए सहित) और सेस 12,274 करोड़ रुपए रहा है। सेस में माल के आयात से मिले 1,036 करोड़ रुपए शामिल हैं।

वित्त वर्ष 24 में अब तक 13.32 लाख करोड़ रुपए का जीएसटी कलेक्शन

फाइनेंशियल ईयर 2023-24 यानी पिछले 8 महीने में अब तक टोटल 13.32 लाख करोड़ रुपए का जीएसटी कलेक्शन हुआ है। वहीं पिछले फाइनेंशियल ईयर 2022-23 में टोटल 18.10 लाख करोड़ रुपए का जीएसटी कलेक्शन हुआ था।

राज्यों का कर्ज जीडीपी का 32 फीसदी रहने का अनुमान

मुंबई। चालू वित्त वर्ष में उच्च पूंजीगत व्यय और मध्यम राजस्व वृद्धि के बीच राज्यों का कर्ज उनके सकल घरेलू उत्पाद (जीएसडीपी) का 31-32 प्रतिशत रहने का अनुमान है। इसके साथ ही राज्यों की कुल उधारी नौ प्रतिशत बढ़कर 87 लाख करोड़ रुपये से अधिक रह सकती है। किसी राज्य पर कर्ज बोझ का आकलन उसके ऋण और जीएसडीपी के अनुपात के रूप में किया जाता है। कोविड महामारी से पहले कर्ज और जीएसडीपी का अनुपात 28-29 पर था।

जीएसटी कलेक्शन में महाराष्ट्र सबसे अव्वल

नवंबर 2023 में जीएसटी कलेक्शन के लिहाज से टॉप-3 राज्यों में महाराष्ट्र सबसे ऊपर है। महाराष्ट्र में जीएसटी कलेक्शन पिछले साल की तुलना में 17 प्रतिशत बढ़कर 21,611 करोड़ रुपए रहा। इस लिस्ट में कर्नाटक 10,238 करोड़ के कलेक्शन के साथ दूसरे और गुजरात 9,333 करोड़ के कलेक्शन के साथ तीसरे नंबर पर है।

2017 में लागू हुआ था जीएसटी

जीएसटी एक इनडायरेक्ट टैक्स है। इसे वैराइटी ऑफ प्रीवियस इनडायरेक्ट टैक्स (वेट), सर्विस टैक्स, परचेज टैक्स, एक्साइज ड्यूटी और कई इनडायरेक्ट टैक्स को रिप्लेस करने के लिए 2017 में लागू किया गया था। जीएसटी में 5, 12, 18 और 28 प्रतिशत के चार स्लैब हैं।

ईवी क्षेत्र में किसी खास कंपनी को प्रोत्साहन कभी नहीं देंगे

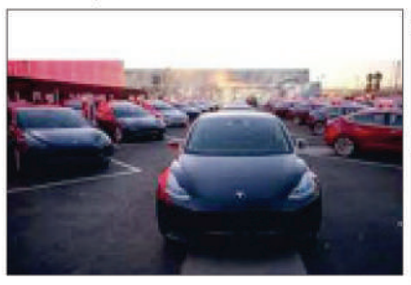

■ टेस्ला की मांग पर भारतीय अधिकारी ने कहा

■ भारत में टेस्ला विशेष रियायतों की मांग कर रही

एजेंसी ▶▶ नई दिल्ली

भारत इलेक्ट्रॉनिक वाहन (ईवी) क्षेत्र में कभी भी किसी खास कंपनी या उद्यम को प्रोत्साहन नहीं देगा। एक शीर्ष सरकारी अधिकारी ने शुक्रवार को यह बात कही।

गौरतलब है कि अमेरिकी इलेक्ट्रिक कार विनिर्माता टेस्ला देश में अपना कारखाना स्थापित करने के लिए विशेष रियायतों की मांग कर रही है। अधिकारी ने कहा कि अगर सरकार प्रोत्साहन देने पर विचार करेगी, तो यह उन सभी ईवी विनिर्माताओं के लिए होगा, जो भारत आना चाहते हैं। अधिकारी ने कहा कि अमेरिका स्थित इलेक्ट्रिक कार विनिर्माता टेस्ला की सीमा शुल्क रियायत की मांग पर अंतर-मंत्रालयी चर्चा हुई है, लेकिन उन पर 'हम कभी भी' किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुंचे।

टेस्ला ने 2021 में भारत से इलेक्ट्रिक वाहनों (ईवी) पर आयात शुल्क घटाने की मांग की थी। इस समय पूरी तरह से तैयार कार के आयात पर 60 प्रतिशत से 100 प्रतिशत तक शुल्क लिया जाता है। अधिकारी से पूछा गया था कि क्या सरकार टेस्ला के लिए विशिष्ट रियायतों पर विचार कर रही है। इस पर उन्होंने कहा, 'कभी नहीं। किसी खास कंपनी के लिए ऐसा कभी नहीं होगा। ऐसा हमेशा सभी संस्थाओं, कंपनियों के लिए होगा। यदि कोई रियायत दी जाएगी, तो यह सभी के लिए काफी कड़े प्रदर्शन मानदंडों से जुड़ी होंगी। ऐसा कभी भी किसी खास उद्यम के लिए नहीं होगा।'

खबरों में अटकलबाजी ज्यादा

अधिकारी ने स्पष्ट किया कि शुल्क रियायतों और कंपनी से संबंधित अन्य खबरों में अटकलबाजी ज्यादा है। पिछले महीने वाणिज्य और उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने कैलिफोर्निया स्थित टेस्ला के विनिर्माण संयंत्र का दौरा किया था और कहा कि कंपनी भारत से अपने वाहन कलपूर्जों के आयात को दोगुना करेगी।

देश का विदेशी मुद्रा भंडार 2.54 अरब डॉलर बढ़ा

एजेंसी ▶▶ मुंबई

■ विदेशी मुद्रा बढ़कर 597 .93 अरब डॉलर हुआ

■ स्वर्ण भंडार का मूल्य बढ़कर 46 .34 अरब डॉलर

देश का विदेशी मुद्रा भंडार 24 नवंबर को समाप्त सप्ताह में 2.54 अरब डॉलर बढ़कर 597.93 अरब डॉलर हो गया। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। इससे पिछले सप्ताह देश का कुल मुद्रा भंडार 5.07 अरब डॉलर बढ़कर 595.39 अरब डॉलर हो गया था।

रिजर्व बैंक के साप्ताहिक आंकड़ों के अनुसार, 24 नवंबर को समाप्त सप्ताह में विदेशी मुद्रा भंडार का अहम हिस्सा विदेशी मुद्रा आस्तियां 2.14 अरब डॉलर बढ़कर 528.53 अरब डॉलर हो गया। देश का विदेशी मुद्रा भंडार अक्टूबर, 2021 में 645 अरब डॉलर के सर्वकालिक उच्चतम स्तर पर पहुंचा था। लेकिन पिछले साल वैश्विक घटनाक्रम से पैदा हुए दबाव के बीच आरबीआई ने रुपये की विनिमय दर में गिरावट को रोकने के लिए इस पूंजी भंडार का उपयोग किया था जिससे विदेशी मुद्रा भंडार में कमी आई। डॉलर में अभिव्यक्त की जाने वाली विदेशी मुद्रा आस्तियों में यूरो, पाउंड और येन जैसी गैर-अमेरिकी मुद्राओं में घट-बढ़ के प्रभावों को भी शामिल किया जाता है।

विशेष आहरण अधिकार बढ़ा

स्वर्ण भंडार का मूल्य 29.6 करोड़ डॉलर बढ़कर 46.34 अरब डॉलर हो गया। आंकड़ों के अनुसार, विशेष आहरण अधिकार (एसडीआर) 8.7 करोड़ डॉलर बढ़कर 18.22 अरब डॉलर हो गया। आलोच्य सप्ताह में अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) के पास रखा देश का मुद्रा भंडार 1.4 करोड़ डॉलर बढ़कर 4.85 अरब डॉलर हो गया।

देश में बिजली की खपत नवंबर में 8.5 फीसदी बढ़ी

नई दिल्ली। देश में बिजली खपत नवंबर में लगभग 8.5 प्रतिशत बढ़कर 119.64 अरब यूनिट रही। त्योहारों और आर्थिक गतिविधियां बढ़ने के कारण बिजली की मांग बढ़ी है। सरकारी आंकड़ों के अनुसार बिजली की खपत एक साल पहले इसी अवधि में 110.25 अरब यूनिट और नवंबर 2021 में 99.32 अरब यूनिट थी। नवंबर में किसी एक दिन में बिजली की अधिकतम मांग 204.60 गीगावाट (एक गीगावाट बराबर 1,000 मेगावाट) रही। यह आंकड़ा नवंबर 2022 में 187.34 गीगावाट और नवंबर 2021 में 166.10 गीगावाट था। बिजली मंत्रालय ने अनुमान लगाया है कि अगली गर्मियों में देश की बिजली मांग 229 गीगावाट तक पहुंच जाएगी। बेमौसम बारिश के कारण अप्रैल-जुलाई में मांग अनुमानित स्तर तक नहीं पहुंची।

निफ्टी ने बनाया नया रिकॉर्ड

एजेंसी ▶▶ मुंबई

■ सेंसेक्स 493 अंक उछलकर 11 सप्ताह के उच्च स्तर पर

जीडीपी और अन्य महत्वपूर्ण आर्थिक आंकड़े बेहतर रहने के बीच विदेशी निवेशकों का सकारात्मक रुख रहने से शुक्रवार को घरेलू बाजार का प्रमुख सूचकांक निफ्टी अब तक के उच्चतम स्तर पर पहुंच गया जबकि सेंसेक्स 493 अंक उछलकर 11 सप्ताह के शीर्ष स्तर पर बंद हुआ। बीएसई का 30 शेयरों पर आधारित सेंसेक्स 492.75 अंक यानी 0.74 प्रतिशत उछलकर 67,481.19 अंक पर बंद हुआ। यह 18 सितंबर के बाद का इसका उच्चतम स्तर है। कारोबार के दौरान एक समय यह 575.89 अंक तक बढ़कर 67,564.33 पर पहुंच गया था। नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) का सूचकांक निफ्टी भी इस तेजी के बीच 134.75 अंक यानी 0.67 प्रतिशत चढ़कर 20,267.90 के अपने सर्वकालिक उच्च स्तर पर बंद हुआ।

इन शेयरों में रही घट-बढ़ : सेंसेक्स में शामिल कंपनियों में से आईटीसी, एनटीपीसी, एक्सिस बैंक, लार्सन एंड टुब्रो, बजाज फाइनेंस, एशियन पेंट्स और टाटा स्टील में खासी तेजी रही। दूसरी तरफ महिंद्रा एंड महिंद्रा, विप्रो, मारुति, इंडसइंड बैंक, कोटक महिंद्रा बैंक और एचडीएफसी बैंक के शेयरों में गिरावट का रुख रहा।

55 लाख की विदेशी सिगरेट बरामद

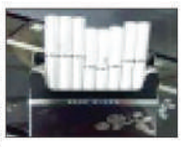

नई दिल्ली। दिल्ली सीमा शुल्क (निवारक) अधिकारियों ने तलाशी में 55.23 लाख रुपये मूल्य की 5.48 लाख से अधिक विदेशी सिगरेट बरामद की हैं जिनके पैकेट पर अनिवार्य सचित्र स्वास्थ्य चेतावनी मौजूद नहीं थी। इन सिगरेट पैकेट को सीमा शुल्क की चोरी करते हुए देश में अवैध रूप से आयात करने या तस्करी करने की आशंका है। इन पैकेट की 'सिगरेट और अन्य तंबाकू उत्पाद संशोधन नियम, 2022' का उल्लंघन करते हुए घरेलू बाजार में आपूर्ति की जा रही थी।एक खुफिया सूचना के आधार पर सीमा शुल्क (निवारक) आयुक्त कार्यालय, दिल्ली के अधिकारियों ने बृहस्पतिवार को तलाशी ली और लगभग 55.23 लाख रुपये मूल्य की विदेशी मूल की 5,48,800 लाख सिगरेट बरामद कीं।

मारुति की बिक्री 3.39% बढ़कर 1,64,439 इकाई

एजेंसी ▶▶ नई दिल्ली

मारुति सुजुकी इंडिया की नवंबर 2023 में कुल बिक्री 3.39 प्रतिशत बढ़कर 1,64,439 इकाई रही, जबकि पिछले साल इसी महीने में यह 1,59,044 इकाई थी। कंपनी ने शेयर बाजार को दी जानकारी में बताया कि यात्री वाहनों, वाणिज्यिक वाहनों और तीसरे पक्ष की आपूर्ति सहित कुल घरेलू बिक्री पिछले महीने 1.57 प्रतिशत बढ़कर 1,41,489 इकाई रही, जबकि एक साल पहले इसी अवधि में यह 1,39,306 इकाई थी। घरेलू स्तर पर यात्री वाहन (पीवी) की कुल बिक्री 1.33 प्रतिशत की वृद्धि के साथ पिछले महीने 1,34,158 इकाई रही, जबकि नवंबर 2022 में 1,32,395 इकाई थी। ऑल्टो और एस-प्रेसो सहित कम कीमत की कारों की बिक्री पिछले साल के इसी महीने में 18,251 इकाइयां की तुलना में घटकर 9,959 इकाई रही। इसी तरह बलेनो, सेलेरियो, डिजायर, इग्निस, स्विफ्ट, टूर एस और वैगनआर जैसे मॉडल सहित कॉम्पैक्ट कार की बिक्री नवंबर 2023 में 64,679 इकाई रही, जो पिछले साल इसी महीने में 72,844 इकाई थी।

■ घरेलू बिक्री में 1.57 प्रतिशत की वृद्धि

निर्यात बढ़कर 22,950 इकाई

मध्यम आकार की सेडान सियाज की बिक्री पिछले महीने सिर्फ 278 इकाई रही, जो नवंबर 2022 में 1,554 इकाई थी। वैन ईको की बिक्री 10,226 इकाई रही, जो एक साल पहले इसी महीने 7,183 इकाई थी। मारुति सुजुकी ने कहा कि पिछले महीने उसका निर्यात बढ़कर 22,950 इकाई से अधिक रहा, जो नवंबर 2022 में 19,738 इकाइ थी।

टाटा टेक, इरेडा, गांधार ऑयल और फ्लेट राइटिंग में बड़ी गिरावट

नए नवेले आईपीओ का जोश दमदार आगाज के बाद पड़ा ठंडा

एजेंसी ▶▶ मुंबई

स्टॉक एक्सचेंज पर जोरदार लिस्टिंग और निवेशकों को मल्टीबैगर रिटर्न देने के बाद लिस्ट हुए नए नवेले आईपीओ में बड़ी गिरावट आ गई है। शुक्रवार के ट्रेडिंग सेशन में लिस्टिंग पर निवेशकों को मल्टीबैगर रिटर्न देने वाले टाटा टेक के स्टॉक प्राइस में 7 फीसदी से ज्यादा की गिरावट देखने को मिली है। गांधार ऑयल रिफाइनरी का शेयर भी 7 फीसदी से अधिक नीचे फिसल चुका है। इरेडा भी निवेशकों को मल्टीबैगर रिटर्न देने के बाद करीब चार फीसदी की गिरावट के साथ कारोबार कर रहा है। टाटा टेक्नोलॉजीज 20 वर्षों में टीसीएस के बाद टाटा समूह की पहली कंपनी है जो स्टॉक एक्सचेंज पर 30 नवंबर, 2023 को लिस्ट हुई। 500 रुपए के इश्यू प्राइस वाला स्टॉक 1400 रुपए पर लिस्ट हुआ।

■ मल्टीबैगर रिटर्न देने वाले टाटा टेक का स्टॉक 7 फीसदी से ज्यादा लुढ़का

दमदार लिस्टिंग के बाद फिसला फ्लेट राइटिंग
फ्लेयर राइटिंग की भी एक्सचेंज पर शानदार लिस्टिंग हुई है। 304 रुपए इश्यू प्राइस वाला स्टॉक 514 रुपए तक जा पहुंचा। लेकिन अपने हाई से शेयर 12.34 फीसदी नीचे फिसला चुका है। फिलहाल शेयर इश्यू प्राइस से 48.32 फीसदी के उछाल के साथ 450.90 रुपए पर ट्रेड कर रहा है।

लेकिन लिस्टिंग के अगले ही दिन स्टॉक 71.6 फीसदी की गिरावट के साथ 1216 रुपए के करीब कारोबार कर रहा है। अपने हाई से स्टॉक 13 फीसदी नीचे फिसल चुका है। चंद दिनों में आईपीओ में निवेश करने वाले निवेशकों को 150 फीसदी से ज्यादा का रिटर्न मिला है।

मल्टीबैगर रिटर्न देने के बाद फिसला इरेडा

सार्वजनिक क्षेत्र एनबीएफसी कंपनी इरेडा की भी 29 नवंबर, 2023 को स्टॉक एक्सचेंज पर शानदार लिस्टिंग हुई थी। 32 रुपए इश्यू प्राइस वाला स्टॉक लिस्टिंग वाले दिन 60 रुपए और अगले दिन 68.90 रुपए के लेवल तक जा पहुंचा। इरेडा ने भी आईपीओ में निवेश करने वाले निवेशकों को 114 फीसदी का मल्टीबैगर रिटर्न दिया। लेकिन अपने तीसरे ट्रेडिंग सेशन में इरेडा के शेयर में 3 फीसदी से ज्यादा की गिरावट देखी गई।

गांधार ऑयल भी 7.12 फीसदी गिरा

गांधार ऑयल के आईपीओ की भी स्टॉक एक्सचेंज पर जोरदार लिस्टिंग 30 नवंबर, 2023 को हुई। 169 रुपए के इश्यू प्राइस वाला स्टॉक लिस्टिंग वाले दिन ही 344 रुपए पर जा पहुंचा। स्टॉक ने इश्यू प्राइस से 103 फीसदी का छलांग लगा दिया। ये कहना गलत नहीं होगा कि गांधार ऑयल ने भी आईपीओ में निवेश करने वाले निवेशकों को मल्टीबैगर रिटर्न दिया। पर लिस्टिंग के अगले ही दिन स्टॉक में भारी मुनाफावसूली देखी गई। शेयर 7.12 फीसदी की गिरावट के साथ 279.95 रुपए के लेवल पर जा फिसला है।

डायबिटीज के लिए बैद्यनाथ का शुगर फ्री च्यवनप्राश

नागपुर। बैद्यनाथ च्यवनफिट (शुगर फ्री च्यवनप्राश) सभी स्त्री -पुरुषों के लिए समान रूप से गुणकारी है। श्री बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन यह प्रथम आयुर्वेदिक कम्पनी है जिसने मधुमेह के लिए उनकी जरूरत के अनुसार शक्कर रहित, 'बैद्यनाथ च्यवनफिट' का निर्माण किया है। ज्यादातर च्यवनप्राश, जो बाजार में उपलब्ध है उनमें चीनी (शक्कर) है जिसकी वजह से मधुमेह (शुगर) की बीमारी से पीड़ित व्यक्तियों के लिए कोई आयुर्वेदिक टॉनिक नही था और वे लोग इससे वंचित रह जाते थे। 'बैद्यनाथ च्यवनफिट' के सेवन से मधुमेह से पीड़ित रोगी की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में एवं उनकी कमजोरी दूर होती है। बैद्यनाथ च्यवनफिट बैद्यनाथ रिसर्च फाउंडेशन द्वारा कुछ मूल्यवान जड़ी-बूटियों पर अनुसंधान कार्य करके उनको योग में मिलाया गया है। मुख्यघटक बिल्व, दशमूलादि द्रव्यों में मौजूद कुदरती तत्व फास्फेट आदि रसायन तत्व की वजह से थकावट कम होने में मदद होती है। अश्वगंधा, सफेद मूसली, केसर आदि की वजह से शरीर की नसों की कमजोरी दूर होने में तथा शरीर को ताकत दिलाने में सहायता होती है। जायफल, जावित्री आदि मूल्यवान जड़ी-बूटियों से रोगप्रतिकार क्षमता प्राकृतिक रूप से बढ़ाने में मदद होती है।

भारत ने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ टी-20 प्रारूप में जीती लगातार तीसरी सीरीज

टीम इंडिया ने चौथे टी-20 में कंगारुओं को 20 रनों से हराकर पांच मैचों की सीरीज में 3-1 की अजेय बढ़त बनाई

रायपुर, (एजेंसी)। मैन ऑफ द मैच अक्षर पटेल (तीन विकेट) और दीपक चाहर (दो विकेट) की बेहतरीन गेंदबाजी और रिंकू सिंह की 46 रनों की धैर्यपूर्ण आक्रामक पारी की बदौलत भारत ने शुक्रवार को चौथे टी-20 मुकाबले में ऑस्ट्रेलिया को 20 रनों से हराते हुए पांच मैचों की सीरीज में 3-1 की अजेय बढ़त बना ली है।

इस जीत के साथ ही भारत ने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ लगातार तीसरी टी20 सीरीज अपने नाम की। भारत ने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ अंतिम बार द्विपक्षीय टी20 सीरीज फरवरी 2019 में गंवाई थी। उसके बाद टीम इंडिया ने दिसंबर 2020 और सितंबर 2022 में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ क्रमशः 2-1, 2-1 से टी20 सीरीज अपने नाम की थी। यही नहीं, भारत टी20 इंटरनेशनल में सबसे ज्यादा मैच (135) जीतने वाली टीम बन गई। भारत ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 20 ओवर में 9 विकेट पर 174 रन बनाए। जबाव में ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेट टीम 20 ओवर में 7 विकेट पर 154 रन ही बना सकी। शहीद वीर नारायण सिंह अंतरराष्ट्रीय स्टेडियम में ऑस्ट्रेलिया के कप्तान मैथ्यू वेड ने टॉस जीत कर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया है।

भारत ने रिंकू सिंह 46, यशस्वी जायसवाल 37, जितेश शर्मा 35 और ऋतुराज गायकवाड़ 32 रनों की बदौलत ऑस्ट्रेलिया को जीत के लिए 175 रन बनाने का लक्ष्य दिया है। एक समय भारत का स्कोर 18.3 ओवर में 4 विकेट पर 167 रन था, लेकिन इसके बाद अगली 9 गेंद में उसने सिर्फ 7 रन बनाए और 5 विकेट गंवा दिए। ऑस्ट्रेलिया की ओर से बेन ड्वारशुइस ने 3 विकेट लिए। इसके अलावा जेसन बेहरेनडॉर्फ और तनवीर संघा ने 2-2 विकेट लिए। ऑस्ट्रेलिया की ओर से कप्तान मैथ्यू वेड ने सबसे ज्यादा 36 रन बनाए। इसके अलवा ट्रैविस हेड 31, बेन मैकडरमॉट 19, टिम डेविड 19, मैथ्यू शॉर्ट 22 रन बनाकर आउट हुए।

स्कोर बोर्ड

भारत	रन	गेंद	4/6
यशस्वी जायसवाल कै. बेन बो. हार्डी	37	28	6/1
ऋतुराज गायकवाड़ कै. ड्वारशिस बो.संघा	32	28	3/1
श्रेयस अय्यर कै. ग्रीन बो. संघा	08	07	0/0
सूर्यकुमार कै. वेड बो. ड्वारश्विस	01	02	0/0
रिंकू सिंह पगबाधा बेहरनडॉर्फ	46	29	4/2
जितेश शर्मा कै. हेड बो. ड्वारश्विस	35	19	1/3
अक्षर पटेल कै. संघा बो. ड्वारश्विस	00	01	0/0
दीपक चाहर कै. ग्रीन बो. बेहरनडॉर्फ	00	02	0/0
रवि बिश्नोई रन आउट (फिलिपे/वेड)	04	03	0/0
आवेश खान नाबाद	01	01	0/0

अतिरिक्तः 10, **कुलः** 20 ओवर में नौ विकेट पर 174 रन, **विकेट पतनः** 1-50, 2-62, 3-63, 4-111, 5-167, 6-168 , 7-168, 8-169, 9-174 , **गेंदबाजीः** ऐरन हार्डी 3-1-20-1, जेसन बेहरनडॉर्फ 4-0-32-2, बेन ड्वारश्विस 4-0-40-3, क्रिस ग्रीन 4-0-36-0, तनवीर संघा 4-0-30-2, मैथ्यू शॉर्ट 1-0-10-0.

ऑस्ट्रेलिया	रन	गेंद	4/6
ट्रैविस हेड कै. मुकेश बो. अक्षर	31	16	5/1
जॉश फिलिपे बो. बिश्नोई	08	07	2/0
बेन मैवडरमॉट बो. अक्षर	19	22	1/0
ऐरन हार्डी बो. अक्षर	08	09	1/0
टिम डेविड कै. यशस्वी बो. चाहर	19	20	0/1
मैथ्यू शॉर्ट कै. यशस्वी बो. चाहर	22	19	2/1
मैथ्यू वेड नाबाद	36	23	2/2
बेन ड्वारश्विस बो. आवेश	01	02	0/0
क्रिस ग्रीन नाबाद	02	03	0/0

अतिरिक्तः 8, **कुलः** 20 ओवर में सात विकेट पर 154 रन, **विकेट पतनः** 1-40, 2-44, 3-52, 4-87, 5-107 , 6-126, 7-133, **गेंदबाजीः** दीपक चाहर 4-0-44-2, मुकेश कुमार 4-0-42-0, रवि बिश्नोई 4-0-17-1, अक्षर पटेल 4-0-16-3, आवेश खान 4-0-33-1.

टी-20 में सबसे तेज 4,000 रन बनाने वाले भारतीय बने ऋतुराज

ऋतुराज गायकवाड़ टी-20 क्रिकेट में सबसे तेज 4,000 रन बनाने वाले भारतीय बल्लेबाज बन गए हैं। उन्होंने चौथे टी-20 में 7 रन बनाते ही यह उपलब्धि अपने नाम की। ऋतुराज ने 116 पारियों में यह कारनामा कर केएल राहुल का रिकॉर्ड तोड़ा। जिन्होंने 117 पारियों में इतने ही रन बनाए थे। विश्व में सबसे तेज टी-20 क्रिकेट में 4,000 रन बनाने का रिकॉर्ड वेस्टइंडीज के क्रिस गेल के नाम है। उन्होंने सिर्फ 107 पारियों में 4,000 रन बनाए थे। दूसरे स्थान पर शॉन मार्श हैं, जिन्होंने 113 पारियों में साल 2014 में यह कारनामा किया था। इसी तरह पाकिस्तान के दिग्गज बल्लेबाज बाबर आजम तीसरे स्थान पर हैं। उन्होंने 115 पारियों में यह रन बनाए थे। विराट कोहली ने 138 पारियों में 4,000 टी-20 रन पूरे किए थे। गायकवाड़ ने टी-20 क्रिकेट में 121 मुकाबले खेले हैं और इसकी 116 पारियों में 12 बार नाबाद रहते हुए 4,025 रन बनाए हैं।

एक साल बाद टी-20 मैच खेलने उतरे श्रेयस व चाहर

भारतीय बल्लेबाज श्रेयस अय्यर और तेज गेंदबाज दीपक चाहर एक साल के बाद भारत के लिए अंतराष्ट्रीय टी-20 खेलने उतरे। दीपक चाहर ने भारत के लिए इस मुकाबले से पहले अपना आखिरी टी20 मैच 4 अक्टूबर 2022 को इंदौर में साउथ अफ्रीका के खिलाफ खेला था जिसमें उन्होंने एक विकेट लिए थे और 31 रन बनाए थे। वहीं श्रेयस अय्यर ने भारत के लिए आखिरी टी20 मैच 22 नवंबर 2022 को नेपियर में न्यूजीलैंड के विरुद्ध खेला था जिसमें वह डक पर आउट हुए थे।

मैन ऑफ द मैच अक्षर की घातक गेंदबाजी

भारतीय गेंदबाजों ने शानदार प्रदर्शन करते हुए ऑस्ट्रेलियाई बल्लेबाजों को खुलकर खेलने का कोई मौका नहीं दिया और नियमित अंतराल में विकेट निकाले। मैन ऑफ द मैच अक्षर पटेल ने 4 ओवर के अपने स्पैल में केवल 16 रन खर्च करते हुए 3 अहम विकेट निकाले। उनकी इकॉनमी रेट 4.00 की रही। अक्षर ने ट्रैविस हेड (31) को मुकेश कुमार के हाथों कैच आउट कराकर टीम को बड़ी सफलता दिलाई। उसके बाद उन्होंने बेन मैवडरमोट (19) और एरोन हार्डी (8) को बोल्ड कर कंगारू टीम को 2 और बड़े झटके दे दिए। इससे भारतीय टीम ने मैच में दबाव बनाना शुरू कर दिया। रवि बिश्नोई के खाते में 1 विकेट आया। दीपक चाहर ने 2 विकेट लेकर अपना प्रभाव छोड़ा।

आईपीएल नीलामी के लिए 1,166 खिलाड़ियों ने कराया पंजीकरण

830 भारतीय व 336 विदेशी क्रिकेटर शामिल

नई दिल्ली,(एजेंसी)। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2024 की नीलामी के लिए विश्व क्रिकेट के कुछ बड़े नामों ने पंजीकरण कराया है। इनमें वनडे विश्वकप 2023 में शीर्ष प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ी जैसे मिचेल स्टार्क, पैट कमिंस, ट्रेविस हेड, डेरिल मिचेल और रचिन रविंद्र जैसे बड़े नाम शामिल हैं।

बीसीसीआई द्वारा आईपीएल फ्रेंचाइजी के साथ साझा किए गए रजिस्टर में कुल 1,166 खिलाड़ी शामिल हैं। नीलामी 19 दिसंबर को दुबई में होने वाली है। आइए खबर के बारे में अधिक जानते हैं। नीलामी के लिए पंजीकरण कराने वाले 1,166 खिलाड़ियों में से 830 भारतीय खिलाड़ी हैं, जबकि 336 विदेशी खिलाड़ी हैं। विशेष रूप से सूची में 212 कैप्ड खिलाड़ियों ने पंजीकरण कराया है, जबकि 909 खिलाड़ी अनकैप्ड हैं। इसके अलावा 45 एसोसिएट खिलाड़ियों ने लीग में अपना भाग्य आजमाने का निर्णय लिया है। हाल ही में मुंबई इंडियंस द्वारा रिलीज किए गए इंग्लैंड के तेज गेंदबाज जोफ्रा आर्चर ने नामांकन नहीं कराया है। 830 भारतीयों में से 18 कैप्ड खिलाड़ी हैं। इन खिलाड़ियों में वरुण आरोन, केएस भरत, केदार जाधव, सिद्धार्थ कौल, धवल कुलकर्णी, शिवम मावी, शाहबाज नदीम, करुण नायर, मनीष पांडे, हर्षल पटेल, चेतन सकारिया, मनदीप सिंह, बरिंदर सरन शामिल हैं। इसके अलावा शार्दुल ठाकुर, जयदेव उनादकट, हनुमा विहारी, संदीप वारियर और उमेश यादव भी नीलामी में उतरेंगे। कैप्ड भारतीयों में से केवल हर्षल, जाधव, शार्दुल और उमेश को हाल ही में उनकी फ्रेंचाइजी द्वारा रिलीज किया गया है। यहां ध्यान देने वाली बात यह है कि भले ही 1,166 खिलाड़ियों ने पंजीकरण कराया है, लेकिन केवल 77 स्लॉट भरे जाने हैं, जिनमें से अधिकतम 30 विदेशी खिलाड़ी हो सकते हैं। कुल 26 खिलाड़ियों ने 2 करोड़ रुपये के आधार मूल्य पर अपना पंजीकरण कराया है। ऑस्ट्रेलियाई खिलाड़ियों को नीलामी में अधिक रकम मिलने की उम्मीद है। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने फ्रेंचाइजियों से अनुरोध किया है कि वे नीलामी रजिस्टर में सूचीबद्ध नहीं होने वाले अतिरिक्त खिलाड़ी अनुरोधों के साथ जवाब दें।

जूनियर महिला हॉकी विश्वकप में भारत की हार

सैंटियागो,(एजेंसी)। एफआईएच हॉकी महिला जूनियर विश्वकप में शुक्रवार को रोमांचक मुकाबले में जर्मनी के हाथो भारत को 4-3 से हार का सामना करना पड़ा। चिली के सैंटियागो में खेले गए मुकाबले में भारत की ओर से अन्नु ने 11वें मिनट में, रोपनी कुमारी ने 14वें मिनट में और मुमताज खान ने 24वें मिनट में गोल किए। वहीं जर्मनी की ओर से सोफिया श्वाबे ने 17वें मिनट में, लौरा प्लथ ने 21वें और 36वें मिनट में और कैरोलिन सेइडेल ने 38वें मिनट में गोल दागे। भारतीय टीम ने पहले क्वार्टर में दबाव बनाते हुए जर्मनी की रक्षापंक्ति पर हमले जारी रखे। इन हमलों के बीच भारत को लगातार पेनल्टी कॉर्नर मिले और दूसरे पर अन्नु ने गोल करके टीम को बढत दिलाई। इसके तीन मिनट बाद रोपनी ने गोल करके पहले क्वार्टर में भारत की बढ़त 2-0 कर दिया।

नडाल टेनिस कोर्ट में वापसी के लिए तैयार

जनवरी में ब्रिसबेन अंतरराष्ट्रीय टूर्नामेंट में लेंगे हिस्सा

मैड्रिड, (एजेंसी)। स्पेन के स्टार टेनिस खिलाड़ी राफेल नडाल ब्रिसबेन अंतरराष्ट्रीय टूर्नामेंट में वापसी करेंगे। यह टूर्नामेंट जनवरी में ऑस्ट्रेलिया में आयोजित होगा।

22 बार के ग्रैंडस्लैम विजेता नडाल जनवरी के बाद से टूर पर नहीं खेले हैं। उन्होंने सोशल मीडिया पर पोस्ट एक वीडियो में कहा, एक साल तक टूर्नामेंट में प्रतिस्पर्धा नहीं करने के बाद अब वापसी का समय। उन्होंने कहा, वापसी जनवरी के पहले हफ्ते में ब्रिसबेन में होगी। मिलता हूं। वह ऑस्ट्रेलियाई ओपन के दूसरे दौर में मिली हार के दौरान कूल्हे में चोट लगा बैठे थे। मई में फ्रेंच ओपन के शुरू होने से पहले नडाल ने घोषणा की थी कि वह टूर्नामेंट में नहीं खेलेंगे। जिसे वह रिकॉर्ड 14 बार जीत चुके हैं। उन्होंने कहा था कि उन्हें नहीं पता कि वह कब वापसी करेंगे। उन्होंने तब कहा था कि उन्हें 2024 में खेलने की उम्मीद है जो उनका अंतिम सत्र हो सकता है। उन्होंने उस समय एक प्रेस कांफ्रेंस में कहा था, आपको नहीं पता कि चीजें कैसी रहती हैं।

डाउरिच ने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से लिया संन्यास

एंटीगुआ,(एजेंसी)। वेस्टइंडीज टीम के विकेटकीपर शेन डाउरिच ने तत्काल प्रभाव से अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास ले लिया है। शेन डाउरिच को तीन दिसंबर से शुरू होने वाले इंग्लैंड एकदिवसीय मैचों के लिए वेस्टइंडीज टीम में चुना गया था, लेकिन उन्होंने अपना नाम वापस ले लिया और क्रिकेट से संन्यास लेने की घोषणा की। क्रिकेट वेस्टइंडीज ने डाउरिच की जगह किसी अन्य नाम पर फैसला नहीं किया है, कप्तान शाई होप विकेटकीपिंग की जिम्मेदारी संभालने के लिए तैयार हैं। आईसीसी ने बताया वर्ष 2015 में अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में पदार्पण करने वाले डाउरिच ने 2019 में बांग्लादेश के खिलाफ एक एकदिवसीय मुकाबला खेला। वह नियमित रूप से टेस्ट टीम में रहे है। उन्होंने 35 मैच खेले हैं और 29.07 की औसत से 1570 रन बनाए हैं, जिसमें तीन शतक और नौ अर्धशतक शामिल हैं। उन्होंने 90 खिलाड़ियों को आउट भी किया। सीडब्ल्यूआई के क्रिकेट निदेशक माइल्स बास्कोम्बे ने कहा, हम वेस्टइंडीज के लिए खेल में शेन के योगदान के लिए उन्हें धन्यवाद देना चाहते हैं। बास्कोम्बे ने कहा, वह एक अनुशासित, कड़ी मेहनत करने वाले क्रिकेटर हैं, उन्होंने हमेशा स्टंप के आगे और पीछे अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया।

बॉक्सिंग चैंपियनशिप में रुचिर व हिमांशु ने जीते कांस्य

भोपाल,(खेसं)। शिलांग मेघालय में 25 नवंबर से 1 दिसंबर तक खेली गई सातवीं एलीट नेशनल बॉक्सिंग चैंपियनशिप में मध्यप्रदेश अकादमी के दो बॉक्सर भाई रुचिर श्रीवास ने 34 किग्रा और हिमांशु श्रीवास ने 57 किग्रा भारवर्ग में कांस्य पदक जीते।

इसी के साथ दोनों को चयन पाटियाला एनआईएस नेशनल कैंप के लिए किया गया।

शिव थापा, अमित पंघाल और सागर फाइनल में

विश्व के पूर्व नंबर एक मुक्केबाज अमित पंघाल, शिव थापा और सागर ने शुक्रवार को पुरुषों की राष्ट्रीय मुक्केबाजी चैंपियनशिप 2023 में अपने-अपने भार वर्ग के फाइनल में पहुंच गए है। शिव थापा ने 63.5 किग्रा सेमीफाइनल में हरिवंश तवारी पर 5-0 से शानदार जीत दर्ज की। दूसरी ओर अमित पंघाल ने 51 किग्रा सेमीफाइनल में अंकित को 5-2 मात दी। वहीं सागर 5-0 से जीते। उनका स्वर्ण पदक मैच में जयपाल सिंह से मुकाबला होगा।

वोंग ने इंग्लैंड-ए को दिलाई जीत

मुंबई, (एजेंसी)। इस्सी वोंग की तूफानी पारी (15 गेंद में नाबाद 35 रन और एक विकेट) की बदौलत इंग्लैंड-ए ने महिला क्रिकेट के दूसरे मुकाबले में भारत-ए को चार विकेट से हराकर तीन मैचों की टी-20 सीरीज में 1-1 से बराबरी कर ली।

भारत-ए ने पहले बल्लेबाजी करते हुए नौ विकेट पर 149 बनाए। जबाव में इंग्लैंड ने 6 विकेट पर 151 रन बनाकर मैच जीत लिया। सीरीज का निर्णायक मुकाबला तीन दिसंबर को खेला जाएगा। इससे पहले भारत के लिए पंजाब की कनिका आहूजा ने सर्वाधिक 27 रन बनाए। इसके अलावा अरुण गोयल और उमा छेत्री ने 26-26 रनों का योगदान दिया। स्क्रिवेन्स ने इंग्लैंड के लिए सर्वाधिक 39 रन बनाए। बाउचर ने 27 रन का योगदान दिया। भारत की कप्तान मिन्नू मणि 29 रन देकर दो विकेट लिए। श्रेयंका पाटिल को एक विकेट लिया।

पहले टेस्ट में बांग्लादेश की पकड़ मजबूत, इस्लाम ने झटके चार विकेट

सिलहट,(एजेंसी)। बांग्लादेश ने न्यूजीलैंड के खिलाफ खेली जा रही दो मैचों की सीरीज के पहले टेस्ट में मजबूत पकड़ बना ली है। पहले टेस्ट मैच के चौथे दिन का खेल खत्म होने तक न्यूजीलैंड ने दूसरी पारी में सात विकेट पर 113 रन बना लिए हैं। अंतिम दिन न्यूजीलैंड के पास महज तीन विकेट बचे हैं, जबकि उन्हें अभी जीत के लिए 219 रनों की और जरूरत है। खराब रोशनी के चलते चौथे दिन का खेल समय से थोड़ा पहले खत्म करना पड़ा।

न्यूजीलैंड को हार की ओर धकेला

डेरेल मिचेल 44 जबकि इश सोढी सात रन बनाकर नॉटआउट लौटे हैं। पहली पारी में चार विकेट लेने वाले ताइजुल इस्लाम इस पारी में भी चार विकेट चटका चुके हैं। दूसरी पारी में टॉप-4 कीवी बल्लेबाजों में तो कोई भी 25 रनों तक भी नहीं पहुंच सका। टॉम लेथम शून्य, डेवन कॉन्वे 22, हेनरी निकोल्स दो रन बनाकर पवेलियन लौटे। कप्तान केन विलियमसन दूसरी पारी में 11 रन बनाकर ही आउट हो गए। बांग्लादेश ने इस टेस्ट मैच में टॉस जीतकर पहले बैटिंग करते हुए पहली पारी में 310 रन बनाए। जवाब में न्यूजीलैंड की टीम ने पहली पारी में 317 रन बनाकर सात रनों की बढ़त हासिल की। बांग्लादेश ने दूसरी पारी में 338 रन बना डाले।

छह निशानेबाज इंडिया ट्रायल्स के लिए क्वॉलीफाई

भोपाल, (खेसं)। राजधानी के छह निशानेबाजों ने इंडिया टीम के चयन ट्रायल्स के लिए क्वॉलीफाई कर लिया है। इनमें से दो खिलाड़ियों ने नेशनल टू नेशनल रिनाउड शूटिंग निशानेबाज की उपलब्धि भी हासिल कर ली है। 15 नवंबर से दो दिसंबर तक नई दिल्ली में आयोजित 66वीं राष्ट्रीय शूटिंग चैंपियनशिप में राजधानी की फन राइफल शूटिंग एवं शफीक खान राइफल शूटिंग अकादमी के खिलाड़ियों ने शानदार प्रदर्शन किया है। कोच मोहम्मद इदरिस ने बताया कि ये सभी खिलाड़ी अब ट्रायल्स देंगे। यह ट्रायल्स आगामी माह में आयोजित किया जाएगा।

यह खिलाड़ी देंगे ट्रायल : मोहम्मद बिलाल, आमिर हुसैन, प्रगति ठाकुर, जैदान अंसारी, प्रणव ब्रोक और वानिया जाहिद।

बिलाल व हुसैन खेलेंगे नेशनल टू नेशनल

अकादमी के दो खिलाड़ी रिनाउड शूटर के लिए क्वॉलीफाई कर गए हैं। इनमें मोहम्मद बिलाल और आमिर हुसैन शामिल हैं। ये खिलाड़ी अब नेशनल टू नेशनल खेल सकेंगे। दोनों ही 22 राइफल शूटिंग इवेंट के हैं। सबसे खास बात यह है कि इस इवेंट का अभ्यास इस शूटिंग अकादमी में नहीं होता है इसके बावजूद बिलाल और आमिर ने यह उपलब्धि हासिल कर ली है। कोच ने बताया कि बिलाल ने 600 में से 601 अंक हासिल किए हैं। इस उपलब्धि पर शूटिंग रेंज के कोच मोहम्मद इदरीस तथा शूटिंग रेंज के पेटर्न्स अब्दुल शफीक खान ने सभी खिलाड़ियों को बधाई दी शूटिंग रेंज के पेटर्न्स ने बताया कि जल्द से जल्द हम 25मी. एव 50मी. शूटिंग रेंज के सुविधा जल्द से जल्द उपलब्ध करे गए।

जीबी पीएचक्यू ने जीता डीजीपी कप का खिताब

फाइनल मुकाबले में एसएएफ को 55 रनों से हराया

भोपाल,(खेसं)। जीबी पीएचक्यू ने एसएएफ को 55 रनों से हराकर डीजीपी कप डे नाइट क्रिकेट टूर्नामेंट का खिताब जीता।

फाइनल मुकाबले में जीबी पीएचक्य के खिलाफ टॉस जीत कर एस ए एफ की टीम ने गेंदबाजी करने का निर्णय लिया। जीबी पीएचक्यू ने पहले बल्लेबाजी करते हुए प्रज्ञा बालरे 94, संदीप सूर्यवंशी 21 और दिशांत खरे के 15 रनों की मदद से 20 ओवर में पर विकेट पर 159 रन बनाए। एसएएफ की ओर से शुभम और राजेंद्र ने 2-2 विकेट लिए। लक्ष्य का पीछा करने उतरी एसएएफ की टीम 16.4 ओवर में 105 रन ही बना सकी। एसएएफ के लिए विनय वर्मा 24, राजेंद्र सिंह 23 और शुभम चौहान ने 13 रनों का योगदान दिया। जीबी पीएचक्यू की ओर से संतोष ने 3 और विपीनव प्रज्ञा ने 2-2 विकेट लिए। प्रज्ञा बालरे को उनके दोहरे प्रदर्शन के लिए मैन ऑफ द मैच का पुरस्कार मिला। यह टूर्नामेंट 13/6/2023 से 22/06/2023 तक नेहरु नगर पुलिस ग्राउंड पर आयोजित किया गया था। वर्षा ऋतु के कारण टूर्नामेंट का फाइनल मैच स्थगित किया गया था जो शुक्रवार को खेला गया।

पुरस्कार- प्लेयर ऑफ द टूर्नामेंटः शुभम चौहान, **बेस्ट बैट्समैनः** प्रज्ञा, **बेस्ट बॉलरः** विशाल सिंह, **बेस्ट फील्डरः** अंकुश, **बेस्ट विकेटकीपरः** श्रवन बेगड़े।

ज्यादा रहे

बचपन में प्रतिकूल परिस्थितियों का अनुभव करने वालों में

कोविड -19 के दुष्प्रभाव

पिट्सबर्ग (द कन्वरसेशन)। जिन वयस्कों ने बचपन में प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना किया था, उनके कोविड-19 से संक्रमित होने पर मरने या अस्पताल में भर्ती होने की संभावना काफी अधिक थी। यह एक हालिया अध्ययन का मुख्य निष्कर्ष है, जो जर्नल ऑफ एपिडेमियोलॉजी एंड कम्युनिटी हेल्थ में प्रकाशित हुआ है। यूनाइटेड किंगडम में 150,000 वयस्कों के अध्ययन में पाया गया कि जिन लोगों ने बचपन में बहुत खराब माहौल में रहने की बात की, उनमें कोविड -19 की वजह से मृत्यु की संभावना 25% अधिक थी, साथ ही ऐसे

लोगों के कोविड -19 से संक्रमित होने के बाद अस्पताल में भर्ती होने की संख्या 22% अधिक थी। जनसांख्यिकी और स्वास्थ्य स्थितियों को ध्यान में रखने के बाद भी ये आंकड़े बरकरार रहे।

बचपन के बुरे हालात में शारीरिक, भावनात्मक या यौन शोषण, उपेक्षा, घरेलू शिथिलता और जिसे कई लोग 'घातक तनाव' कहते हैं, शामिल हैं। अध्ययन यूके बायोबैंक पर निर्भर था, जो पूरे यूनाइटेड किंगडम में 40 से 69 वर्ष की आयु के 500,000 से अधिक स्वयंसेवकों वाला एक बड़ा बायोमेडिकल डेटाबेस है। उनमें से लगभग एक-तिहाई स्वयंसेवकों ने अपने बचपन के बारे में जानकारी प्रदान की। टीम ने वह डेटा लिया और फिर उन प्रतिभागियों के मेडिकल रिकॉर्ड की खोज की जिनकी मृत्यु कोविड-19 के कारण हुई या जिन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया था।

यह क्यों मायने रखती है

नवम्बर 2023 तक कोविड-19 ने दुनिया भर में लगभग 70 लाख लोगों की जान ले ली थी। यह महामारी से संबंधित अस्पताल में भर्ती होने और मृत्यु के सभी जोखिम कारकों को समझने के महत्व को रेखांकित करता है। पहले के शोध में उम्र, नस्ल, जातीयता, आय और शिक्षा सहित कोविड-19 के लिए जनसांख्यिकीय जोखिम कारकों की जांच की गई है। लेकिन बचपन के अनुभवों को वयस्कों के कोविड-19 परिणामों से जोड़ने वाला यह पहला अध्ययन है। अध्ययन के आश्चर्यजनक निष्कर्ष बताते हैं कि प्रारंभिक बचपन के बुरे अनुभवों को बीमारी के जोखिम कारकों की सूची में जोड़ा जाना चाहिए - न केवल कोविड -19 के लिए बल्कि शायद अन्य बीमारियों के लिए भी। अध्ययन से यह भी पता चलता है कि प्रतिकूल परिस्थितियों और आघात से असमान रूप से प्रभावित समुदाय विशेष रूप से नकारात्मक स्वास्थ्य परिणामों के प्रति संवेदनशील हो सकते हैं। इसमें वे समुदाय शामिल हैं जहां आसपास हिंसा, तनाव और गरीबी उच्च स्तर पर है।

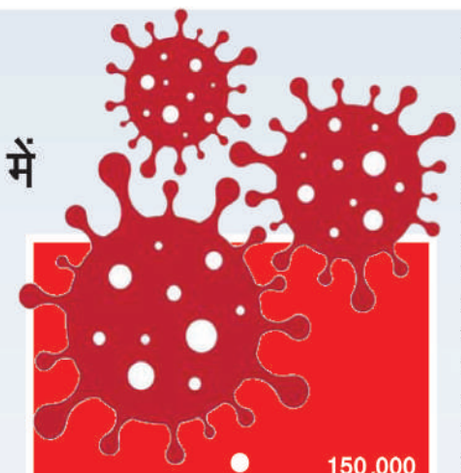

और क्या शोध हो रहा है

शोध को एक समूह द्वारा किए गए काम से प्रेरणा मिली, जिसमें प्रतिकूल बचपन के अनुभवों और वयस्कता में स्वास्थ्य समस्याओं के बीच संबंध पाया गया है। बचपन में गंभीर दुर्व्यवहार का सामना करने वाले वयस्कों में हृदय रोग, फेफड़ों की बीमारी, कैंसर और समय से पहले मौत सहित पुरानी स्थितियों का खतरा बढ़ जाता है। शोधकर्ता अभी भी यह समझने की कोशिश कर रहे हैं कि बचपन की प्रतिकूलता वयस्कता में नकारात्मक स्वास्थ्य परिणामों में कैसे योगदान करती है। यह मुख्यतः जैविक प्रकृति का हो सकता है।

- 150,000 वयस्कों के अध्ययन में पाया गया कि जिन लोगों ने बचपन में बहुत खराब माहौल में रहने की बात की, उनमें कोविड -19 की वजह से मृत्यु की संभावना 25% अधिक थी,
- बचपन के बुरे हालात में शारीरिक, भावनात्मक या यौन शोषण, उपेक्षा, घरेलू शिथिलता और जिसे कई लोग 'घातक तनाव' कहते हैं, शामिल हैं।
- बचपन के अनुभवों को वयस्कों के कोविड-19 परिणामों से जोड़ने वाला यह पहला अध्ययन है। अध्ययन के आश्चर्यजनक निष्कर्ष बताते हैं कि प्रारंभिक बचपन के बुरे अनुभवों को बीमारी के जोखिम कारकों की सूची में जोड़ा जाना चाहिए

आगे क्या होगा

टीम बड़ी आबादी के अध्ययन की जांच जारी रखने की योजना बना रही है - यानी, कम से कम 30,000 से 50,000 प्रतिभागियों के साथ- यह निर्धारित करने के लिए कि क्या प्रतिकूल बचपन के अनुभव लंबे समय तक रहने वाले कोविड जैसे अन्य स्वास्थ्य परिणामों से संबंधित हैं। यह स्पष्ट होता जा रहा है कि बचपन का आघात कैसे शरीर में अंतर्निहित हो जाता है, इसके बारे में अधिक जानने से संभावित हस्तक्षेपों और दीर्घकालिक स्वास्थ्य परिणामों के बारे में हमारी समझ में मदद मिल सकती है, जिसमें संभावित रूप से कोविड -19 से जुड़े लोग भी शामिल हैं।

सलमान के साथ ही बनाना चाहता था वांटेड बोनी कपूर

मुंबई (वार्ता)। बॉलीवुड फिल्मकार बोनी कपूर का कहना है कि वह फिल्म वांटेड सलमान खान को लेकर ही बनाना चाहते थे। सोनी एंटरटेनमेंट टेलीविजन के शो, झलक दिखला जा में 'बोनी कपूर स्पेशल' एपिसोड होगा। इसमें बोनी कपूर की प्रतिष्ठित फिल्मों के कुछ चार्ट-टॉपिंग गानों की धुन पर शानदार परफॉर्मेंस के साथ डांस फ्लोर चमक उठेगा। झलक दिखला जा शो में मेहमान के तौर पर पहुंचे बोनी कपूर ने बताया कि कैसे उन्होंने सलमान खान को फिल्म वांटेड करने के लिए राजी किया था। बोनी कपूर ने कहा,फिल्म वांटेड 2009 में रिलीज हुई थी और हमने इसे 2007 में बनाना शुरू किया था। मुझे यकीन था कि इससे फिल्म निर्माण में एक्शन वापस आ जाएगा। क्योंकि उस दौर में सिर्फ रोमांटिक, पारिवारिक ड्रामा ही बन रहे थे और एक्शन कहीं गायब हो गया था। जितना मै समझता हूं, जनता को एक्शन फिल्म से सबसे बड़ी खुशी मिल सकती है। बोनी कपूर ने बताया,जब मैंने फिल्म वांटेड की शुरुआत की, तो मैंने फैसला किया कि मै इसे बनाऊंगा, और इसे केवल सलमान खान के साथ ही बनाने का निर्णय लिया।

संगीता फोगाट के डांस की तारीफ हुई

मुंबई(वार्ता)। सेलिब्रिटी डांस रियलिटी शो झलक दिखला जा के मंच पर रेसलर संगीता फ़ोगाट के डांस की जज फराह खान,मलाइका अरोड़ा और फिल्मकार बोनी कपूर ने तारीफ की है। जज फराह खान ने कहा, संगीता और भरत, मुझे यकीन नहीं हो रहा है कि यह वही लड़की है जिसने पिछले हफ्ते 'हवा हवाई' पर परफॉर्म किया था। पूरी तरह से अलग किरदार में तब्दील होकर, वह पहचानी नहीं जा रही है। मलायका अरोड़ा ने कहा, "संगीता, भरत, क्या गाना है, क्या परफॉर्मेंस है! बिल्कुल'जलवा', पूरी तरह से'जलवा'एक्ट जैसा लगता है। बहुत अच्छा। बोनी कपूर ने कहा, संगीता आपने कुश्ती में अद्भुत कौशल दिखाया है लेकिन मै आपको पहली बार एक डांसर के रूप में देख रहा हूं। खैर, अब मेडल की बात चली है तो मै खुद आपको एक मेडल देना चाहूंगा। आपने कुश्ती से पूरी दुनिया में नाम कमाया है, आज आपने इस मंच पर डांस करके नाम कमाया है।

उम्र बढ़ने के साथ महिलाएं और भी आकर्षक हो जाती हैं

जेनिफर लोपेज

लॉस एंजेल्स (आईएएनएस)। मशहूर सुपरस्टार जेनिफर लोपेज का मानना है कि हॉलीवुड में बड़ी उम्र की एक्ट्रेसेस के लिए ऑन-स्क्रीन रोल्स के ऑफर्स बढ़ रहे हैं। वह आने वाले कई सालों तक काम करना चाहती हैं। उन्होंने कहा, इसमें बहुत बदलाव आया है और मुझे लगता है कि यह सही है। जैसे-जैसे आपकी उम्र बढ़ती है और आपका एक्सपीरियंस भी बढ़ता जाता है, आप एक अमीर इंसान बन जाते हैं और आपके पास देने के लिए और भी बहुत कुछ होता है। 30 से ज्यादा उम्र की महिला को देखने में किसी की कोई दिलचस्पी नहीं होती है - यह विचार कितना हास्यास्पद है, यह सही के बिल्कुल विपरीत है। यह बस मुझे हंसाता है। लोगों ने महसूस किया है कि उम्र बढ़ने के साथ महिलाएं और ज्यादा आकर्षक हो जाती हैं। सुंदर और आकर्षक... न केवल शारीरिक रूप से, बल्कि अंदर से भी। सुंदरता के साथ-साथ आप उम्र बढ़ने के साथ जो हासिल करते हैं, वह है ज्ञान। फीमेलफर्स्ट डॉट को डॉट यूके की रिपोर्ट के अनुसार, लोपेज का फिलहाल कोई रिटायरमेंट प्लान नहीं है। वह कई सालों तक अपने काम को जारी रखना चाहती हैं। एक्ट्रेस ने कहा, मैं खुद को काम करते हुए देखना चाहती हूं। मुझे नहीं पता कि किस उम्र तक। यह 70 हो सकती है, 80 भी हो सकती है और 90 भी, मुझे नहीं पता।

फिल्म 'आदुजीविथम' 10 अप्रैल को होगी रिलीज

मुंबई (वार्ता)। दक्षिण भारतीय सिनेमा के जानेमाने अभिनेता पृथ्वीराज सुकुमारन की फिल्म 'आदुजीविथम' 10 अप्रैल 2024 को रिलीज होगी। सोशल मीडिया पर पृथ्वीराज सुकुमारन ने वीडियो शेयर करते हुये लिखा,सबसे बड़ा सर्वाइवल एडवेंचर। एक अविश्वसनीय सच्ची कहानी,असाधारण रहस्योद्घाटन का गवाह बनें।यह फिल्म बेन्यामिन द्वारा लिखे गए इसी नाम के मलयालम उपन्यास का रूपांतरण है। यह फिल्म मलयालम, तमिल, तेलुगु, कन्नड़ और हिंदी में रिलीज होगी।

मुंबइ (वार्ता) बॉलीवुड के जानेमाने पार्श्वगायक उदित नारायण आज 68 वर्ष के हो गए। उदित नारायण झा का जन्म नेपाल में एक दिसम्बर 1955 को एक मध्यम वर्गीय ब्राह्मण परिवार में हुआ था। बचपन के दिनों से ही उनका रुझान संगीत की ओर था और वह पार्श्वगायक बनना चाहते थे। इस दिशा में शुरुआत करते हुए उन्होंने संगीत की प्रारंभिक शिक्षा पंडित दिनकर कैकिनी से हासिल की। उदित नारायण ने गायक के रूप में अपने करियर की शुरुआत नेपाल में आकाशवाणी से की जहां वह लोक संगीत का कार्यक्रम पेश किया करते थे। लगभग आठ वर्ष तक नेपाल के आकाशवाणी मंच से जुड़े रहने के बाद वह 1978 में मुंबई चले गए और भारतीय विद्या मंदिर में स्कॉलरशिप हासिल कर शासीय संगीत की शिक्षा लेने लगे।

वर्ष 1980 में उदित नारायण की मुलाकात मशहूर संगीतकार राजेश रौशन से हुई जिन्होंने उनकी प्रतिभा को पहचान करके अपनी फिल्म 'उन्नीस बीस' में पार्श्वगायक के रूप में उन्हें काम करने का मौका दिया लेकिन दुर्भाग्य से यह फिल्म टिकट खिड़की पर बुरी तरह नकार दी गई। दिलचस्प बात है कि इस फिल्म में उन्हें अपने आदर्श मोहम्मद रफी के साथ पार्श्वगायन का मौका मिला। लगभग दो वर्ष तक मुंबई में रहने के बाद वह पार्श्वगायक बनने के लिये संघर्ष करने लगे। आश्वासन तो सभी देते लेकिन उन्हें काम करने का अवसर कोई नहीं देता था। इस बीच उदित नारायण ने 'गहरा जख्म', 'बड़े दिल वाला', 'तन बदन', 'अपना भी कोई होता' और 'पत्तों की बाजी' जैसी बी और सी ग्रेड वाली फिल्मों में पार्श्वगायन किया लेकिन इन फिल्मों से उन्हें कोई खास फायदा नहीं पहुंचा।

लगभग दस वर्ष तक मायानगरी मुंबई में संघर्ष करने के बाद 1988 में नासिर हुसैन की आमिर खान अभिनीत फिल्म 'कयामत से कयामत तक' में अपने गीत 'पापा कहते है बड़ा नाम करेगा' की सफलता के बाद उदित नारायण गायक के रूप में अपनी पहचान बनाने में सफल हो गए। कयामत से कयामत तक की सफलता के बाद उदित नारायण को कई अच्छी फिल्मों के प्रस्ताव मिलने शुरू हो गए जिनमें राम अवतार,त्रिदेव ,महासंग्राम ,दिल ,सौगंध,फूल और कांटे जैसी बड़े बजट की फिल्में शामिल थीं। इन फिल्मों की सफलता के बाद उदित नारायण ने सफलता की नई बुलंदियों को छुआ और एक से बढ़कर एक गीत गाकर श्रोताओं को मांमुग्ध कर दिया।उदित नारायण अब तक पांच बार फिल्म फेयर पुरस्कार से सम्मानित किये जा चुके है। हिन्दी सिनेमा जगत में उदित नारायण के महत्वपूर्ण योगदान को देखते हुए उन्हें वर्ष 2009 में पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

1988 में नासिर हुसैन की आमिर खान अभिनीत फिल्म 'कयामत से कयामत तक' में अपने गीत 'पापा कहते हैं बड़ा नाम करेगा' की सफलता के बाद उदित नारायण गायक के रूप में अपनी पहचान बनाने में सफल हो गए।

सेलेना गोमेज

दादी की रसोई से बचा हुआ खाना खाती हैं

लॉस एंजेल्स (आईएएनएस)। पॉपुलर अमेरिकन सिंगर और एक्ट्रेस सेलेना गोमेज का अपने दादा-दादी के साथ हमेशा करीबी रिश्ता रहा है। उन्होंने खुलासा किया है कि वह अक्सर अपनी दादी की रसोई से बचा हुआ खाना खाती हैं। 'सेलेना प्लस शेफ' होस्ट ने एक इंस्टाग्राम वीडियो में कहा, अगर यह एक रेंडम ट्यूजडे की रात है, तो मैं निश्चित रूप से कुछ खा रही हूं, जो शायद मेरी दादी ने एक रात पहले बनाया था। एसशोबिज डॉट कॉम की रिपोर्ट के अनुसार, गोमेज को अपने दादा-दादी के साथ खाना बनाना काफी पसंद है। उन्होंने कहा, मैं अपने दादा-दादी के साथ रहती हूं। हम ज्यादातर रसोई में रहते हैं और खाना बनाते रहते हैं।

किंग के गाने 'मान मेरी जान' ने इतिहास रचा

मुंबई (वार्ता) ग्लोबल म्यूजिक आइकन किंग के गाने 'मान मेरी जान' ने इतिहास रच दिया है और उनका यह गाना स्पॉटिफ़ाइ पर सबसे ज्यादा स्ट्रीम किया जाने वाला गाना बन गया है।किंग इन दिनों अपने'टुबॉर्ग जीरो पैकेज्ड ड्रिंकिंग वॉटर प्रेजेंट्स किंग न्यू लाइफ इंडिया टूर 2023' में व्यस्त हैं, जिसे बेंगलुरु, जयपुर और कोलकाता में शानदार प्रतिक्रिया मिली है। वहीं किंग का एक गाना ऐसा भी है जिसने अब इतिहास रच दिया है। एल्बम'शैंपेन टॉक'से किंग का लव सांग 'मान मेरी जान' साल का सबसे ज्यादा स्ट्रीम किया जाने वाला गाना बनकर उभरा है। 275 मिलियन से अधिक बार बजने के साथ, यह स्पॉटिफ़ाइ पर भारत में सबसे अधिक स्ट्रीम वाला गाना बन गया है।

कैटरीना कैफ

को पसंद आई पति विक्की की फिल्म सैम बहादुर

मुंबई (वार्ता) बॉलीवुड अभिनेत्री कैटरीना कैफ को अपने पति विक्की कौशल की फिल्म सैम बहादुर बेहद पसंद आई है। देश के पहले फील्ड मार्शल सैम मानेकशॉ पर फिल्म सैम बहादुर बनाई गई है। इस फिल्म में सैम मानेकशॉ का किरदार विक्की कौशल ने निभाया है। सैम बहादुर फिल्म का निर्देशन मेघना गुलजार ने किया है। इस फिल्म को रॉनी स्क्रूवाला ने प्रोड्यूस किया है। यह फिल्म आज रिलीज हो गयी है।

नगर निगम के भ्रष्टाचार से कराह रहे वाराणसी के गंगा घाट, गंदगी से दिनों दिन स्थिति हो रही बदतर!

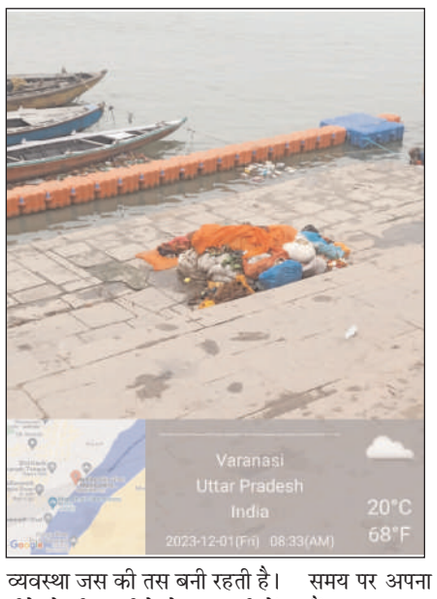

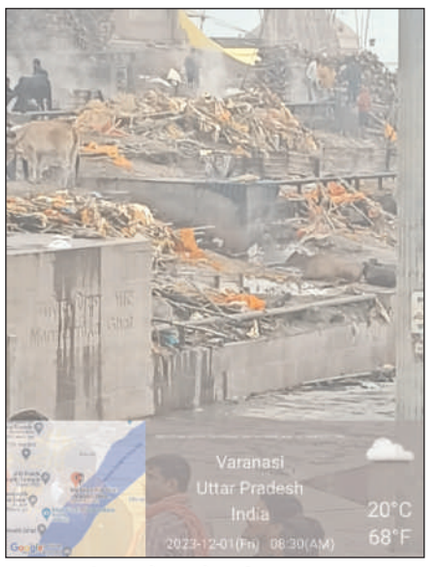

प्रखर वाराणसी। यह तस्वीर बताती है कि वाराणसी में नमामि गंगे का जिस तरह गुणगान प्रधानमंत्री हमेशा गाते हुए नहीं थकते। वाराणसी नगर निगम के अधिकारी जिनकी देख रेख में यह घाट आता है। उनको भी प्रधानमंत्री के इस इमोशन की कोई चिंता नहीं है। कहा जा सकता है प्रधानमंत्री का इमोशन एक तरफ और उनकी मनमानी एक तरफ! घाट की स्थिति देखकर साफ तौर पर लगता है कि नगर निगम के नगर स्वास्थ्य अधिकारी सहित तमाम आला अधिकारी सिर्फ खानापूर्ति के लिए साफ सफाई का बजट आवंटन कर बड़ा भ्रष्टाचार करते हैं। अब बड़ा सवाल यह है कि लगातार इस तरह की गंदगी की तस्वीरें सोशल मीडिया सहित मीडिया में वायरल होती रहती है। लेकिन आज तक कोई भी ठोस कदम नहीं उठाया गया। बतादे कि नगर निगम वाराणसी साफ सफाई के लिए प्रतिवर्ष करोड़ों खर्च करता है। लेकिन साफ-सफाई की व्यवस्था जस की तस बनी रहती है। बीते दो-तीन महीनो से वाराणसी में बुखार का प्रकोप लगातार जारी है। लोगों का कहना है कि नगर निगम कि इस गंदगी की वजह से लगातार बुखार सहित अन्य बीमारियां समय-समय पर अपना पांव पसारती रहती हैं। अब सवाल यह है कि करोड़ों खर्च होने के बाद भी वाराणसी का जनमानस अगर इसी तरह बीमार होता रहा तो सरकार द्वारा दिया जा रहा नगर निगम वाराणसी को करोड़ों का बजट आखिर किस काम का! घाट के आसपास रहने वालो ने पूछने पर बताया कि सिर्फ खानापूर्ति के लिए यहां पर नगर निगम के कर्मी आते हैं और चले जाते हैं। पूर्व में जिस कंपनी को नगर निगम ने घाटों की साफ सफाई की जिम्मेदारी दी थी, उसे इसलिए निकाल दिया गया कि वह सही तरीके से घाटों की साफ सफाई नहीं करती है। अब बड़ा सवाल यह है कि अगर उक्त कंपनी घाटों की साफ सफाई ठीक से नहीं करती थी, तो आखिरकार नगर निगम ने जब अपने हाथ में बागडोर संभाली तो स्थिति उससे भी बदतर क्यों हो गई? इस सवाल का जवाब देने से नगर निगम लगातार कतराता रहता है। लेकिन अब घाटों की मनोदशा यह बतलाती है कि इसमें राज्य सरकार और केंद्र सरकार के अधिकारियों का बोलबाला ज्यादा है। पता नहीं कब मां गंगा और उनसे लगे घाटों की सफाई होगी। जबकि वाराणसी में सारे त्यौहार भी बीत चुके हैं। जीपीएस ट्रैकर द्वारा ली गई फोटोग्राफ स्थिति को साफ तौर पर बयां कर रहा है।

उत्तराखंड की सुरंग से सकुशल घर पहुँचने पर अखिलेश कुमार का केन्द्रीय मंत्री अनुप्रिया पटेल ने अंग वस्त्र भेंट कर अभिनंदन किया

प्रखर मिर्जापुर। केन्द्रीय मंत्री अनुप्रिया पटेल ने उत्तरकाशी के सुरंग में फंसे मिर्जापुर निवासी अखिलेश से बाबतपुर स्थित हरउआ मार्केट में मुलाकात कर उन्हें अंग वस्त्र भेंट कर उनका अभिवादन किया। बता दें कि पिछले महीने 18 नवंबर को भी केन्द्रीय मंत्री अनुप्रिया पटेल ने अखिलेश कुमार के निवास पर पहुँच कर उनके पिता रमेश कुमार सिंह और माता अंजू देवी से मुलाकात कर उन्हें ढांढास बंधाया था और कहा था कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सुरंग में फंसे सभी 41 श्रमिकों को सकुशल निकालने के लिए निरंतर नजर रखे हुए हैं। उधर, अपना दल एस के जिलाध्यक्ष इंज. राम लौटन बिंद के नेतृत्व में पार्टी के पदाधिकारियों ने शुक्रवार की रात्रि अखिलेश कुमार के घर जाकर उनका स्वागत एवं अभिनंदन किया। इस अवसर पर राष्ट्रीय सचिव मेघनाथ पटेल, प्रदेश उपाध्यक्ष डॉ अनिल सिंह, प्रदेश सचिव सहकारिता मंच पप्पू पटेल, प्रदेश सचिव पंचायत मंच विजय प्रधान, प्रदेश सचिव सहकारिता मंच अरुणेश पटेल, विधानसभा अध्यक्ष युवा मंच गौरव पटेल, जोन अध्यक्ष इंद्रजीत पटेल, जोन अध्यक्ष कमलेश सिंह, अन्य क्षेत्रीय सेक्टर व बूथ अध्यक्ष आदि लोगों द्वारा उनका अभिवादन किया गया। उक्त आशय की जानकारी जिला मीडिया प्रभारी शंकर सिंह चौहान ने दी।

स्वच्छता पखवाड़ा के तहत 95 बटालियन केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल ने सृजन सम्मानित विकास न्यास के संग 84 घाटों को स्वच्छ करने का संकल्प

प्रखर पूर्वान्चल वाराणसी। सृजन सामाजिक विकास न्यास, 95 बटालियन सीआरपीएफ एवं नगर निगम ने 2 दिसम्बर शनिवार कों संयुक्त रुप से चलाया गंगा स्वच्छता अभियान ` गंगा हरितिमा अभियान के ब्रांड अंबेसेडर अनिल कुमार सिंह के मिशन ग्रीन गंगा,क्लीन गंगा सीआरपीएफ के स्वच्छता पखवाड़े के तहत संत रविदास घाट से नगवां कच्चे घाट से लेकर असि नया घाट असि घाट से तुलसी घाट तक स्वच्छता अभियान चलाकर,पन्डे पुजारियों, नाविकों तथा यात्रियों को स्वच्छता का प्लास्टिक मुक्ति का सन्देश देते हुए तुलसी घाट से लेकर असि घाट तक स्वच्छता जागरुकता रैली भी निकाली गयी जिसमें गंगा सेवा समति के संरक्षक बलराम मिश्रा ने भरपूर सहयोग किया सृजन सामाजिक विकास न्यास के अध्यक्ष ने कहा हम प्रति वर्ष गंगा जी के चौरासी घाटों को सी आरपीएफ नगर निगम एवं कार्य दायी संस्थाओ के साथ स्वच्छ कराते आ रहें हैं इस वर्ष भी चौरासी घाटो को 95 बटालियन सीआरपीएफ के साथ मिलकर स्वच्छ करायेंगे कार्य शुरू होने से पहले संस्था के अध्यक्ष अनिल कुमार सिंह ने सभी को स्वच्छता,जलसंरक्षण एवं प्लास्टिक मुक्ति की शपथ दिलाई जिसके मुख्य अतिथि 95 बाटालियन सीआरपीएफ के कमांडेंट अनिल कुमार बृक्ष ने सभी को स्वच्छता हेतु दिशा निर्देश दिए` इसमें मुख्य रूप से निरीक्षक शिवदत्त राम,प्रवीन सिहं, उप निरीक्षक सुभाष राम हरेश्वर कलिता, साफेद अली एवं 95 की पुरी टीम, सृजन सामाजिक विकास न्यास के सद्स्य बिजय केजरीवाल प्रशांत केजरीवाल आदि नगर निगम के इन्स्पेक्टर दिवाकर दूबे सरिता यादव एवं उनकी पूरी टीम ने भी सहयोग किया।

यातायात विषयक प्रदर्शनी व सम्मान समारोह का हुआ आयोजन

प्रखर पूर्वान्चल वाराणसी। अस्सी लंका रोड स्थित राणा जी मूवमेंट सभागार में जिला अपराध निरोधक समिति व राणा जी मोमेंट द्वारा यातायात विषयक प्रदर्शनी व सम्मान समारोह का आयोजन किया गया` कार्यक्रम के मुख्य अतिथि आर.एस गौतम पुलिस उपायुक्त जोन काशी व विशिष्ट अतिथि प्रवीण कुमार सिंह सहायक पुलिस आयुक्त भेलूपुर रहे कार्यक्रम की अध्यक्षता महानगर सचिव गंगा सहाय पांडे ने की अतिथियों का स्वागत` जिला अपराध निरोधक समिति के जिला सचिव व जेल पर्यवेक्षक राजेश कुमार सिंह व वरिष्ठ समाजसेवी डॉक्टर दशरथ पवार ने अंगवस्त्रम स्मृति चिन्ह व पुष्प गुच्छ देकर सम्मानित किया` कार्यक्रम की अगली कड़ी में दिव्यांग कलाकार राजकुमार के संयोजन में कोमल खुशी गुप्ता व सौम्या ने गणेश वंदना का शुरूआत की उसके बाद गीतकार कवि सिद्ध नाथ शर्मा सिंह ने अपनी रचनाओं से लोगों को आनंदित किया` इस अवसर पर मुख्य अतिथि आर.एस गौतम काशी जोन ने अपने संबोधन में कहा कि संस्था द्वारा यह कार्यक्रम लोगों को जागरूक हुआ` आत्मविश्वास बढ़ाने वाला है इसके बाद संस्था के लोगों का सम्मान किया गया जिसमें मुख्य रूप से करण सिंह जिला संगठन सचिव राजेश्वर सिंह राणा ,आशा सिंह, स्नेहलता सिंह, काली शंकर उपाध्याय ,राणा शेर सिंह ,विनोद राव, कौशल किशोर मिश्रा, वशिष्ठ नारायण सिंह ,जितेंद्र चौधरी, विजय गुप्ता, प्रेम नारायण सिंह, महेश माहेश्वरी, सुरैया बानो, जितेंद्र चौधरी, विजय गुप्ता, प्रेम नारायण सिंह ,महेश माहेश्वरी ,सुरैया बानो , एस.एन तिवारी, सचिन अन्य लोग उपस्थित रहे` कार्यक्रम का संचालन राणा शेर सिंह ने किया तथा अंत में धन्यवाद ज्ञापन राधेश्याम सिंह ने किया राणा शेरू सिंह ने किया तथा अंत में धन्यवाद ज्ञापन राधेश्याम सिंह ने किया` इस अवसर पर मुख्य रूप से विनोद सिंह, किशन शर्मा, ममता , रेखा शर्मा सहित अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे` कार्यक्रम भेलूपुर के प्रभारी निरीक्षक राजेश सिंह व लंका के प्रभारी निरीक्षक शिवाकांत मिश्रा भी उपस्थित रहे।

तहसील दिवस पर कुल आये 113 मामले

प्रखर पिंडरा वाराणसी। पिंडरा तहसील के सभागार में शनिवार को आयोजित सम्पूर्ण समाधान दिवस पर डीएम के न आने से फरियादियो में मायूसी दिखी। एसडीएम पिंडरा की अध्यक्षता आयोजित समाधान दिवस पर कुल 113 मामले आये। जिसमे से मात्र 9 मामलों का निस्तारण हो पाया। एसडीएम प्रतिभा मिश्रा के समक्ष थानारामपुर के ग्रामीण गांव में स्थापित पेजल नलकूप की दुर्व्यवस्था पर शिकायती पत्र दिया और कार्रवाई की मांग की। जिसपर एसडीएम ने जेई को तलब कर व्यवस्था सुधारने व ऑपरेटर के खिलाफ कार्रवाई का निर्देश दिया। इस दौरान योगेश दुबे, विजय पांडेय, विकास सिंह, राजू सिंह व विनोद समेत अनेक ग्रामीण रहे। वही बहुतरा निवासी रवि शंकर सिंह ने एक वर्ष पूर्व जमीन बैनामा कराने के बाद भी दबंगो द्वारा बकाए धन मांगने पर मारने पीटने का आरोप लगाते हुए शिकायत की। वही पिंडराई ग्राम सभा के बंशनरायन पाठक, संग्राम सिंह, अमरनाथ पाठक व अवधेश ने शिकायती पत्र देते हुए आरोप लगाया कि हर घर नल योजना के तहत पाइप लाइन बिछाई जा रही हैं जो 5 किमी दूर असवालपुर में बन रहे टँकी से आपूर्ति होनी है। जबकि पिंडराई ग्राम सभा मे ग्राम सभा की जमीन उपलब्ध है। जिसका ग्राम प्रधान द्वारा प्रस्ताव भी दिया गया। इसके अलावा सरकारी व ग्राम सभा के जमीन पर अवैध कब्जा समेत अनेक मामले आये। पुलिस से सम्बंधित मामलों को डीसीपी प्रबल प्रताप सिंह ने सुनी और थानेदारों को निष्पक्ष होकर न्याय करने का निर्देश दिया। इस दौरान तहसीलदार विकास पांडेय, बीडीओ दीपकंर आर्य, छोटेलाल तिवारी के अलावा विद्युत, शिक्षा, जलनिगम समेत अनेक विभाग के अधिकारी उपस्थित रहे।

डीएम व एसपी ने निर्वाचक नामावली संक्षिप्त पुनरीक्षण अंतर्गत बूथों का किया निरीक्षण

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। भारत निर्वाचन आयोग द्वारा आगामी लोकसभा सामान्य निर्वाचन 2024 एवं अर्हता तिथि 1 जनवरी 2024 के आधार पर विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र की निर्वाचक नामावली का विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण 2024 के अंतर्गत सुव्यवस्थित मतदाता शिक्षा एवं निर्वाचन सहभागिता के अंतर्गत भारत निर्वाचन आयोग के निदेर्शों के क्रम में अहर्ता दिनांक 1 जनवरी 2024 के आधार पर विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र की निर्वाचन नामावलियों का विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण 2024, कार्यक्रम 27 अक्टूबर 2023 से 9 दिसंबर 2023 तक जनपद में चलाया जा रहा। इसी क्रम जिलाधिकारी आर्यका अखौरी एवं पुलिस अधीक्षक ओमवीर सिंह द्वारा सामान्य निर्वाचन क्षेत्रों की निर्वाचक नामावली के विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण कार्यक्रम का विधानसभा क्षेत्र जखनियॉ अंतर्गत तहसील जखनियॉ मे उच्च प्राथमिक विद्यालय मदरा जखनियॉ, प्राथमिक विद्यालय मदरा, उच्च प्राथमिक विद्यालय पहुमपुर जखनियॉ में बनाये गये बूथ का स्थलीय निरीक्षण कर जायजा लिया एवं आवश्यक दिशा निर्देश दिये। प्रा0 वि0 पहुमपुर में विद्यालय में बच्चो को शिक्षा की गुणवत्ता को देखा और स्वय बच्चो को पढ़वाकर परखा।निरीक्षण के

दौरान उन्होने बी0एल0ओ0 पर नाराजगी व्यक्ति करते हुए कड़े निर्देश दिया कि आयोग के निदेर्शानुसर दावे और आपत्तियां प्राप्त करने की अवधि 27 अक्टूबर से 9 दिसंबर 2023 तक है । जिसमे विशेष अभियान 2 दिसंबर, 3 दिसंबर को चलाया जाएगा। जिसमें फार्म 6 में नाम जोड़े जाएंगे ,फार्म 7 में आपत्तियां प्रारूप 8 में नाम संशोधन किया जाएगा और निर्वाचन नामावली का अंतिम प्रकाशन 5 जनवरी 2024 को किया जायेगा । जिन छात्र-छात्राएं या अन्य की उम्र 1 जनवरी 2024 को 18 वर्ष पूर्ण हो रही हो वे भी वोटर लिस्ट में अपना नाम सम्मिलित अवश्य करा सकते है। उन्होंने कहा इस कार्य मे निर्वाचन आयोग के निदेर्शों का पालन अवश्य किया जाये इसमे किसी प्रकार की लापरवाही न बरती जाए। उन्होंने कहा किसी भी मतदेय स्थल पर फार्म 06, 07 ,08 और 08 ए की कमी नहीं होनी चाहिए। सुपरवाइजर मतदेय स्थलों का निरंतर स्थलीय निरीक्षण करे, यदि कहीं भी बूथ पर फार्म की कमी हो तो संबंधित निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारी/ उप जिलाधिकारी एवं जिला कार्यालय से समन्वय कर पूरा कराएं। सुपरवाइजर पहली बार निर्वाचक नामावली का कार्य करने वाले बीएलओ के कार्यों पर विशेष ध्यान रखे। इस दौरान उन्होंने बूथ लेबल ऑफिसर के कार्यप्रणाली को भी देखा तथा पुनरीक्षण अभियान के तहत नए मतदाताओं को शत प्रतिशत वोटर लिस्ट में जोड़ने, साथ ही जो मतदाता स्थान परिवर्तित कर-के नए स्थानों से जुड़े हैं उनके नाम को भी जोड़ा अथवा हटाया जाए। उन्होंने पुनरीक्षण अभियान में संलग्न कर्मचारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि दिन प्रतिदिन की रिपोर्ट अपने संबंधित अधिकारी को प्रेषित करें, बूथ पर आने वाले मतदाताओं का संबंधित फार्म अवश्य भराये तथा लोगों को इस अभियान के संबंध में जागरूक भी करें, जिससे ज्यादा से ज्यादा मतदाता वोटर लिस्ट में शामिल हो सकें।

उपभोक्ता फोरम में भी आयोजित होगी लोक अदालत : सुरेंद्र कुमार सिंह

प्रखर संतकबीरनगर। आगामी राष्ट्रीय लोक अदालत दिनांक 09 दिसम्बर 2023 के तैयारियों के दृष्टिगत उपभोक्ता फोरम के पीठासीन अधिकारी सुरेंद्र कुमार सिंह एवं जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव व अपर जिला जज महेंद्र कुमार सिंह के बीच बैठक आहूत हुई। बैठक में उपभोक्ता फोरम के पीठासीन अधिकारी सुरेंद्र कुमार सिंह द्वारा बताया गया कि पक्षकारों को नोटिस तामिला कराई जा रही है एवं फोरम से संबंधित समस्त मामले आगामी राष्ट्रीय लोक अदालत 09 दिसम्बर 2023 को लगाए जाएंगे। उन्होंने पक्षकारों एवं अधिवक्ताओं से अपील किया है कि राष्ट्रीय लोक अदालत में अधिक से अधिक मामलों का निस्तारण करवाने का प्रयास करें। राष्ट्रीय लोक अदालत में सुलह-समझौते के आधार पर निस्तारित हुए मामले में किसी प्रकार की कोई कोर्ट फीस नही है।

संक्षिप्त खबरें

स्टेट बैंक मैनेजर नें किया मोहम्मद असलम खाँन को सम्मानित

प्रखर जौनपुर। भारतीय स्टेट बैंक केराकत के प्रबन्धक रवि कुमार साहू एवं फिल्ड आफिसर धर्मेन्द्र कुमार नें शुक्रवार को मोहम्मद असलम खाँन (पत्रकार) एवं पूर्व सभासद युवा भाजपा नेता पूर्व मण्डल उपाध्यक्ष केराकत को स्मृतिचिह्न देकर सम्मानित किया। इस अवसर पर प्रबन्धक रवि कुमार साहू नें कहा कि आज मुझे इसबात की बहुत ही ज्यादा खुशी हो रही है कि मैं एक ऐसे पत्रकार को सम्मानित करने का मुझे शुभ अवसर मिला जो पत्रकारिता के साथ साथ जनता की सेवा भी निः स्वार्थ करते रहते है इस अवसर पर प्रबन्धक फिल्ड आफिसर सहित बैंक के सभी कर्मचारी उपस्थित रहे। सभी लोगों का धन्यवाद करते हुवे मोहम्मद असलम खाँन पत्रकार नें बैंक के प्रबन्धक श्री रवि कुमार साहू एवं फिल्ड आफिसर श्री धर्मेन्द्र कुमार जी का तहे दिल से शुक्रिया अदा किया है।

व्यापार मण्डल ने शोक सभा कर दी श्रद्धांजलि

प्रखर खेतासराय जौनपुर। नगर निवासी फास्टफूड की दुकान चला रहे अजय और अंकित की बदमाशों द्वारा नृशंस हत्या किए जाने पर शुक्रवार को उधोग व्यापार प्रतिनिधिमण्डल के नगर संजय विश्वकर्मा की अध्यक्षता में शोक सभा कर श्रद्धांजलि दिया । इस दौरान उन्होंने कहा कि इस घटना ने सभी को हिलाकर रख दिया । इस घटना की जितनी निंदा की जाए कम । दो मिनट का मौन धारण कर सभी ने गहरी संवेदना जताई । इस अवसर पर कपूर चंद्र जयसवाल, जगदंबा प्रसाद पांडे, मनोउवर अली, मोहम्मद राशिद, अनिल प्रजापति, मनीष गुप्ता, शांति भूषण मिश्रा समेत अन्य लोग मौजूद रहे ।

राज्यमंत्री गिरीश यादव बोले, दोषियों को दिलवाएंगे सजा

प्रखर खेतासराय जौनपुर। कस्बा निवासी फूलचन्द्र प्रजापति की दो बेटे की निर्मम हत्या के चौथे दिन स्थानीय विधायक व सूबे के स्वतंत्र प्रभार राज्य मंत्री गिरीश चंद्र यादव शुक्रवार की देर शाम उनके आवास पहुँचे । उन्होंने स्वजनों आश्वस्त किया कि परिवार के साथ सरकार खड़ी है । उन्हें हर संभव मदद किया जाएगा। देर शाम पहुँचे राज्यमंत्री ने स्वजनों से मिलकर वार्ता की । लोगों ने उनके परिवार की दर्द बयां किया । इस दौरान श्री यादव ने कहा कि आरोपित बख्शें नही जाएंगे । शासन से वार्ता कर इस मामले में दोषियों को सजा दिलवाएंगे । पार्टी और सरकार का दरवाजा हमेशा खुला रहेगा। सुरक्षा के लिहाज से सीओ शाहगंज शुभम तोंदी और एसओ चन्दन रॉय पुलिस फोर्स के साथ जमा रहे । करीब पन्द्रह मिनट राज्यमंत्री यहां रहे । इस मौके पर मंत्री प्रतिनिधि अजय सिंह, गजेंद्र पांडेय, धर्मेंद्र मिश्रा, जगदम्बा पांडेय, उपेंद्र मिश्रा, मनीष गुप्ता, रूपेश गुप्ता उर्फ मोनू, बलिहारी राजभर, शांतिभूषण मिश्रा, शुभम जायसवाल समेत अन्य लोग शामिल रहे ।

जिलाधिकारी ने विन्ध्य कारीडोर कार्य प्रगति का किया स्थलीय निरीक्षण

प्रखर मिजार्पुर। जिलाधिकारी प्रियंका निरंजन आज दोपहर विन्ध्याचल पहुंचकर विन्ध्य कारीडोर कार्य प्रगति का स्थलीय निरीक्षण किया। इस दौरान धीमी प्रगति पर जिलाधिकारी द्वारा कड़ी नाराजगी व्यक्त करते हुये परियोजना प्रबन्धक राजकीय निर्माण निगम वीरेन्द्र कुमार को निर्देशित करते हुये कहा कि मजदूरो की संख्या बढ़ाते हुये कार्य में तेजी लाये। नये वी0आई0पी0 मार्ग के फुटपाथ पर पत्थर बिछाने का कार्य बीच-बीच में अधूरा रहने पर जिलाधिकारी एक सप्ताह में पूर्ण करने का निर्देश दिया। मार्गो पर बीच-बीच में कूड़ा का ढेर पाये जाने तथा सड़क के किनारे नालियो पर दुकानदारो के द्वारा इंट रखे जाने पर कड़ी नाराजगी व्यक्त करते हुये निर्देशित कि नालियो पर सभी ईट हटाया जाय तथा बेहतर साफ सफाई व्यवस्था सुनिश्चित की जाय। इस अवसर नगर मजिस्ट्रेट विनय कुमार सिंह उपस्थित रहें।

प्रखर पूर्वांचल

RNIUPHIN/2016/68754

मुद्रक प्रकाशक 'पंकज सिंह' के लिए सम्पादक 'अरूण सिंह' द्वारा 'गायत्री प्रिंटिंग प्रेस' सकलेनाबाद नियर दुर्गा चौक, गाजीपुर पिन कोडः 233001 से छपवाकर कनेरी गाजीपुर से प्रकाशित

सम्पादकीय कार्यालयः 9/10, टैगोर मार्केट, कचहरी, गाजीपुर पिन कोडः 233001

सम्पर्क सूत्रः 0548-2223833, +91-8858563779 +91-9450208067, +91-9452844802

सभी विवाद गाजीपुर न्यायालय के अधीन होगें।

ताजा खबर पढ़ने के लिए लॉगइन करें हमारी वेबसाइट
https://prakharpurvanchal.com
Email ID: prakharpurvanchal@gmail.com

सांध्य दैनिक प्रखर पूर्वांचल अखबार के सभी पद अवैतनिक हैं